Maktab-e-Ashraf

क़ससुल अंबिया व अस्हाबे सालिहीन

मौलाना मुहम्मद हिफ्ज़ुर्रहमान स्योहारवी (रह०)

Copyright OfflineDeeniApp

विषय-सूची

तम्हीद	3
अर्ज़ है कि...	5
शुरू करते वक़्त	6
अपनी बात	8
कायनात की पैदाइश और पहला इंसान	11
पहला इंसान	11
इल्मी बहसों से मुताल्लिक़ इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र (दृष्टिकोण)	15
हज़रत आदम ﷺ	16
आदम ﷺ की पैदाइश, फ़रिश्तों को सज्दे का हुकम, शैतान का इंकार	16
सज्दे से इन्कार करने वाले पर इब्लीस का मुनाज़रा	16
इब्लीस ने मोहलत तलब की	18
आदम ﷺ और दूसरे फ़रिश्ते	18
आदम ﷺ की तालीम (इल्म का सिखाना) और फ़रिश्तों का इज्ज़ का इक़रार	19
हज़रत आदम का जन्नत में ठहरना और हव्वा का ज़ौजा बनना	21
आदम ﷺ का जन्नत से निकलना	21
आदम ﷺ के ज़िक्र से मुताल्लिक़ कुरआनी आयतें	22
आदम के क़िस्से में कुछ अहम इबरतें (नसीहतें)	23
हज़रत आदम ﷺ के क़िस्से से मुताल्लिक़ मस्अले	24
हज़रत हव्वा की पैदाइश किस तरह हुई?	25
नबियों की इस्मत का मतलब	26
हज़रत आदम ﷺ की इस्मत	27
फ़रिश्ता	28
जिन्न	28
इब्लीस या शैतान	29
लेखक का इज़ाफ़ा	29
फ़रिश्ते आदम ﷺ को जन्नत से रुख़्सत करते हैं	30
रूहे अरज़ी आदम ﷺ का इस्तक़्बाल करती है	30
क़ाबील व हाबील	31
इबरत की जगह	32
हज़रत नूह ﷺ	34

Maktab-e-Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत नूह ﷺ पहले रसूल हैं	34
नूह ﷺ की क़ौम, दावत व तब्लीग़ और क़ौम की नाफ़रमानी	19
नाव की बुनियाद	37
जूदी पहाड़ (अज़ाब का ख़त्म होना)	38
अहम नतीजे	39
क़ौल	40
नूह ﷺ के तूफ़ान से मुताल्लिक़ कुछ अहम बातें	40
नूह ﷺ का बेटा	40
नूह ﷺ का तूफ़ान आम था या ख़ास	41
हज़रत नूह ﷺ की उम्र	42
हज़रत इदरीस ﷺ	43
नाम-नसब और ज़माना	43
हज़रत-इदरीस की ख़ास बातें	44
हज़रत इदरीस ﷺ की तालीम का ख़ुलासा	45
बाद में आने वाले नबियों के बारे में बशारत	45
हज़रत इदरीस ﷺ की ज़मीनी ख़िलाफ़त	46
हज़रत इदरीस से मुताल्लिक़ ख़ास बातें	46
हज़रत इदरीस ﷺ की नसीहतें	46
हज़रत हूद ﷺ	48
आद का ज़माना	48
आद के रहने की जगह	48
आद का मज़हब	48
हज़रत हूद ﷺ	48
इस्लाम की तब्लीग़	49
हूद की क़ौम पर अज़ाब	53
हज़रत हूद ﷺ की वफ़ात	54
कुछ इबरतें	55
हज़रत सालेह ﷺ	56
समूद क़ौम	56
समूद की बस्तियां	56
समूद का ज़माना	56
समूदियों का मज़हब	56

Copyright OfflineDeeniApp

Maktab-e-Ash...f

III

	57
क़ुरआन मजीद में आए क़िस्सों का मतलब	57
अल्लाह की ऊंटनी	59
समूद पर अ़ज़ाब	60
कुछ इबरतें	61
हज़रत इब्राहीम ﷺ	61
हज़रत इब्राहीम ﷺ का ज़िक्र क़ुरआन पाक में	61
हज़रत इब्राहीम ﷺ के वालिद का नाम	61
हज़रत इब्राहीम ﷺ और दूसरे अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम	62
हज़रत इब्राहीम ﷺ की अ़ज़्मत	63
बाप को इस्लाम की दावत और बाप-बेटे का मुनाज़रा	64
क़ौम को इस्लाम की दावत और उससे मुनाज़रा	65
सितारा परस्ती	73
बादशाह को इस्लाम की दावत और उसका मुनाज़रा	77
आग का ठंडा हो जाना	81
और किलदानीयीन की ओर हिजरत	82
फ़लस्तीन की ओर हिजरत	82
हज़रत इब्राहीम ﷺ से मुताल्लिक़ दूसरे मसले	86
हज़रत हाजरा रज़ि० की हैसियत	87
सूरः मुम्तहिनः में हज़रत इब्राहीम की दुआ़	88
सूरः शुअ़रा में हज़रत इब्राहीम की दुआ़	89
हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़िंदगी का एक अहम वाक़िया	90
हज़रत इब्राहीम ﷺ की औलाद और उम्र	91
हज़रत इस्माईल ﷺ	91
पैदाइश	91
बंजर घाटी और हाजरा व इस्माईल	91
नेक बीवी का किरदार	94
ख़त्ना	95
काबा की बुनियाद	97
हज़रत इस्माईल की औलाद	99
क़ुरआन में हज़रत इस्माईल ﷺ का तज़्किरा	99
हज़रत इस्माईल ﷺ की वफ़ात	99
हज़रत इस्हाक़ ﷺ	100

Copyright OfflineDeeniApp

पैदाइश	100
ख़त्ना	100
इसहाक़ की शादी	100
इस्हाक़ का ज़िक्र क़ुरआन में	101
हज़रत लूत ﷺ	101
लूत व इब्राहीम	101
मिस्र से वापसी	101
क़ौमे लूत	101
हज़रत लूत और तब्लीग़े हक़	102
हज़रत इब्राहीम ﷺ और अल्लाह के फ़रिश्ते	103
हज़रत इब्राहीम मुजद्दिदे अंबिया (नबियों के मुजद्दिद)	105
इन वाक़ियात से मुताल्लिक़ कुछ नसीहतें	109
हज़रत याक़ूब ﷺ	113
नाम और ख़ानदान	113
हज़रत याक़ूब का ज़िक्र क़ुरआन में	113
हज़रत यूसुफ़ ﷺ	114
ख़ानदान	114
हज़रत यूसुफ़ ﷺ का ख़्वाब और यूसुफ़ के भाई	114
कनआ़न का कुंवां	115
यूसुफ़ और ग़ुलामी	116
अज़ीज़े मिस्र की बीवी और यूसुफ़	117
यूसुफ़ ﷺ जेल में	117
क़ैदख़ाने में दावत व तब्लीग़	119
फ़िरऔ़न का ख़्वाब	120
अकाल और याक़ूब ﷺ का ख़ानदान	122
याक़ूब का ख़ानदान मिस्र में	128
वफ़ात	130
अहम अख़्लाक़ी बातें	130
हज़रत शुऐब ﷺ	132
शुऐब की क़ौम	132
मदयन या अस्हाबे ऐकः	132
हक़ की दावत	133

Maktab-e-Ash...f

Copyright OfflineDeeniApp

अ़ज़ाब की क़िस्में	137
हज़रत शुऐब अ़ल० की क़ब्र	138
सबक़ भरी नसीहतें	138
हज़रत शुऐब अ़लै० का ज़िक्र क़ुरआन पाक में	140
हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम	140
हज़रत मूसा अ़लै० की शुरूआती ज़िंदगी	
बनी इसराईल मिस्र में	140
फ़िरअ़ौन	140
फ़िरअ़ौन का ख़्वाब	141
हज़रत मूसा अ़लै० की पैदाइश	141
फ़िरअ़ौन के घर में तर्बियत	142
मूसा का मिस्र से निकलना	142
हज़रत मूसा अ़लै० की मदयन के लिए हिजरत	145
मूसा और मदयन का इलाक़ा	145
मदयन का पानी	145
शेख़ की बेटी से निकाह का रिश्ता	146
मुक़द्दस वादी	147
रसूल बनाए गए	138
अल्लाह की निशानियां	149
हज़रत मूसा अ़लै० की एक नबी की हैसियत से मिस्र को वापसी	
और हज़रत हारून अ़लै० को रिसालत का मंसब अ़ता किया जाना	151
मिस्र में दाख़िला	151
फ़िरअ़ौन के दरबार में हक़ की दावत	152
हज़रत हारून का किरदार	154
फ़िरअ़ौन का रद्देअ़मल (प्रतिक्रिया)	155
हामान	155
फ़िरअ़ौन के दरबार में मुज़ाहरा	155
जादूगरों की हार और फ़िरअ़ौन का रद्देअ़मल (प्रतिक्रिया)	157
बनी इसराईल की बेचैनी	159
फ़िरअ़ौन की जवाबी कार्रवाई	160
मिस्री मर्दे मोमिन	160
फ़िरअ़ौन का एलान	162

Maktabe-Ash...f

Copyright OfflineDeeniApp

मिस्रियों पर ख़ुदा का क़हर	162
बनी इसराईल का मिस्र से लौटना	164
बनी इसराईल की रवानगी	164
फ़िरऔन का डूबना	164
फ़िरऔन की लाश	165
समुद्र का फटना	166
बड़ा मोजज़ा	167
फ़िरऔन, फ़िरऔन की क़ौम और क़ियामत का अ़ज़ाब	167
हज़रत मूसा ﷺ और बनी इसराईल समुद्र पार करने के बाद	168
बनी इसराईल पर अल्लाह के इनाम और खुली निशानियां	168
चश्मों का जारी होना	168
मन्न व सलवा	168
बादलों का साया	169
बनी इसराईल की नाशुक्री	169
तूर पर एतिकाफ़	169
तजल्ली-ए-ज़ात	170
तौरात का उतरना	170
बनी इसराईल की गौशालापरस्ती	171
बनी इसराईल को माफ़ी	173
सत्तर सरदारों का इंतिख़ाब	174
सरदारों की हठधर्मी, अ़ज़ाबे इलाही और नई ज़िंदगी	175
बनी इसराईल का फिर इंकार और तूर पहाड़ का सरों पर बुलन्द होना	176
अर्ज़े मुक़द्दस का वायदा और बनी इसराईल	178
बनी इसराईल की नाफ़रमानी और उसका नतीजा	179
हज़रत हारून की वफ़ात	181
हज़रत मूसा ﷺ की वफ़ात	181
हज़रत मूसा ﷺ की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे वाक़िए	182
गाय के ज़िब्ह का वाक़िया	182
हज़रत मूसा और क़ारून	183
क़ारून का वाक़िया कब पेश आया?	185
हज़रत मूसा और ख़िज़्र	185
हज़रत ख़िज़्र से मुताल्लिक़ अहम बातें	189

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत मूसा ﷺ और बनी इसराईल का ईज़ा पहुंचाना	191
सनीचर का दिन	191
हज़रत मूसा को नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे मामले	192
फ़िरऔन नई तस्कीक़ की रोशनी में	192
देखो मुझे जो दीदा-ए-इबरत निगाह हो	193
फ़लक़ बह्र (समुद्र के फटने) से मुताल्लिक़ क़ियास आराइयां	194
जादू और मज़हब	195
मोजज़ा और जादू में फ़र्क़	196
मरने के बाद की ज़िंदगी	197
मोजज़ों का ज़्यादा होना	198
बनी इसराईल पर इनामों की ज़्यादती	200
हज़रत मूसा ﷺ का रुत्बा, एक पैग़म्बर की हैसियत से	200
नसीहतें क्या मिलीं?	201
मुसीबतों में सब्र किया जाए	201
कामियाबी के लिए शर्त	201
इश्क़े इलाही की ताक़त	202
अल्लाह की मदद	202
ईमानी लज़्ज़त के असरात	202
सब्र का फल	202
ग़ुलामी के असरात	202
ज़मीन की विरासत के लिए शर्तें	203
बातिल की नाकामी	203
ज़ालिम क़ौमों का अंजाम	203
ताक़त का ख़ुमार और उसका अंजाम	203
सरकशी का अंजाम	203
दीन में इस्तिक़ामत (जमाव)	204
अल्लाह की बरदाश्त	204
इंसानी इल्म की अहमियत	204
ग़ुलामी एक लानत है	205
अहम नुक्ते	205
अल्लाह की वह्य की हैसियत	205
मुसलसल ग़ुलामी के असरात	205

Copyright OfflineDeeniApp

ईमान की वरकतें	206
तर्जीव देने वाले की तरफ़ से इज़ाफ़ा : एक वद्दू मुसलमान का ईमान	207
सहाबा किराम की बेमिसाल अ़ज़्मत (बड़ाई)	208
हज़रत यूशेअ् बिन नून ﷺ	209
हज़रत यूशेअ् का ज़िक्र क़ुरआन में	209
अर्ज़े मुक़द्दस (पाक सरज़मीन) में दाख़िला	209
नाशुक्री	210
अल्लाह का अ़ज़ाब	211
सबक़ और नसीहत	211
हज़रत हिज़क़ील ﷺ	212
क़ुरआन और हज़रत हिज़क़ील ﷺ	212
अहम बातें	213
मरने के वाद की ज़िंदगी	213
जिहाद से पहलू बचाना	213
नतीजे	214
हज़रत इलयास ﷺ	216
क़ुरआन और हज़रत इलयास	216
नसीहत	217
हज़रत अल-यसअ् ﷺ	218
नबी बनाया जाना	218
क़ुरआन और हज़रत अल-यसअ्	218
नसीहत	218
हज़रत शमूईल ﷺ	219
क़ुरआन पाक और हज़रत शमूईल	219
हज़रत तालूत ﷺ (Saul)	219
जालूत (Goliath)	219
हज़रत दाऊद (David)	220
हज़रत शमूईल का नबी बनाया जाना	220
हज़रत तालूत का मुक़र्रर किया जाना	220
ताबूते सकीना	222
तालूत और जालूत की लड़ाई और बनी इसराईल का इम्तिहान	222
हज़रत दाऊद की बहादुरी	223

Maktabe Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

सबक़ और नतीजे	224
हज़रत दाऊद ﷺ	225
हज़रत दाऊद और ख़लीफ़ा का लक़ब	225
ज़बूर	226
हज़रत दाऊद ﷺ की ख़ुसूसियतें	226
पहाड़ों और चिड़ियों पर क़ब्ज़ा और उनकी तस्बीह	227
हज़रत दाऊद ﷺ के हाथ में लोहे का नर्म होना	228
परिंदों से बातचीत करना	229
ज़बूर की तिलावत	229
हज़रत दाऊद ﷺ से मुताल्लिक़ दो अहम वाक़िए	230
खेती का मामला	230
दुंबियों का मामला	231
ऊपर वाली आयत की तफ़्सीर	232
मुबारक उम्र और कफ़न-दफ़न	234
क्या सबक़ मिला?	234
एक अहम नुक्ता	237
इसराईली पैग़म्बरों के हालात से मुताल्लिक़ एक अहम वज़ाहत	238
हज़रत सुलैमान ﷺ	239
ख़ानदान और बचपन	239
दाऊद ﷺ की विरासत	239
सुलैमान ﷺ की ख़ुसूसियतें	239
परिंदों की बोलियां समझना	240
हवा पर क़ाबू	240
जिन्नों और हैवानों को क़ाबू में रखना	241
बैतुलमक़्दिस की तामीर	242
तांबे के ज़ख़ीरे	243
हज़रत सुलैमान और मलिका सबा	243
सबा की तह्क़ीक़	248
हुद हुद	249
सबा की मलिका का तख़्त	249
मलिका सवा का इस्लाम क़ुबूल कर लेना	249
मलिका-ए-सबा का हज़रत सुलैमान के साथ निकाह	249

Maktab-e-Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत सुलैमान ﷺ की वफ़ात	250
हज़रत सुलैमान ﷺ के वाक़ियों से मुताल्लिक़ तफ़्सीरी नुक्ते	251
हज़रत सुलैमान ﷺ की आज़माइश	252
सुलैमान ﷺ की फ़ौज और चींटियों की घाटी	253
मलिका-ए-सबा का तख़्त उठाकर लाने वाले की शख़्सियत	255
हज़रत सुलैमान ﷺ पर बनी इसराईल का बोहतान	256
ख़ुलासा	258
सबक़ और ख़ुलासा	259
हज़रत अय्यूब ﷺ	263
हज़रत अय्यूब और क़ुरआन पाक	263
कुछ तफ़्सीरी हक़ीक़तें	265
हज़रत अय्यूब ﷺ का मरज़	265
'मस्सनियश्शैतानु' से क्या मुराद है?	265
दूसरे वाक़िए	267
सबक़ और नसीहत	269
हज़रत यूनुस ﷺ	271
हज़रत यूनुस ﷺ का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में	272
नसब व ज़माना	273
दावत की जगह	273
वफ़ात	273
कुछ दूसरी बातें	274
यूनुस ﷺ की फ़ज़ीलत	274
नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) के फ़ज़ाइल	275
कुछ सबक़, कुछ नसीहतें	276
हज़रत ज़ुलकिफ़्ल ﷺ	278
क़ुरआन और ज़ुलकिफ़्ल	278
हालात	279
सबक़	279
हज़रत उज़ैर ﷺ	279
क़ुरआन और हज़रत उज़ैर ﷺ	279
हज़रत उज़ैर की मुबारक ज़िंदगी	280
हज़रत उज़ैर ﷺ और अल्लाह का बेटा होने का अ़क़ीदा	280

Copyright OfflineDeeniApp

	280
सूरः बक़रः में ज़िक्र किया गया वाक़िया	282
सबक़	282
हज़रत ज़क़रिया ﷺ	282
क़ुरआन और हज़रत ज़कारिया ﷺ	282
ज़िंदगी के हालात	283
हज़रत ज़कारिया ﷺ के यहां औलाद	285
तफ़्सीरी नुक्ते	286
ज़कारिया ﷺ की वफ़ात	287
हज़रत यह्या ﷺ	287
क़ुरआन और यह्या ﷺ	287
हज़रत ज़कारिया और बेटे की विलादत	288
तफ़्सीरी नुक्ते	290
दावत व तब्लीग़	292
शहादत का वाक़िया	293
मक़्तल (क़त्लगाह)	293
शबे मराज और यह्या ﷺ	293
नतीजा और सबक़	294
बाग़ वाले	295
वाक़िए से मुताल्लिक़ क़ौल	296
सबक़	297
मोमिन व काफ़िर	297
मोमिन और काफ़िर का वाक़िया	299
वाक़िए की तशरीह (व्याख्या)	300
सबक़ और नतीजे	301
क़रिया वाले या अस्हाबे यासीन	301
क़रिया वाले और क़ुरआन	304
वाक़िए से मुताल्लिक़ बातें	304
हासिल	305
हज़रत लुक़मान रज़ि०	305
लुक़मान	305
क़ुरआन और हज़रत लुक़मान	306
नुबूवत या हिक्मत	

Copyright OfflineDeeniApp

कुछ अहम तफ़्सीरी नुक्ते	307
हज़रत लुक़मान की हिक्मत	308
नसीहत और सबक़	310
अस्हाबे सब्त (सनीचर वाले)	311
सब्त और उसकी हुर्मत	312
वाक़िया क्या था?	313
वह जगह	317
हादसे का ज़माना	317
कुछ अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें	317
बिगाड़ने की हक़ीक़त	318
मस्ख़ की गई क़ौमों का अंजाम	318
नतीजे और सबक़	318
अस्हाबुर्रस्स	319
रस्स	319
कुरआन और अस्हाबुर्रस्स	319
सही बात	320
सबक़ और नसीहत	320
बैतुलमक़्दिस और यहूद	321
बैतुल मक़्दिस	321
बनी इसराईल को तंबीह (चेतावनी)	322
यहूद की शरारत का पहला दौर	322
बख़्त नस्र	326
ग़ुलामी से निजात	328
तौरात के बयान और तारीख़	329
हज़रत यह्या ﷺ का क़त्ल	329
अ़मल का बदला	331
तीसरा सुनहरा मौक़ा और यहूदियों का मुंह मोड़ना	333
हमेशा की ज़िल्लत और नुक़्सान	334
नतीजे	335
ज़ुलक़रनैन	336
नम्रीद	338
	338

Copyright OfflineDeeniApp

	338
जुलक़रनैन की शख़्सियत	340
जुलक़रनैन से मुताल्लिक़ सवाल की शक्ल	341
यहूदी, क़ुरैश और सवालों का इंतिख़ाब	342
बनी इसराईल के नबियों की पेशीनगोइयां	343
तारीख़ी गवाहियां	343
पश्चिमी मुहिम	345
पूरबी मुहिम	345
तीसरी (उत्तरी) मुहिम	346
बाबिल की जीत	348
ख़ोरस का मज़हब	349
ईरान और ज़ुरतुश्त मज़हब	350
जुलक़रनैन और क़ुरआन	357
याजूज व माजूज	359
सद्द	361
क़ुरआन और सद्द	362
ज़ुलक़रनैन की सद्द (दीवार)	363
दूसरी सद्दें	363
याजूज व माजूज का ख़ुरूज	368
हज़रत मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी (रह०) की तफ़्सीर	369
बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसें	371
क्या ज़ुलक़रनैन नबी थे?	371
नतीजे	372
'बसाइर' के हिस्से	374
अस्हाबुल कह्फ़ वर्रक़ीम	374
कह्फ़ और रक़ीम	375
क़ुरआन और अस्हाबे कह्फ़ और अस्हाबे रक़ीम	377
वाक़िया	386
अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें	384
सबक़ और नतीजे	388
सबा और सैले इरम	388
तम्हीद (प्रस्तावना)	389
सबा और क़ौमे सबा	

Maktabe Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

सबा और हुकूमत के तबक़े	390
सबा की इमारतें और उनका रहन-सहन	390
सद्दे मआरिब (मआरिब का बांध)	391
अह्ले सबा और अल्लाह की नाफ़रमानी	394
सैले इरम	395
पहली सज़ा	395
दूसरी सज़ा	397
सैले इरम का फैलाव	399
सबा की मज़हबी हालत	400
कुछ तफ़्सीरी नुक्ते	400
नतीजे और सबक़	401
अस्हाबुल उख़्दूद या क़ौमे तुब्बअ	402
उख़्दूद	402
क़ुरआन और अस्हाबे उख़्दूद	402
वाक़िए की तफ़्सील	403
क़ौम तुब्बअ़	406
तुब्बअ़ की हक़ीक़त	406
क़ुरआन और क़ौम तुब्बअ़	407
सबक़ और नसीहत	407
अस्हाबुल फ़ील (570 ई०)	409
हब्शा और नजाशी	409
अबरहा अल अशरम	409
अस्हाबे फ़ील (हाथी वाले)	410
क़ुरआन और अस्हाबे फ़ील	415
वाक़िए की हक़ीक़त	415
सबक़ और नसीहत	417
हज़रत ईसा ﷺ	424
क़ुरआन और हज़रत ईसा ﷺ	424
इमरान व हन्ना	425
हज़रत मरयम का ज़ुह्द व तक़्वा (संयम व ईश-भय)	426
हज़रत मसीह ﷺ के हालात	427
मुबारक हुलिया	430

Maktab e Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

रसूल बनाए गए	430
खुली निशानियां	432
क़ुरआन के क़िस्से	432
तवज्जोह के क़ाबिल बात और मोजज़ों की हक़ीक़त	433
हज़रत ईसा और मोजज़े	436
हज़रत ईसा और उनकी तालीम का खुलासा	443
हवारी ईसा ﷺ	445
ईसा ﷺ के हवारी और क़ुरआन व इंजील का मवाज़ना	446
माइदा का उतरना	448
'रफ़अ् इलस्समाइ' यानी ज़िंदा आसमान पर उठा लिया जाना	451
हज़रत ईसा ﷺ से मुताल्लिक़ कुछ तफ़्सीरी और दूसरे अहम मसले और क़ुरआन के वाज़ेह बयान	463
हज़रत ईसा अ़लैहिसल्लाम की ज़िंदगी	465
ल यूमिनन-न बिही क़ब-ल मौतिही	465
हज़रत ईसा की ज़िंदगी और उनका उतरना और सहीह हदीसें	467
उतरने के वाक़िए सहीह हदीसों की रोशनी में	470
मसीह ﷺ की वफ़ात	472
हज़रत ईसा और आख़िरत का दिन	473
हज़रत ईसा की इस्लाही दावत और बनी इसराईल के फ़िरक़े	475
चारों इंजीलें	477
क़ुरआन और इंजील	478
क़ुरआन और तस्लीस का अ़क़ीदा	481
हज़रत मसीह अल्लाह के क़रीबी और बरगज़ीदा रसूल हैं	482
हज़रत मसीह न ख़ुदा हैं, न ख़ुदा के बेटे	482
कफ़्फ़ारा	484
तवज्जोह करने की बात	486
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम	487
हज़रत मुहम्मद और क़ुरआन मजीद	487
नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बशारतें (ख़ुशख़बरियां)	491
ज़ुहूरे क़ुद्सी	492
मुबारक सुबह	493
विलादत की तारीख़ की तहक़ीक़	497

Copyright OfflineDeeniApp

तारीख़ व सीरत लिखने वाले तमाम बड़े लोगों का तीन बातों पर इत्तिफ़ाक़ है।	497
मुबारक नसब	498
यतीमी	502
बुत-परस्ती से नफ़रत, तंहाई पसन्दी और अल्लाह की इबादत का ज़ौक़	506
पैग़म्बर बनाए गए	507
वह्य आने का पहला दौर	510
वह्य उतरने का दूसरा दौर	511
दावत व इर्शाद के एलान की पहली मंज़िल	513
दावत व इर्शाद की दूसरी मंज़िल	514
आम बेसत	515
इस्लाम की दावत का मुज्मल ख़ाका और हज़रत जाफ़र रज़ि० की तक़रीर	516
मेराज	519
वाक़िया सिर्फ़ एक ही बार हुआ	519
तहक़ीक़ तारीख़ व सन्	520
क़ुरआन और मेराज का वाक़िया	520
हदीसें और मेराज के वाक़िए का सबूत	521
वाक़िए की शक्ल	522
मेराज का वाक़िया और क़ुरआन	522
सूरः बनी इसराईल और वाक़िया मेराज	523
मेराज शरीफ़ से मुताल्लिक़ तफ़्सील	526
मेराज में अल्लाह को देखना	529
इज़ाफ़ा	530
हिजरत	530
हब्शा की हिजरत	531
मदीना की हिजरत की वजहें	532
नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत	534
दारुन्नदवा	534
क़ुरआन मजीद और मदीने की हिजरत	436
हिजरत	538
लड़ाइयां	540
बद्र की लड़ाई	540

Maktab-e-Ishaat
Copyright OfflineDeeniApp

अहम लड़ाइयां और नतीजे और नसीहतें	588
ग़ज़वा बदरुल-कुबरा	588
उहुद की लड़ाई	588
अहज़ाब की लड़ाई	588
मक्का की फ़त्ह	589
हुनैन की लड़ाई	590
तबूक	591
हुदैबिया का वाक़िया	590
गोद लेकर बेटा बनाना	591
हज़रत ज़ैद रज़ि०	591
बेटा बनाने की रस्म की रोक-थाम	593
सबक़ और नसीहत	596
बनू नज़ीर	596
क़ुरआन और बनू नज़ीर	598
नतीजा और नसीहत	598
इफ़्क़ का वाक़िया	599
सबक़ और नसीहत	601
फ़ासिक़ की दी हुई ख़बर	603
मस्जिदे ज़रार (रजब सन् 06 हिजरी)	606
सबक़	607
वफ़ात या वस्ल बिर्रफ़ीक़िल आला	608
सबक़ और नसीहत	610
नुबूवत व रिसालत का ख़ात्मा	610

Maktabe Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

Maktab-e-Ashraf

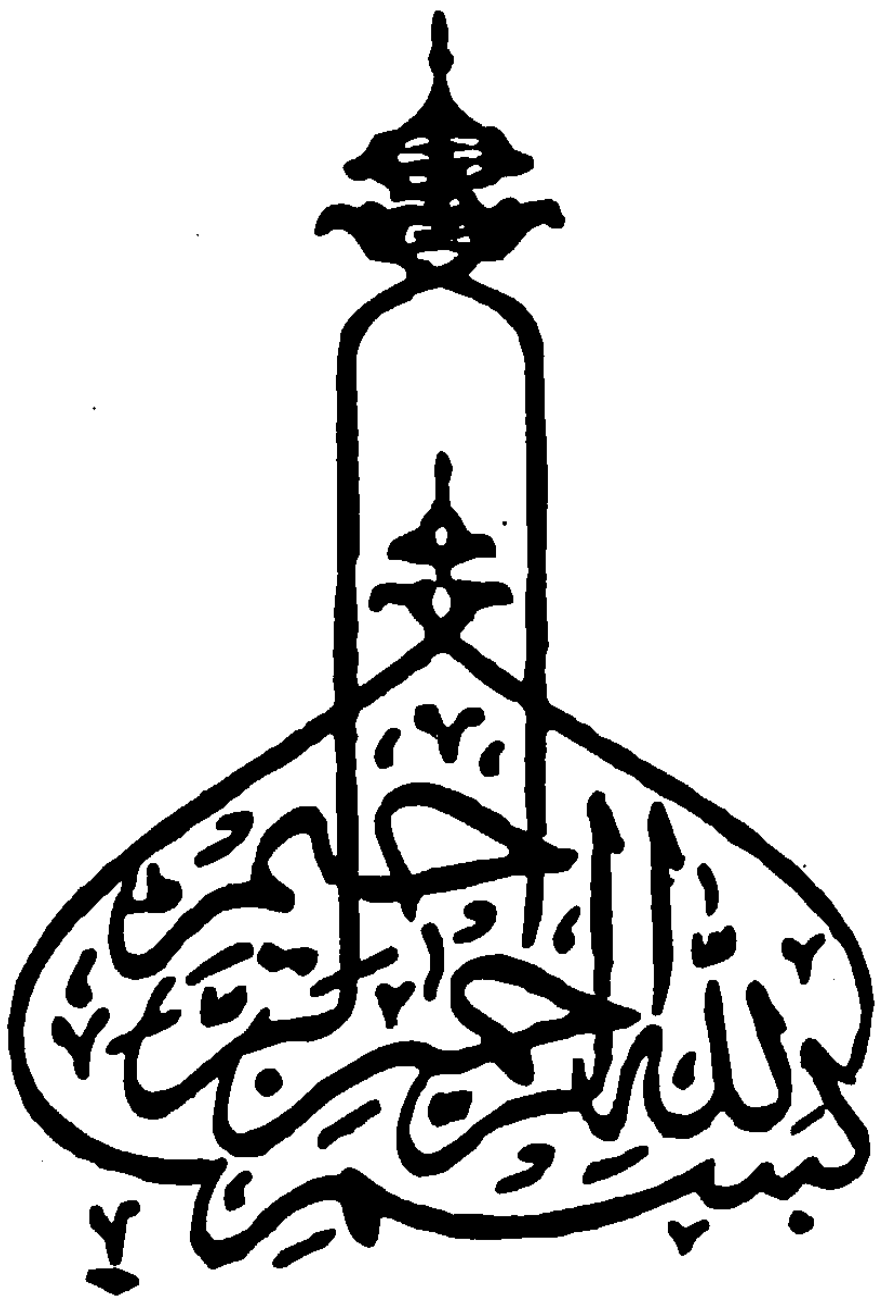

Copyright OfflineDeeniApp

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तम्हीद

क़ुरआन पाक इन तारीख़ी वाक़ियों को सिर्फ़ इसलिए नहीं बयान करता कि वे वाक़िए हैं, जिनका एक तारीख़ में लिखा होना ज़रूरी है, बल्कि इसका एक ही मक़्सद है, वह यह कि वह इन वाक़ियों से पैदा होने वाले नतीजों से इंसान की हिदायत व रहनुमाई के लिए नसीहत और इबरत बनाए और इंसानी अक़्ल व जज़्बात से अपील करे कि वे फ़ितरत के क़ानूनों के सांचे में ढले हुए इन तारीख़ी नतीजों से सबक़ हासिल करें और ईमान लाएं कि अल्लाह की हस्ती एक इंकार न की जा सकने वाली हक़ीक़त है और क़ुदरत का यही हाथ इस कायनात पर कारफ़रमा है और इसी मज़हब के हुक्मों की पैरवी में फ़लाह व नजात और हर क़िस्म की तरक़्क़ी का राज़ छिपा हुआ है, जिसका नाम 'फ़ितरत का मज़हब' या इस्लाम है।

—'क़ससुल क़ुरआन' से लिया गया

Maktab-e-Ash...f

Copyright OfflineDeeniApp

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

गरामी क़द्र हज़रत मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० की मुस्तनद और जामे तस्नीफ़ 'क़ससुल क़ुरआन' किसी तआरुफ़ की मुहताज नहीं, अलबत्ता हमारे मोहतरम दोस्त जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन साहब ने जिस मक़्सद के तहत इस मोटी-भारी किताब को मुख़्तसर किया है, वह बेशक वक़्त की अहम ज़रूरत है। उन्होंने मुख़्तसर करने का ऐसा अन्दाज़ अपनाया है कि नबियों और दूसरी बुज़ुर्ग हस्तियों से मुताल्लिक़ न सिर्फ़ हर उस बात को लिया है जिसका ताल्लुक़ इबरत और नसीहत से है, बल्कि दूसरी अहम बातों को भी थोड़े में बयान कर दिया है। उम्मीद है कि अल्लाह की मेहरबानी से इस किताब के पढ़ने में लगे लोग पूरी तरह फ़ायदा उठा सकेंगे।

बुढ़ापे में जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन के सोचने का अन्दाज़ और उसके तहत उनकी यह कोशिश हर तरह तारीफ़ के क़ाबिल है। अल्लाह पाक उनकी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

–क़ारी सैयद रशीदुल हसन हसनी नदवी
इमाम व ख़तीब
जामा मस्जिद न्यूटाउन, अल्लामा बन्नोरी टाउन, कराची
5 मुहर्रमुल हराम 1408 हि०

Maktabe-Ashraf
Copyright OfflineDeeniApp

अर्ज़ है कि...

गरामी क़द्र मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० पाक व हिंद उप महाद्वीप के नामी उलेमा में नुमायां हैसियत रखते हैं। उनकी मशहूर व मक़बूल किताब 'क़ससुल क़ुरआन' अपने मौज़ू (विषय) के एतबार से मुंफ़रिद (एक ही) समझी जाती है। इसकी जो ख़ूबी सबसे ज़्यादा नुमायां है, वह यह है कि हर क़िस्से के आख़िर में मौलाना ने गहरी नज़र और सूझ-बूझ से जो बातें पेश की हैं, वे हर ख़ास व आम के लिए क़दम-क़दम पर रहनुमाई करती हैं। दीनी मदरसों के असातज़ा, (टीचर्स), मस्जिदों के ख़ु त बा (ख़िताब करने वाले ख़तीब हज़रात) और दीनी तलबा के लिए इस किताब का पढ़ना बेहद फ़ायदेमंद समझा जा रहा है।

यह किताब चार हिस्सों में 1800 से ज़्यादा सफ़हों पर फैली हुई है। अंजुमन इशाअते क़ुरआन अज़ीम के शोबा तस्नीफ़ व तालीफ़ से वाबिस्ता जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन साहब ने इस मोटी किताब का ख़ुलासा सिर्फ़ 600 सफ़हों में पेश किया है, जिसे हर हलक़े में पसन्दीदा नज़रों से देखा गया, ख़ास तौर से इसलिए कि इस तरह उन्होंने वक़्त के तक़ाज़े को पूरा किया है और बेकार की बहसों से नज़रें हटा कर मश्ग़ूल व मस्रूफ़ लोगों को भी इससे फ़ायदा उठाने का पूरा-पूरा मौक़ा जुटा दिया है। अल्लाह पाक उनको भला बदला दे।

ज़िया ब्रदर्स बुक सेन्टर इस ख़ुलासे की अहमियत और फ़ायदों को देखते हुए अंजुमन इशाअते क़ुरआन अज़ीम के छपे आठ भागों को इकट्ठा करके एक जिल्द में बेहतरीन कम्प्यूटर कम्पोज़िंग करवा कर 'क़ससुल अंबिया व अस्हाबुस्सालिहीन' की तलख़ीस (ख़ुलासा) 'क़ससुल क़ुरआन अज़ मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० के उन्वान से छाप कर इस नेक काम में हिस्सा ले रहा है।

अल्लाह पाक इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

Maktab-e-Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू करते वक़्त

अल्लाह पाक ने जो क़िस्से और वाक़िए क़ुरआन अज़ीज़ में बयान फ़रमाए हैं, उनके बारे में उर्दू ज़ुबान में गरामी क़द्र मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी साहब रह० की किताब 'क़ससुल क़ुरआन' इस दौर में लिखी जाने वाली कुछ फ़ायदेमन्द किताबों में से एक है। इस किताब के बारे में मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी मद्द ज़िल्लहुल आली ने इस तरह अपने ख़्याल ज़ाहिर किए हैं—

'हज़रत मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी दो किताबें—एक तो 'क़ससुल क़ुरआन' दूसरी, 'इस्लाम का इक़्तिसादी निज़ाम' ख़ास तौर से ज़िक्र के क़ाबिल है। उर्दू में हमारे इल्म में 'क़ससुल क़ुरआन' अंबिया عليهم السلام की हयात और उनकी दावते हक़ की मुस्नद तारीख़ व तफ़्सीर जो क़ुरआन मजीद के गहरे मुताले, नई-पुरानी मज़हबी किताबों की तह्क़ीक़ की मदद से तर्तीब दी गई हो, इससे पहले नहीं थी। मौलाना ने यह किताब लिख कर एक बड़ी ज़रूरत पूरी की और इस्लामियात और इल्मे क़ुरआन के तालिब इल्मों के लिए एक क़ीमती ज़ख़ीरा मुहय्या कर दिया।'

—कारवाने ज़िंदगी, भाग 4, पृ. 263

यह किताब चार भागों में लगभग दो हज़ार सफ़हों (पृष्ठों) पर शामिल हैं। मौजूदा मस्रूफ़ियात के दौर में बहुत से लोगों की यह ख़्वाहिश होती है कि किताब मुख़्तसर और जामेअ् हो। लिखने वाले ने इस ख़्याल को ज़ेहन में रखकर इंग्लिश लिट्रेचर के Abridged Edition के अन्दाज़ पर 'क़ससुल क़ुरआन' का इख़्तिसार (संक्षिप्तीकरण) सिर्फ़ 600 सफ़हों की एक जिल्द (भाग) में पेश कर दिया है। इस इख़्तिसार में उन इल्मी, फ़लसफ़ियाना (दार्शनिक) और तारीख़ी बहसों को नज़रअंदाज़ कर दिया है जिनका ताल्लुक़

Maktab-e-Ashraf
Copyright OfflineDeeniApp

वाज़ व नसीहत से नहीं है।

इस नेक काम के अज्र व सवाब के सच्चे हक़दार मोहतरम मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब स्योहारवी रह० ही हैं। इस नाचीज़ बन्दे के लिए तो बस इतना ही काफ़ी है—

बहुस्ने एहतमामत कारे जामी
तुफ़ैले दीगरां यावद तमामी

अल्लाह पाक इस कोशिश को कुबूल फ़रमाए।

कमतरीन
सैयद तंज़ीम हुसैन (1416 हि.)
शोबा तस्नीफ़ व तालीफ़

अंजुमन इशाअते क़ुरआन अज़ीम, कराची

Maktabe-Ash-Af

Copyright OfflineDeeniApp

Maktab-e-Ash...f

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना बिल किताबिल मुबीन व अन-ज़-ल अलैनल क़ुरआ-न बिलिसानिन अ-रबीयिम मुबीन व क़स-स फ़ीहि अहसनल क़-स सि मौइज़तन व ज़िकरा लिल मोमिनीन वस्सलातु वस्सलामु अलन्नबीयिस्सादिक़िल अमीन मुहम्मदिन रसूलिल्लाहि व ख़ातमिन्नबीयीन व अला आलिही व अस्हाबिहिल्लज़ी-न हुम हुदातुल लिल मुत्तक़ीन० अम्मा बाद

क़ुरआन पाक में अल्लाह तआ़ला ने इंसानी दुनिया की हिदायत के लिए अलग-अलग मोजज़ों वाले तरीक़े अपनाए हैं, उनमें एक यह भी है कि पिछली क़ौमों के वाक़ियों और क़िस्सों के ज़रिए उनके नेक व बद-आमाल और उन आमाल के फलों और नतीजों को याद दिलाए और सबक़ हासिल करने का सामान जुटाए, इसीलिए वह बयान करने के तारीख़ी उस्लूब के पीछे नहीं पड़ता, बल्कि हक़ पहुंचाने और अल्लाह की ओर बुलाने के अहम मक़्सद को सामने रख कर सिर्फ़ उन्हीं वाक़ियों को सामने लाता है, जो इस ग़रज़ व ग़ायत को पूरा करते हों और इसीलिए क़ुरआन अज़ीज़ में उनकी तकरार (बार-बार) पाई जाती है, ताकि सुनने वालों के दिल में वे घर कर सकें और फ़ितरी और तबई रुझानों को इन हक़ीक़तों की ओर मुतवज्जह किया जा सके और यह तभी मुम्किन है कि एक बात को बयान करके अलग-अलग तरीक़ों से और जैसे हालात हों, उसी हिसाब से उस्लूब निगारिश से बार-बार दोहराया जाए और सोच की सोई हुई ताक़तों को बार-बार बेदार किया जाए।

क़ुरआन मजीद के क़िस्सों और वाक़ियों का सिलसिला ज़्यादातर पिछली क़ौमों और उनकी ओर भेजे गए पैग़म्बरों से वाबस्ता है और थोड़ा-थोड़ा करके कुछ और वाक़िए भी इस सिलसिले में आ गए हैं और यह तमामतर हक़ व

Copyright OfflineDeeniApp

वातिल के संघर्षों और औलिया-उल्लाह और औलिया-उश्शैतान (शैतान के साथियों) के मारकों का एक सबक़ भरा हुआ और नसीहत हासिल करने वाला बेमिसाल ज़ख़ीरा है।

लेकिन दूसरों का क्या ज़िक्र, हम मुसलमानों में भी बहुत कम ऐसे हैं जो अल्लाह के इस सबसे मुकम्मल और आख़िरी क़ानून (क़ुरआन पाक) से फ़ायदा उठाते और अपने मुरदा दिलों में ईमान और यक़ीन की ज़िंदगी पैदा करते हों, इसलिए कि यह अल्लाह का क़ानून है और हम इसे जारी करने पर लगाए गए हैं इसलिए हमें चाहिए कि मानी व मतलब पर ग़ौर करते रहें यह समझ कर कि यह रहती दुनिया तब अबदी और हमेशा की ज़िंदगी और दोनों दुनिया की फ़लाह व सआदत का मुकम्मल दस्तूर है।

क़ुरआन उतरते वक़्त पैग़म्बरे ख़ुदा ﷺ ने मुश्रिकों के दुश्मनी भरे रवैए से तंग आकर यह शिकायत की थी।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कहाः *'ऐ मेरे परवरदिगार! बेशुबहा मेरी क़ौम ने क़ुरआन को महजूर (झक-झक) बना लिया है।'*

(अल-फ़ुरक़ान 25/30)

लेकिन इस चौदहवीं सदी में अगर हम अपने दिलों को टटोलें, तो इस्लाम के दावे और क़ुरआन को ख़ुदा का कलाम यक़ीन करने के बाजवूद कितने हैं जो इस कलामे इलाही को अपनी ज़िंदगी के लिए बेहतरीन निज़ामे अ़मल बनाते और इस नज़र से उसकी तिलावत करते हैं।

अपनी और अपनी क़ौम की इस हालत को देखते हुए जी चाहा कि इबरत और बसीरत के इस सरमाए को उर्दू में (अब हिन्दी में भी) लाया जाए ताकि नक़ल से बचे रहने के बाद ख़ुद-ब-ख़ुद असल की जानिब रग़बत पैदा हो और इस तरह दोनों दुनिया की सआ़दत का पता मिले।

अपने लिखने के सादा तरीक़े के बावजूद इस मज्मूए में कुछ ख़ुसूसियतों का ख़ास तौर पर लिहाज़ किया गया है--

1. किताब में तमाम वाक़ियों की बुनियाद क़ुरआन को बनाया गया है और मुस्तनद हदीसो और तारीख़ी वाक़ियों से उनकी वज़ाहत और तशरीह की गई है।

Copyright OfflineDeeniApp

2. तारीख़ और पुराने ज़माने की किताबों के दर्मियान और क़ुरआन अज़ीज़ के मुहकम यक़ीन के दर्मियान अगर कहीं टकराव आ गया है तो उसको रोशन दलीलों के ज़रिए या मेल दिखाने की कोशिश की गई है और या फिर क़ुरआन की सदाक़त को वज़ाहत से साबित किया गया है।

3. इसराईली ख़ुराफ़ात और मुख़ालिफ़ों के एतराज़ों की बकवास की हक़ीक़त को रोशनी में ज़ाहिर किया गया है।

4. ख़ास-ख़ास जगहों पर तफ़्सीरी, हदीसी और तारीख़ी उलझनों पर बहस व तम्हीस के बाद पिछले बुज़ुर्गों के मस्लक के मुताबिक़ उनका हल पेश किया गया है।

5. हर पैग़म्बर के हालात क़ुरआन अज़ीज़ की किन-किन सूरतों में बयान हुए हैं, उनको नक़्शे की शक्ल में एक जगह दिखाया गया है।

6. इन तमाम बातों के साथ-साथ 'नतीजों और इबरतों' या 'इबरतों और बसीरतों' के उन्वान से असल मक़्सद और हक़ीक़ी ग़रज़ व ग़ायत यानी इबरत व वसीरत के पहलू को ख़ास तौर पर नुमायां किया गया है।

—ख़ादिमे मिल्लत
मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी
लेख : 22 रज्जबुल मुरज्जब सन् 1360 हि०

Copyright OfflineDeeniApp

Maktab-e-Asl...f

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कायनात की पैदाइश और पहला इंसान

पहला इंसान

हज़रत आ॰म अ़लैहिस्सलाम के बारे में क़ुरआन मजीद ने जो हक़ीक़तें बयान की हैं, उनके तफ़सीली तज़्किरे से पहले यह साफ़ हो जाना ज़रूरी है कि इंसान के आलमे वुजूद में आने का मसूअला आज इल्मी निगाह से बहस का एक नया दरवाज़ा खोलता है, यानी Evolution (विकास) का यह दावा है कि मौजूदा इंसान अपनी शुरूआती पैदाइश ही से इंसान पैदा नहीं हुआ, बल्कि मौजूद कायनात में उसने बहुत से दर्जे तय करके मौजूदा इंसानी शक्ल हासिल की इसलिए कि ज़िंदगी की शुरूआत ने कंकड़-पत्थर, पेड़-पौधों की अलग-अलग शक्लें अख़्तियार करके हज़ारों-लाखों वर्ष बाद एक-एक दर्जा तरक़्क़ी करते-करते पहले लबूना (पानी की जोंक) का जामा पहना और फिर ऐसी ही लम्बी मुद्दत के बाद जानदारों के अलग-अलग छोटे-बड़े तबक़ों से गुज़र कर मौजूदा इंसान की शक्ल अपनाई। और मज़हब यह कहता है कि कायनात के पैदा करने वाले ने पहला इंसान हज़रत आदम की शक्ल ही में पैदा किया और फिर उसकी तरह एक हमजिंस मख़्लूक़ हव्वा को वजूद देकर दुनिया में इंसानी नस्ल का सिलसिला क़ायम किया और यही वह इंसान है जिसको कायनात के पैदा करने वाले ने तमाम पैदा की हुई चीज़ों पर बरतरी और बुज़ुर्गी अता फ़रमाई और अल्लाह की अमानत का भारी बोझ उसके सुपुर्द फ़रमाया और कुल कायनात को उसके हाथ में सधा कर अल्लाह के ख़लीफ़ा और नायब होने का शरफ़ उसी को बख़्शा।

Copyright OfflineDeeniApp

'बेशक, हमने इंसानों को बेहतरीन अन्दाज़ से बनाया है।'

(तीन 95/4)

'बेशक हमने आदम की नस्ल को तमाम कायनात पर बुज़ुर्गी और बरतरी बख़्शी।'

(अल-इसरा 14/7)

'मैं ज़मीन पर आदम को अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं।'

(अल-बक़र: 2/30)

'हमने अमानत के बोझ को आसमानों और ज़मीन पर पेश किया, तो उन्होंने (यानी कुल कायनात ने) अल्लाह की अमानत के बोझ को उठाने से इंकार कर दिया, और इससे डर गए और इंसान ने उस भारी बोझ को उठा लिया।'

(अल-अहज़ाब 33/72)

अब सोचने की बात यह है कि Evolution और धर्म के बीच इस ख़ास मसअले में इल्मी तज़ाद (विरोधाभास) है या ततबीक़ (मेल) की गुंजाइश निकल सकती है, ख़ास तौर से जबकि इल्म और तजुर्बे ने यह सच्चाई खोल कर रख दी है कि दीनी और मज़हबी हक़ीक़तों और इल्म के दर्मियान किसी भी मामले में टकराव नहीं है। अगर ज़ाहिरी सतह पर कहीं ऐसा नज़र भी आता है तो वह इल्म की हक़ीक़तों के छुपे होने की वजह से नज़र आता है, क्योंकि बार-बार यह देखा गया है कि जब भी इल्म की छुपी हक़ीक़तों पर से परदा उठा, तो उसी वक़्त तज़ाद भी जाता रहा और वही हक़ीक़त निखर कर सामने आ गई जो अल्लाह की वह्य के ज़रिए ज़ाहिर हो चुकी थी। दूसरे लफ़्ज़ों में कह दीजिए कि इल्म और मज़हब के दर्मियान अगर किसी वक़्त भी तज़ाद नज़र आया, तो नतीजे के तौर पर इल्म को अपनी जगह छोड़नी पड़ी और अल्लाह की वह्य का फ़ैसला अपनी जगह अटल रहा।

इस बुनियाद पर इस जगह भी कुदरती तौर पर यह सवाल सामने आ जाता है कि इस ख़ास मसअले में हक़ीक़ते हाल क्या है और किस तरह है? जवाब यह है कि इस मामले में भी इल्म और मज़हब के दर्मियान कोई टकराव नहीं है, अलबत्ता यह मसअला चूंकि बारीक और गूढ़ बातें अपने भीतर समोए हुए है, फिर भी यह हक़ीक़त इस जगह हमेशा नज़रों में रहनी चाहिए कि पहला इंसान, (जो कि मौजूदा इंसान की नस्ल का बाबा आदम है, भले ही

Copyright OfflineDeeniApp

तरक़्क़ी (Evolution) के नज़रिए के मुताबिक़ दर्जा-ब-दर्जा इंसानी शक्ल तक पहुंचा हो या पैदाइश की शुरूआत ही में इंसानी शक्ल में वुजूद में आया हो इल्म और मज़हब दोनों का इस पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि मौजूदा इंसान ही इस कायनात की सबसे बेहतर मख़्लूक़ है और अक़्ल और सूझ-बूझ का ढांचा ही अपने अ़मल और किरदार के लिए जवाबदेह है और दस्तूर व क़ानून का मुकल्लफ़ है या इस तरह समझ लीजिए कि इंसानी किरदार और उसके इल्मी और अ़मली, साथ ही अख़्लाक़ी किरदार को देखते हुए इस बात की कोई अहमियत नहीं है कि इसके पैदा होने, ढलने और वजूद की दुनिया में आने की तफ़सील क्या है, बल्कि अहमियत की बात यह है कि इस पैदा हुई दुनिया में उसका वुजूद यों ही बे-मतलब और बेमक़्सद है या उसकी हस्ती अपने भीतर बहुत बड़ा मक़्सद लेकर वजूद में आई है? क्या उसके अफ़आल व अक़वाल और किरदार व गुफ़्तार (कर्म-कथन, चरित्र-आचरण) के असरात (प्रभाव) बहुत अधिक हैं? क्या उसकी माद्दी और रूहानी क़ुदरतें सब की सब बेकार और बे-नतीजा हैं या क़ीमती फलों से लदी हुई और हिक्मत से भरी हुई हैं? और क्या उसकी ज़िंदगी अपने भीतर कोई रौशन व ताबनाक हक़ीक़त रखती है और घोर अंधेरे वाले भविष्य (मुस्तक़्बिल) का पता देती है और उसका माज़ी व हाल अपने मुस्तक़्बिल को नहीं जानता?

पस अगर इन हक़ीक़तों का जवाब 'नहीं' में नहीं, बल्कि 'हां' में है तो फिर क़ुदरती तौर पर यह मानना ही होगा कि उसकी पैदाइश की कैफ़ियत (दशा) पर बहस की जाए, उसके वुजूद के मक़्सद पर पूरी निगाह रखी जाए और यह मान लिया जाए कि पैदा की हुई चीज़ों में सबसे बेहतर हस्ती का वुजूद बेशक बड़े मक़्सद का पता देता है और इसलिए उसकी अख़्लाक़ी क़द्रों का ज़रूर कोई 'मसलें आला' (बड़ी नज़ीर) और उसकी पैदा करने का कोई मक़्सद है।

क़ुरआन पाक ने इसीलिए हज़रत इंसान से मुताल्लिक़ पॉज़िटिव और निगेटिव हर दो पहलू को वाज़ेह करके इंसानी हस्ती के बड़प्पन का एलान किया है और बतलाया है कि कायनात के पैदा करने वाले और बनाने-संवारने वाले की क़ुदरत में इंसान की पैदाइश 'सबसे बेहतर' का दर्जा रखती है और

Copyright OfflineDeeniApp

इसी वजह से वह तमाम कायनात के मुक़ाबले में 'बड़े होने और अज़ीम होने' का हक़दार है और अपने कामों और तरीक़ों की वजह से बेहतर। वही अल्लाह की अमानत का अलमबरदार होकर 'अल्लाह का ख़लीफ़ा' के मंसब पर बने रहने का हक़ रखता है और जब यह सब कुछ उसमें मौजूद है तो फिर यह कैसे मुम्किन था कि उसकी हस्ती को यों ही बेमक़्सद और बेनतीजा छोड़ दिया जाता।

'क्या लोगों (इंसानों) ने यह गुमान कर लिया है कि वे बेमक़्सद छोड़ दिए जाएंगे?'

(अल-क़ियाम : 75/36)

और ज़रूरी है कि अक़्ल व शऊर के इस पैकर को तमाम कायनात में नुमायां बनाकर नेकी व बुराई की तमीज़ अता की जाए और बुराई से परहेज़ और भलाई के अख़्तियार का मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार) बनाया जाए।

'(अल्लाह तआला ने) इंसान को पैदा किया और फिर (नेकी और बदी की) राह दिखाई।'

(ताहा 20/50)

'फिर हमने इंसान को दोनों रास्ते (नेकी और बुराई) दिखाए।'

(अल-बलद 90/10)

ग़रज़ क़ुरआन मजीद की याददेहानी और दावत, भलाइयों को करने और बुराइयों को रोकने और रुश्द व हिदायत का मुख़ातब और शुरू और आख़िर का मेह्वर व मर्कज़ सिर्फ़ यही हस्ती तो है, जिसको 'इंसान' कहते हैं और यही वजह है कि क़ुरआन ने पहले इंसान की पैदाइश की कैफ़ियतों और तफ़्सीलों को नज़रअंदाज़ करके उसके शुरू और आख़िर को ही यह अहमियत दी है—

ख़िरदमंदों से क्या पूछूं कि मेरी इब्तिदा क्या है
कि मैं इस फ़िक्र में रहता हूं मेरी इंतिहा क्या है

—इक़बाल

Copyright OfflineDeeniApp

इल्मी बहसों से मुताल्लिक़ इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र (दृष्टिकोण)

असल में इसकी इल्मी बहसों के लिए इस्लाम की तालीम यह है कि जो मसूअले यक़ीन और मुशाहदे के इल्म की हद तक पहुंच चुके हैं और क़ुरआनी इल्म और अल्लाह की वह्य इन हक़ीक़तों का इंकार नहीं करती, क्योंकि 'क़ुरआन मुशाहदे और हिदायत का कभी भी इंकार नहीं करता' तो उन को बिना किसी शक के मान लिया जाए, इसलिए कि ऐसी हक़ीक़तों का इंकार बेजा तअस्सुब और तंगनज़री के सिवा और कुछ नहीं और जो पहले अभी तक यक़ीन की इन मंज़िलों तक नहीं पहुंचे जिनको मुशाहदा और हिदायत कहा जा सके जैसा कि बहस में आया मसूअला है, तो इनके बारे में क़ुरआन के मतलबों में तावील नहीं करनी चाहिए और ख़ामख़ाही उनको नई तहक़ीक़ के सांचे में ढालने की कोशिश हरगिज़ जायज़ नहीं, बल्कि वक़्त का इंतिज़ार करना चाहिए कि वे मसूअले अपनी हक़ीक़त को इस तरह ज़ाहिर कर दें कि उनके इंकार से मुशाहदा और हक़ीक़त का इंकार लाज़िम आ जाए, इसलिए कि यह हक़ीक़त है कि इल्मी बहसों को तो बार-बार अपनी जगह से हटना पड़ा है। मगर क़ुरआनी इल्मों को कभी एक बार भी अपनी जगह से हटने की ज़रूरत पेश नहीं आयी और जब कभी इल्मी मसूअले बहस व नज़र के बाद यक़ीन और मुशाहदे की हद तक पहुंचे हैं, वे एक नुक़्ता भी इससे आगे नहीं गए जिसको क़ुरआन ने पहले वाज़ेह कर दिया है।

Copyright OfflineDeeniApp

Maktab-e-Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश, फ़रिश्तों को सज्दे का हुक्म, शैतान का इंकार

अल्लाह तआला ने आदम को मिट्टी से पैदा किया और उनका ख़मीर तैयार होने से पहले ही उसने फ़रिश्तों को यह ख़बर दी कि वह बहुत जल्द मिट्टी से एक मख़्लूक़ पैदा करने वाला है जो 'बशर' कहलाएगी और ज़मीन में हमरी ख़िलाफ़त का शरफ़ हासिल करेगी।

आदम का ख़मीर मिट्टी से गूंधा गया और ऐसी मिट्टी से गूंधा गया जो नित नई तब्दीली क़ुबूल कर लेने वाली थी। जब यह मिट्टी पक्की ठीकरी की तरह आवाज़ देने और खनखनाने लगी तो अल्लाह तआ़ला ने उस मिट्टी के पुतले में रूह फूंकी और वह एक ही वक़्त में गोश्त-पोस्त, हड्डी-पुट्ठे का ज़िंदा इंसान बन गया और इरादा, शऊर, हिस्स, अक़्ल और विज्दानी जज़्बात व कैफ़ियात का हामिल नज़र आने लगा। तब फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि तुम उसके सामने सज्दे में गिर जाओ, फ़ौरन तमाम फ़रिश्तों ने इर्शाद की तामील की, मगर इब्लीस (शैतान) ने घमंड और सरकशी के साथ साफ़ इंकार कर दिया।

सज्दे से इन्कार करने पर इब्लीस का मुनाज़रा

अल्लाह तआ़ला अगरचे ग़ैब का इल्म रखने वाला और दिलों के भेदों तक को जानने वाला है और माज़ी, हाल और मुस्तक़्बिल (भूत, वर्तमान, भविष्य) सब उसके लिए बराबर हैं, मगर उसने इम्तिहान व आज़माइश के

Copyright OfflineDeeniApp

लिए इब्लीस (शैतान) से सवाल किया–

'किस बात ने झुकने से रोका, जबकि मैंने हुक्म दिया था?'

(आराफ़ 7/12)

इब्लीस ने जवाब दिया–

'इस बात ने कि मैं आदम से बेहतर हूं, तूने मुझे आग से पैदा किया, इसे मिट्टी से।' (आराफ़ 7/12)

शैतान का मक़्सद यह था कि मैं आदम से अफ़ज़ल हूं, इसलिए कि तूने मुझको आग से बनाया है और आग बुलन्दी और बरतरी चाहती है, और आदम 'ख़ाकी मख़्लूक़' भला ख़ाक को आग से क्या निस्बत? ऐ अल्लाह! फिर यह तेरा हुक्म कि नारी (नार यानी आग से बना हुआ) ख़ाकी (ख़ाक यानी मिट्टी से बना हुआ) को सज्दा करे, क्या इंसाफ़ के मुताबिक़ है? मैं तमाम हालतों में आदम से बेहतर हूं इसलिए वह मुझे सज्दा करे, न कि मैं उसके सामने सज्दा करूं? मगर बदबख़्त शैतान अपने घमंड में चूर होने की वजह से भूल गया कि जब तुम और आदम दोनों अल्लाह की मख़्लूक़ हो तो मख़्लूक़ की हक़ीक़त ख़ालिक़ से बेहतर, ख़ुद वह मख़्लूक़ भी नहीं जान सकती, वह अपने घमंड और ग़ुरूर में यह न समझ सका कि मर्तबा की बुलन्दी और पस्ती उस माद्दे की बुनियाद पर नहीं है, जिससे किसी मख़्लूक़ का ख़मीर तैयार किया गया है, बल्कि उसकी उन सिफ़तों पर है जो कायनात के पैदा करने वाले ने उसके अन्दर रख दिए हैं।

बहरहाल शैतान का जवाब, चूंकि घमंड और ग़ुरूर की जहालत पर क़ायम था, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उस पर वाज़ेह कर दिया कि जहालत से पैदा होने वाले घमंड व ग़ुरूर ने तुझको इतना अंधा कर दिया है कि तू अपने पैदा करने वाले के हक़ और पैदा करने वाला होने की वजह से उसके एहतराम से भी मुन्किर हो गया इसलिए मुझको ज़ालिम क़रार दिया और यह न समझा कि तुझको तेरी जहालत ने हक़ीक़त के समझने से आजिज़ बना दिया है, पस तू अब इस सरकशी की वजह से अबदी हलाकत का हक़दार है और यही तेरे अ़मल का क़ुदरती बदला है।

Copyright OfflineDeeniApp

इब्लीस ने मोहलत तलब की

इब्लीस ने जब देखा कि कायनात के पैदा करने वाले के हुक्म के ख़िलाफ़ करने, तकब्बुर और रऊनत और अल्लाह पर ज़ुल्म के इलज़ाम ने हमेशा के लिए मुझको रब्बुलआलमीन की आग़ोशे रहमत से मरदूद और जन्नत से महरूम कर दिया, तो तौबा और नदामत की जगह अल्लाह से यह दरख़्वास्त की कि क़ियामत आने तक मुझको मोहलत दे और इस लम्बी मुद्दत के लिए ज़िंदगी की रस्सी लम्बी कर दे।

अल्लाह की हिक्मत का तक़ाज़ा भी यही था, इसलिए उसकी दरख़्वास्त मंज़ूर कर ली गयी। यह सुनकर अब उसने फिर एक बार अपनी शैतानी का मुज़ाहरा किया, कहने लगा : जब तूने मुझको रांदा-ए-दरगाह कर ही दिया, तो जिस आदम की बदौलत मुझे यह रुस्वाई नसीब हुई, मैं भी आदम की औलाद की राह मारूंगा और उनके सामने-पीछे, आस-पास और चारों ओर से होकर उनको गुमराह करूंगा और उनकी अक्सरीयत को तेरा नासपास और नाशुक्रगुज़ार बना छोड़ूंगा अलबत्ता तेरे 'मुख़्लिस बन्दे' मेरे इग़्वा के तीर के घायल न हो सकेंगे और हर तरह महफ़ूज़ रहेंगे।

अल्लाह ने फ़रमाया, हम को इसकी क्या परवाह हमारी फ़ितरत का क़ानून, मुकाफ़ाते अ़मल और पादाशे अ़मल अटल क़ानून है। पस जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा और जो बनी आदम मुझसे रूगरदानी करके तेरी पैरवी करेगा, वह तेरे ही साथ अल्लाह के अज़ाब का हक़दार होगा। जा, अपनी ज़िल्लत और रुस्वाई और ख़राब क़िस्मत के साथ यहां से दूर हो और अपनी और अपने पैरोकारों की अबदी लानत (जहन्नम) का इंतिज़ार करा।

आदम ﷺ और दूसरे फ़रिश्ते

आदम ﷺ की ख़िलाफ़त—जैसा कि पहले बयान किया गया है, जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम ﷺ को पैदा करना चाहा तो फ़रिश्तों को ख़बर दी कि मैं ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाना चाहता हूं जो एख़्तियार और इरादे का मालिक होगा और मेरी ज़मीन पर, जिस क़िस्म का तसर्रुफ़

Copyright OfflineDeeniApp

(इस्तेमाल का हक़ हासिल) करना चाहेगा, कर सकेगा और अपनी ज़रूरतों के लिए अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम ले सकेगा, गोया वह मेरी क़ुदरत और मेरे तसर्रुफ़ (इस्तेमाल) व अख़्तियार का 'मज़्हर' होगा।

फ़रिश्तों ने यह सुना तो हैरत में रह गए और अल्लाह के दरबार में अर्ज़ किया कि अगर इस हस्ती की पैदाइश की हिक्मत यह है कि वह दिन-रात तेरी तस्बीह व तहलील में लगा रहे और तेरी तक़्दीस और बुज़ुर्गी के गुन गाए तो इसके लिए हम हाज़िर हैं, जो हर लम्हा तेरी हम्द व सना करते और बे-चून व चरा तेरा हुक्म बजा लाते हैं। हम को तो इस 'ख़ाकी' से फ़ित्ना व फ़साद की बू आती है। ऐसा न हो कि यह तेरी ज़मीन में ख़राबी और ख़ूंरेज़ी पैदा कर दे? ऐ अल्लाह! तेरा यह फ़ैसला आख़िर किस हिक्मत पर मब्नी है?

बारगाहे इलाही से एक तो उनको यह अदब सिखाया गया कि मख़्लूक़ को ख़ालिक़ के मामलों में जल्दबाज़ी से काम न लेना चाहए और उसकी जानिब से हक़ीक़ते हाल के ज़ाहिर होने से पहले ही शक व शुब्हा को सामने न लाना चाहिए और वह भी इस तरह कि इसमें अपनी बरतरी और बड़ाई का पहलू निकलता हो, कायनात का पैदा करने वाला इन हक़ीक़तों को जानता है, जिनको तुम नहीं जानते और उसके इल्म में वह सब कुछ है, जो तुम नहीं जानते।

आदम अलैहिस्सलाम की तालीम (इल्म का सिखाना) और फ़रिश्तों का इज्ज़ का इक़रार

इस जगह फ़रिश्तों का सवाल इसलिए न था कि वे अल्लाह तआ़ला से मुनाज़रा या उसके फ़ैसले के मुताल्लिक़ मूशगाफ़ी करें, बल्कि वे आदम की पैदाइश का सबब मालूम करना चाहते थे और यह कि उसको ख़लीफ़ा बनाने में क्या हिक्मत है? उनकी ख़्वाहिश थी कि इस हिक्मत का राज़ उन पर भी खुल जाए, इसलिए उनके तर्ज़े अदा और मक़्सद की ताबीर में कोताही पर तंबीह के बाद अल्लाह तआ़ला ने यह पसन्द फ़रमाया कि उनके इस सवाल का जवाब जो ज़ाहिर में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की तहक़ीर पर मब्नी है, अ़मल व फ़ेल के ज़रिए इस तरह दिया जाए कि उनको अपने आप आदमी

Copyright OfflineDeeniApp

की बरतरी और अल्लाह की हिक्मत की बुलन्दी और ऊंचाई को न सिर्फ़ मानना पड़े, बल्कि अपनी दरमांदगी और इज्ज़ का भी बदीही तौर पर मुशाहदा हो जाए, इसलिए हज़रत आदम को अपनी सबसे बड़ी मर्तबे वाली सिफ़त 'इल्म' से नवाज़ा और उनको चीज़ों का इल्म अता फ़रमाया और फिर फ़रिश्तों के सामने पेश करके इर्शाद फ़रमाया कि तुम इन चीज़ों के बारे में क्या इल्म रखते हो? उनके पास इल्म न था, क्या जवाब देते? मगर अल्लाह की दरगाह से क़ुर्ब रखते थे, समझ गए कि हमारा इम्तिहान मक़्सूद नहीं है, क्योंकि इससे पहले हमको इसका इल्म ही कब दिया गया है कि आज़माइश की जाती, बल्कि यह तंबीह़ मक़सूद है कि 'ख़िलाफ़ते इलाहिया का मदार तस्बीह व तहलील की कसरत और तक़्दीस व तम्जीद पर नहीं बल्कि 'इल्म' नामी सिफ़त पर है, इसलिए कि इरादा, अख़्तियार, क़ुदरत व तसर्रुफ़ और क़ुदरत का अख़्तियार या दूसरे लफ़्ज़ों में यों कहिए कि हुकूमत इल्म की ज़मीनी सिफ़त के बग़ैर नामुम्किन है। पस जबकि आदम को अल्लाह तआ़ला ने अपने इल्म की सिफ़त का मुकम्मल मज़्हर बनाया है तो बेशक वही अरज़ी ख़िलाफ़त का हक़दार है, न कि हम और हक़ीक़त भी यह कि अल्लाह के फ़रिश्ते अपनी ज़िम्मेदारियों के अलावा हर क़िस्म की दुन्यवी ख़्वाहिशों और ज़रूरतों से बे-नियाज़ हैं। इसलिए वे उनके इल्म को भी नहीं जानते थे और आदम को चूंकि इन सबसे वास्ता पड़ता था, इसलिए उनका हाल इसके लिए एक फ़ितरी बात थी जो रब्बुल-आलमीन की कामिल रबूबियत की बख़्शिश से अता हो और उसको वह सब कुछ बता दिया गया हो जो उसके लिए ज़रूरी था।

गोया हज़रत आदम को इल्म की सिफ़त से इस तरह नवाज़ा गया कि फ़रिश्तों के लिए भी उनकी बरतरी और ख़िलाफ़त के हक़ के इक़रार के अलावा कोई रास्ता न रहा और यह मानना पड़ा कि अगर हम फ़रिश्ते ज़मीन पर अल्लाह के ख़लीफ़ा बनाए जाते तो कायनात के तमाम भेदों को जानते होते और क़ुदरत ने जो ख़वास और उलूम दिए हैं, उनसे एक साथ वाक़िफ़ होते, इसलिए कि हम न खाने-पीने के मुहताज हैं कि ज़मीन में दी गई रोज़ी और ख़ज़ानों की खोज करते, न मरज़ का ख़ौफ़ कि क़िस्म-क़िस्म की दवाओं, चीज़ों की ख़ासियतों, कीमियाई मिलावटों, तबई चीज़ों और आसमानी बातों

Copyright OfflineDeeniApp

के फ़ायदे, डाक्टरी ईजादों, नफ़्सानी और वज्दानी मालूमात और इसी तरह के बहुत से और क़ीमती उलूम व फ़ुनून के भेद और उसकी हिक्मतों को जान सकते। बेशक यह सिर्फ़ हज़रत इंसान के लिए मौजूं था कि वह ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा बने और उन तमाम हक़ाइक़, मआरिफ़ और उलूम व फ़ुनून से वाक़िफ़ होकर नियाबतो इलाही का सही हक़ अदा करे।

हज़रत आदम का जन्नत में ठहरना और हव्वा का ज़ौजा बनना

हज़रत आदम ﷺ एक मुद्दत तक अकेले ज़िंदगी बसर करते रहे मगर अपनी ज़िंदगी और राहत व सुकून में एक वहशत और ख़ला महसूस करते रहे थे और उनकी तबियत और फ़ितरत में किसी मूनिस व ग़मख़्वार की याद नज़र आती थी। चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत हव्वा को पैदा किया और हज़रत आदम 'अपना हमदम और साथी' पा कर बहुत ख़ुश हुए और दिल में इत्मीनान महसूस किया। हज़रत आदम व हव्वा को इजाज़त थी कि वे जन्नत में रहें-सहें और उसकी हर चीज़ से फ़ायदा उठाएं, मगर एक पेड़ को निशान-ज़द करके बता दिया गया कि उसको न खाएं, बल्कि उसके पास तक न जाएं।

आदम ﷺ का जन्नत से निकलना

अब इब्लीस को एक मौक़ा हाथ आया और उसने हज़रत आदम व हव्वा के दिल में यह वस्वसा डाला कि यह पेड़ जन्नत का पेड़ है। इसका फल खाना जन्नत में हमेशा आराम व सुकून और अल्लाह का क़ुर्ब पाने की ज़मानत देता है और क़स्में खाकर उनको बताया कि मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूं, दुश्मन नहीं हूं। यह सुनकर हज़रत आदम के इंसानी और बशरी ख़्वास में सबसे पहले निस्यान (भूल-चूक) ने ज़ुहूर किया और यह भुला बैठे कि अल्लाह का यह हुक्म ज़रूरी था, न कि रब की ओर से कोई मश्विरा। आख़िरकार जन्नत के हमेशा के क़ियाम और अल्लाह के क़ुर्ब के अ़ज़्म में लग़्ज़िश पैदा कर दी और उन्होंने उस पेड़ का फल खा लिया। उसका खाना था कि बशरी लवाज़िम (इंसानी ज़रूरतें) उभरने लगीं। देखा तो नंगे हैं और लिबास से महरूम। जल्द-जल्द आदम व

Copyright OfflineDeeniApp

हव्वा दोनों पत्तों से सतर ढांकने लगे—गोया इंसानी तमद्दुन की यह शुरूआत थी कि उसने ढांकने के लिए सबसे पहले पत्तों का इस्तेमाल किया।

इधर यह हो रहा था कि अल्लाह तआ़ला का इताब (ग़ज़ब) उतरा और आदम से पूछ-ताछ हुई कि मना करने के बावजूद यह हुक्म का न मानना क्यों? आदम आख़िर आदम थे, अल्लाह के दरबार के मक़्बूल थे, इसलिए शैतान की तरह मुनाज़रा नहीं किया और अपनी ग़लतियों को तावीलों के परदे में छुपाने की बेमतलब की कोशिश से बाज रहें। नदामत व शर्मसारी के साथ इक़रार किया कि ग़लती ज़रूर हुई लेकिन इसकी वजह तमर्रुद व सरकशी नहीं, बल्कि इंसान होने के नाते भूल-चूक इसकी वजह है, फिर भी ग़लती है, इसलिए तौबा व इस्तग़फ़ार करते हुए माफ़ कर दिए जाने की दरख़्वास्त करता हूं।

अल्लाह तआ़ला ने उनके इस उज्र को क़ुबूल फ़रमाया और माफ़ कर दिया, मगर वक़्त आ गया था कि हज़रत आदम ﷺ अल्लाह की ज़मीन पर 'ख़िलाफ़त का हक़' अदा करें, इसलिए हिक्मत के तक़ाज़े के तौर पर साथ ही यह फ़ैसला सुनाया कि तुमको और तुम्हारी औलाद को एक तय वक़्त तक ज़मीन पर क़ियाम करना होगा और तुम्हारा दुश्मन इब्लीस अदावत के अपने तमाम सामान के साथ वहां मौजूद रहेगा और तुमको इस तरह मलकूती और ताग़ूती दो टकराने वाली ताक़तों के दर्मियान ज़िंदगी बसर करनी होगी। इसके बावजूद अगर तुम और तुम्हारी औलाद मुख़्लिस और सच्चे बन्दे और सच्चे नायब साबित हुए तो तुम्हारा असल वतन 'जन्नत' हमेशा की तरह तुम्हारी मिल्कियत में दे दिया जाएगा, इसलिए तुम और हव्वा यहां से जाओ और मेरी ज़मीन पर बसो और अपनी मुक़र्रर की हुई ज़िंदगी तक उबूदियत का हक़ अदा करते रहो और इस तरह इंसानों के बाप और अल्लाह तआ़ला के ख़लीफ़ा आदम अ़लैहि० ने जीवन-साथी हज़रत हव्वा के साथ अल्लाह की ज़मीन पर क़दम रखा।

आदम ﷺ के ज़िक्र से मुताल्लिक़ क़ुरआनी आयतें

क़ुरआन मजीद में हज़रत आदम ﷺ का नाम 25 बार पचीस आयतों में आया है। और अंबिया ﷺ के तज़्किरों में सबसे पहला तज़्किरा अबुल

Copyright OfflineDeeniApp

बशर हज़रत आदम ﷺ का है जो नीचे लिखी सूरतों में बयान किया गया है—

सूरः बक़रः, आराफ़, इसरा, कह्फ़ और ताहा में नाम और सिफ़तों दोनों के साथ और सूरः हजर व साद में से सिर्फ़ सिफ़तों के ज़िक्र के साथ और आले इमरान मायदा और मरयम और यासीन में सिर्फ़ ज़िम्नी तौर पर नाम लिया गया है।

आदम के क़िस्से में कुछ अहम इबरतें (नसीहतें)

यों तो आदम ﷺ के वाक़िए में अनगिनत पंद और नसीहतों और मस्अलों का ज़ख़ीरा मौजूद है और उनका एहाता इस मक़ाम पर नामुम्किन है फिर भी कुछ अहम इबरतों की तरफ़ इशारा कर देना मुनासिब मालूम होता है।

1. अल्लाह तआ़ला की हिक्मतों के भेद अनगिनत और बेशुमार हैं और यह नामुम्किन है क कोई हस्ती, चाहे वह जितनी ही अल्लाह की बारगाह में मुक़र्रब हो, इन तमाम भेदों को जान जाए। इसीलिए अल्लाह के फ़रिश्ते इंतिहाई मुक़र्रब होने के बावजूद आदम ﷺ की ख़िलाफ़त की हिक्मत के जानकार न हो सके और जब तक मामले की सारी हकीक़त सामने न आ गई, वे हैरान व परेशान ही रहे।

2. अल्लाह तआ़ला की इनायत व तवज्जोह अगर किसी मामूली चीज़ की ओर भी हो जाए तो यह बड़े से बड़े मर्तबा और जलीलुलक़द्र मंसब पर पहुंच सकती है और शरफ़ व बुज़ुर्गी के ओहदे से नवाज़ी जा सकती है। ख़ाक की एक मुट्ठी को देखिए और फिर 'अल्लाह के ख़लीफ़ा' होने के मंसब पर नज़र डालिए और फिर उसके नुबुव्वत व रिसालत के मंसब पर नज़र डालिए, मगर उसकी तवज्जोह का फ़ैज़ान बख़्त व इत्तिफ़ाक़ की बदौलत या हिक्मत के बग़ैर नहीं होता, बल्कि उस चीज़ की इस्तेदाद के मुनासिब बेनज़ीर हिक्मतों और मस्लहतों के निज़ाम से जुड़ा होता है।

3. इंसान को अगरचे हर क़िस्म का शरफ़ मिला और हर तरह की बुज़ुर्गी और बडप्पन नसीब हुआ, फिर भी उसकी पैदाइशी और तबई कमज़ोरियां

Copyright OfflineDeeniApp

अपनी जगह उसी तरह क़ायम रहीं और बशर और इंसान होने की वह कमज़ोरी अपनी जगह बाक़ी रही। असल में यही वह चीज़ थी जिसने हज़रत आदम ﷺ पर इस बुज़ुर्गी और बड़े दर्जे के होते हुए ऐसी भूल लगा दी और वह इब्लीस के वस्वसे में आ गए।

4. ख़ताकार होने के बावजूद अगर इंसान का दिल शर्म और तौबा की तरफ़ माइल हो तो उसके लिए रहमत का दरवाज़ा बन्द नहीं है और उस बारगाह तक पहुंचने में नाउम्मीदी की अंधी घाटी नहीं पड़ती। अलबत्ता ख़ुलूस व सदाक़त शर्त है और जिस तरह हज़रत आदम ﷺ की भूल-चूक की माफ़ी उसी दामन से वाबस्ता है, उसी तरह उनकी तमाम नस्ल के लिए भी अफ़्व और दुनिया की रहमत का भारी-भरकम दामन फैला हुआ है। किसी आरिफ़ ने क्या ख़ूब कहा है–

बाज़ आ, बाज़ आ हर आंचे हस्ती बाज़ आ
गर काफ़िर व गब्र व बुतपरस्ती बाज़ आ।
ईं दर गहे मादर गहे नाउम्मीदी नीस्त
सद बार अगर तौबा शिकस्ती बाज़ आ।

अल्लाह के दरबार में गुस्ताख़ी या बग़ावत बड़ी-से-बड़ी नेकी और भलाई को भी तबाह कर देती है और हमेशा की ज़िल्लत व घाटे की वजह बन जाती है। इब्लीस का वाक़िया इबरतनाक वाक़िया है और उसकी हज़ारों साल की इबादतगुज़ारी का जो हश्र अल्लाह के दरबार में गुस्ताख़ी और बग़ावत की वजह से हुआ, वह सैंकड़ों बार इबरत हासिल करने की चीज़ है–

गया शैतान मारा एक सज्दे के न करने से
अगर लाखों बरस सज्दे में सर मारा तो क्या मारा।

पस इबरत हासिल करो, ऐ इबरत की आंख रखने वालो! कि किस तरह–

तकब्बुर अज़ाज़ील रा ख़्वार कर्द। बज़िंदाने लानत गिरफ़्तार कर्द।

हज़रत आदम ﷺ के क़िस्से से मुताल्लिक़ मसाअले

मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्युहारवी रह० ने हज़रत आदम के क़िस्से

Copyright OfflineDeeniApp

के तअ़ल्लुक से बारह मसअ़लों का ज़िक्र किया है, इनमें से ज़्यादातर की शक्ल सिर्फ़ इल्मी (Academic) है, यानी इनका ताल्लुक़ वाज़ व नसीहतों से नहीं है। इनमें से तीन मसअलों को बयान किया जाता है, क्योंकि इनका जानना पढ़ने वालों के लिए ज़रूरी है।

हज़रत हव्वा की पैदाइश किस तरह हुई?

(क) कुरआन मजीद में इसके बारे में सिर्फ़ इतना ही ज़िक्र है—

'और उस (नफ़्स) से इस जोड़े को पैदा किया।' (अन-निसा 4 : 1)

यह कुरआनी नज़्म हव्वा की पैदाइश की तफ़्सील नहीं बताती, इसलिए दोनों बातें हो सकती हैं—

एक यह कि हव्वा हज़रत आदम ﷺ की पसली से पैदा हुई हैं, जैसा कि मशहूर है और बाइबिल में भी इसी तरह ज़िक्र किया गया है।

दूसरे यह कि अल्लाह ने इंसानी नस्ल को इस तरह पैदा किया कि मर्द के साथ उसी की जिंस से एक दूसरी मख़्लूक़ भी बनाई, जिसको औरत कहा जाता है और जो मर्द की जीवन-साथी बनती है।

जहां तक पहली बात का ताल्लुक़ है तो बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायतों में भी ज़रूर आता है कि औरत पसली से पैदा हुई है। इसका मतलब मशहूर तह़क़ीक़ करने वाले और पारखी अल्लामा क़ुरतबी रह० ने यह बयान किया है कि असल में औरत की पैदाइश को पसली से तश्बीह (उपमा) दी गई है, यानी उसका हाल पसली ही की तरह है। अगर इसकी टेढ़ को सीधा करना चाहोगे तो वह टूट जाएगी, तो जिस तरह पसली के तिरछेपन के बावजूद उससे काम लिया जाता है और उसकी टेढ़ को दूर करने की कोशिश नहीं की जाती। उसी तरह औरतों के साथ नर्मी और मुलायमत का मामला करना चाहिए, वरना सख़्ती के बरताव से ख़ुशगवारी की जगह ताल्लुक़ के बिखरने-टूटने की शक्ल पैदा होगी।

मुख़्तसर यह कि ऊपर की आयत की तफ़्सीर में तह़क़ीक़ करने वालों की राय उस दूसरी तफ़्सीर की ओर माइल है, जिसका हासिल यह है कि

Copyright OfflineDeeniApp

क़ुरआन अज़ीज़ सिर्फ़ हव्वा की तख़्लीक़ का ज़िक्र नहीं कर रहा है, बल्कि 'औरत की पैदाइश' के बारे में यह हक़ीक़त भी बताता है कि वह भी मर्द ही की जिंस से है और इसी तरह मख़्लूक़ हुई है।

(ख) हज़रत आदम ﷺ जबकि नबी हैं, तो उनसे अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी का क्या मतलब? नबी तो मासूम होता है और 'इस्मत' नाफ़रमानी और गुनाह की ज़िद (उलट) है?

इस मसअले के वाज़ेह करने से पहले थोड़े से लफ़्ज़ों में 'इस्मत' (बे-गुनाह) के मानी और उसका मतलब बयान किया जाता है।

नबियों की इस्मत का मतलब

कायनात के पैदा करने वाले ने इंसान की तख़्लीक़ एक दूसरे की ज़िद्द ताक़तों के साथ फ़रमाई है, यानी उसको नेक व बद दोनों क़िस्म की ताक़तें दी गई हैं। वह गुनाह भी कर सकता है और नेकी भी; वह बुराई का इरादा भी रखता है और ख़ैर का इरादा भी; और यही उसके इंसानी शरफ़ की ख़ास बात है। इन टकराने वाली ताक़तों के रखने वाले 'इंसान' में से अल्लाह तआ़ला इंसानी रुश्द व हिदायत और अल्लाह से मिलने के लिए कभी-कभी किसी आदमी को चुन लेते और उसको अपना रसूल, नबी और पैग़म्बर बना लेते हैं। इस सिलसिले की आख़िरी कड़ी ज़ाते अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं। जब यह हस्ती 'नुबूवत' के लिए चुन ली जाती है तो उसके लिए यह ज़रूरी है कि वह अ़मल और इरादे की ज़िंदगी में हर क़िस्म के गुनाह से पाक और हर तरह की नाफ़रमानियों से दूर हो, ताकि पैग़ामे इलाही के मंसब में अल्लाह की सही नियाबत कर सके। इस तरह वह एक इंसान और बशर भी है। खाता है, पीता है, सोता है, बाल-बच्चों की ज़िंदगी से भी जुड़ा हुआ है और वह हर क़िस्म के अ़मली और इरादी गुनाहों से पाक भी है। क्योंकि वह हर क़िस्म की नेकी के लिए हादी व मुर्शिद और अल्लाह का नायब है और अगरचे वह दूसरे इंसान की तरह एक दूसरे की ज़िद ताक़तों का रखने वाला ज़रूर है, लेकिल अ़मल और इरादे में उससे हर क़िस्म के बदी के ज़ाहिर होने को नामुम्किन और मुहाल कर गया दिया है, ताकि उसका हर

Copyright OfflineDeeniApp

एक इरादा, हर एक अ़मल और एक-एक क़ौल व ग़रज़, हर एक हरकत व सुकून, कायनात के लिए उस्वा और नमूना बन सके।

अलबत्ता बशर और इंसान होने की वजह से भूल-चूक और लग़्ज़िश का इम्कान बाक़ी रहता है और कभी-कभी अ़मली शक्ल भी अख़्तियार कर लेता है, मगर फ़ौरन उस पर चेतावनी दे दी जाती है और वह उससे किनारापन अख़्तियार कर लेता है। भूल-चूक तो अपने मफ़हूम में ज़ाहिर है, लेकिन लग़्ज़िश एक ऐसी हक़ीक़त को कहते हैं जहां न अ़मल और किरदार में तमर्रुद और सरकशी का दख़ल हो और न क़स्द व इरादे के साथ हुक्म के ख़िलाफ़ चलने का और साथ ही वह अ़मल अपनी हक़ीक़त और माहियत के एतबार से बहुत बुरा और बेशर्मी न हो, बल्कि इन तमामों को सामने रखकर वह अपनी ज़ात में अगरचे इबाहत और जवाज़ का दर्जा रखता हो, मगर करने वाले की हस्ती की शान के मुताबिक़ न हो, बल्कि उसके भारी दर्जे के सामने सुबुक और हल्का नज़र आता हो। यह सब कुछ होते हुए इसलिए अ़मल में आ गया कि अ़मल करने वालों की निगाह में उसका इस तरह करना अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न था, लेकिन नबी पर चूंकि अल्लाह की मुस्तक़िल हिफ़ाज़त व निगरानी रहती है, इसलिए फ़ौरन उसको चेतावनी दे दी जाती है कि यह तुम्हारी जलालते क़द्र और रुत्बे की बुलन्दी की शान के ख़िलाफ़ है और क़तई ग़ैर-मुनासिब है। हक़ीक़त के इस मज्मूए का नाम नबियों की इस्मत है।

हज़रत आदम ﷺ की इस्मत

इस हक़ीक़त के वाज़ेह कर देने के बाद अब हज़रत आदम ﷺ के वाकिए पर ग़ौर किया जाता है, तो पता चलता है कि सूरः बक़रः में यह साफ़ कह दिया गया कि हज़रत आदम ﷺ की यह ग़लती न गुनाह थी और न नाफ़रमानी, बल्कि मामूली क़िस्म की लग़्ज़िश थी—

'शैतान ने इन दोनों से लग़्ज़िश करा दी।' (बक़रः 2 : 36)

और इसके बाद सूरः आराफ़ में फ़रमाया, *'शैतान ने इनको फ़ुसला दिया।'* (आराफ़ 7 : 20) बल्कि सूरः ताहा में इस लग़्ज़िश और वस्वसे की

Copyright OfflineDeeniApp

वजह ख़ुद ही बयान करके हज़रत आदम ﷺ को हर क़िस्म के इरादी और अ़मली गुनाह से पाक ज़ाहिर कर दिया—

'और बेशक हमने आदम से एक इक़रार लिया था, पस वह उसको भूल गया और हमने पक्के इरादे वाला नहीं पाया।' (ताहा 20 :116)

यह फ़रमाकर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम ﷺ की अस्मत के मस्अले को ज़्यादा-से-ज़्यादा मुहकम और मज़बूत बना दिया।

3. हज़रत आदम ﷺ के वाक़िए में 'मलिक' (फ़रिश्ता) और 'जिन्न' का ज़िक्र भी आया है। ये दोनों अल्लाह की मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं या सिर्फ़ दो क़ूवतों (ताक़तों) का नाम है जो 'मलूकूती क़ूवत' और 'शैतानी क़ूवत' के नाम से जाने जाते हैं।

फ़रिश्ता

क़ुरआन पाक और रसूल ﷺ की हदीसों ने जो कुछ हमको बताया है, उसका हासिल यह है कि हमको न 'फ़रिश्ता' की तख़्लीक़ी हक़ीक़त बताई गई है और न वे हमको नज़र आते हैं। अलबत्ता हमारे लिए यह यक़ीन व एतक़ाद ज़रूरी करार दिया गया है कि हम उनके वजूद को मान लें और उनको मुस्तक़िल मख़्लूक़ जानें।

जिन्न

इसी तरह 'जिन्न' भी अल्लाह तआ़ला की मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं जिनकी पैदाइश की हक़ीक़त को हम पूरी तरह नहीं जानते और न आम इंसानी आबादी की तरह वे हमको नज़र नहीं आते हैं। लेकिन क़ुरआन हकीम ने जो तफ़्सील इस मख़्लूक़ के बारे में बताई है, वह हमारे लिए ज़रूरी क़रार देती है कि हम यह एतक़ाद और यक़ीन रखें कि वे भी इंसान की तरह मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं और उसी की तरह शरीअत पर चलने को मजबूर भी। इनमें पैदा करने और बढ़ने का भी सिलसिला है और इनमें नेक और बद भी हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

इब्लीस या शैतान

कुरआन मजीद की आयतों से मालूम होता है कि शैतान भी 'जिन्न' ही की नस्ल से है और इब्लीस (शैतान) ने अल्लाह के सामने ख़ुद यह माना कि इसकी तख़्लीक़ (आग) से हुई है।

लेखक का इज़ाफ़ा

वाज़ व नसीहत के अलावा हज़रत आदम ﷺ का क़िस्सा इसलिए अहम है कि इससे इंसान की तख़्लीक़ के मक़्सद, धरती पर उसकी हैसियत और इस हैसियत की रोशनी में उनके अ़मल और कोशिशों के फैलाव पर रोशनी पड़ती है, जिसका ख़ुलासा यह है—

1. अल्लाह तआ़ला ने धरती पर इंसान को अपना ख़लीफ़ा बनाकर भेजा है जो उसकी क़ुदरत और तसर्रुफ़ और अख़्तियार को ज़ाहिर करता है और इस हैसियत से उसकी कोशिश और अ़मल उसके पैदा किए जाने का मक़्सद है।

2. अल्लाह की ख़िलाफ़त का मदार तस्बीह व तह्लील के ज़्यादा होने और तक़्दीस व तम्जीद पर नहीं, बल्कि 'इल्म' की सिफ़त पर है, जिसके बग़ैर दुन्यावी हुकूमत नामुम्किन है—

3. अल्लाह तआ़ला ने इंसान को 'चीज़ों का इल्म' अता फ़रमाया है और अपनी सबसे भारी-भरकम सिफ़त 'इल्म' से नवाज़ा है, जिसका वह पूरी तरह मज़्हर है।

4. इंसान की फ़रिश्ते पर बरतरी की वजह 'इल्म' की सिफ़त है, तस्बीह व तह्लील नहीं। किसी ने कहा और क्या ख़ूब कहा है—

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअ़त के लिए कुछ कम न थे कर्र व बयां।

अल्लामा इक़बाल के हज़रत आदम के जन्नत से रुख़्सत होने और ज़मीन पर तश्रीफ़ लाने के मनाज़िर को विचार-आंख से देखते हुए नज़्म (कविता) में पेश किया है। इन नज़्मों को ज़ौक़ वालों की दिलचस्पी के लिए नीचे लिखा जाता है—

Copyright OfflineDeeniApp

फरिश्ते आदम ﷺ को जन्नत से रुख़सत करते हैं

अता हुई है तुझे रोज़ व शब की बेताबी
ख़बर नहीं कि तू ख़ाकी है या कि सीमाबी
सुना है ख़ाक से तेरी नुमूद है लेकिन
तेरी सरिश्त में है कौकबी व महताबी
जमाल अपना अगर ख़्वाब में भी तू देखे
हज़ार होश से ख़ुश्तर तेरी शकर ख़्वाबी
गरांवहा है तेरा गिरया-ए-सहरगाही,
इसी से है तेरे नख़्ले कुहन की शादाबी
तेरी नवा से है बे-परदा ज़िंदगी का ज़मीर
कि तेरे साज़ की फ़ितरत ने की है मिज़राबी

रूहे अरज़ी आदम ﷺ का इस्तक़्बाल करती है

खोल आंख, ज़मीं देख, फ़लक देख, फ़ज़ा देख
मशरिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख!
इस जलवा-ए-वेपरदा को परदों में छुपा देख,
अय्यामे जुदाई के सितम देख, जफ़ा देख!
वेताव न हो, मा रका-ए-वीम व रज़ा देख।
है तेरे तसर्रुफ़ में ये बादल,ये घटाएं
यह गुंबदे अफ़लाक, ये ख़ामोश फ़ज़ाएं
यह कोह, यह सहरा, यह समुन्दर, ये हवाएं,
थीं पेशे नज़र कल तो फ़रिश्तों की अदाएं!
आईना-ए-अय्याम में आज अपनी अदा देख
समझेगा ज़माना तेरी आंखों के इशारे,
न देखेंगे तुझे दूर से गरदूं के सितारे
नावेद तेरे वहरे तख़य्युल के किनारे,
पहुंचेंगे फ़लक तक तेरी आंखों के शरारे
तामीर ख़ुदी कर असरे आहे रसा देख

Maktab-e-Ash...af
Copyright OfflineDeeniApp

क़ाबील व हाबील

कुरआन मजीद ने हज़रत आदम ﷺ के इन दोनों बेटों का नाम ज़िक्र नहीं किया सिर्फ़ 'आदम के दो बेटे' कहकर मुज्मल छोड़ दिया है, अलबत्ता तौरात में उनके नाम बयान किए गए हैं। कुछ रिवायतों में इन दोनों भाइयों में अपनी शादियों से मुताल्लिक़ ज़बरदस्त इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र किया गया है। इस मामले को ख़त्म करने के लिए हज़रत आदम ने यह फ़ैसला फ़रमाया कि दोनों अपनी-अपनी कुरबानी अल्लाह के हुज़ूर में पेश करें। जिसकी क़ुर्बानी मंज़ूर हो जाए, वही अपने इरादे के पूरा कर लेने का हक़दार है।

जैसा कि तौरात से मालूम होता है, उस ज़माने में क़ुर्बानी के क़ुबूल होने का यह इलहामी तरीक़ा था कि नज़्र व क़ुर्बानी की चीज़ किसी बुलन्द जगह पर रख दी जाती और आसमान से आग ज़ाहिर होकर उसको जला देती थी। इस क़ानून के मुताबिक़ हाबील ने अपने रेवड़ में से एक बेहतरीन दुंबा अल्लाह को नज़्र किया और क़ाबील ने अपनी खेती के ग़ल्ले में से रद्दी क़िस्म का ग़ल्ला क़ुरबानी के लिए पेश किया। दोनों की अच्छी और बुरी नीयतों का अन्दाज़ा इसी अ़मल से हो गया। इसीलिए दस्तूर के मुताबिक़ आग ने आकर हाबील की नज़्र को जला दिया और इस तरह कुरबानी क़ुबूल होने का शरफ़ उसके हिस्से में आया। क़ाबील अपनी इस तौहीन को किसी तरह बर्दाश्त न कर सका और उसने ग़ैज़ व ग़ज़ब में आकर हबील से कहा कि मैं तुझको क़त्ल किए बग़ैर न छोड़ूंगा, ताकि तू अपनी मुराद को न पहुंच सके।

हाबील ने जवाब दियाः मैं तो किसी तरह तुझ पर हाथ न उठाऊंगा, बाक़ी तेरी जो मर्ज़ी आए, वह कर। रहा क़ुरबानी का मामला, सो अल्लाह के यहां नेक नीयत ही की नज़्र क़ुबूल हो सकती है। वहां बद-नीयत की न धमकी काम आ सकती है और न बेवजह ग़म व ग़ुस्सा और इस पर क़ाबील ने ग़ुस्से से बहुत ज़्यादा भड़क कर अपने भाई हाबील को मार डाला। क़ुरआन पाक में न शादी से मुताल्लिक़ इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र है और न इन दोनों के नामों का ज़िक्र है, सिर्फ़ क़ुरबानी (नज़्र) का ज़िक्र है और इस रिवायत से ज़्यादा हाबील की लाश के दफ़न से मुताल्लिक़ यह इज़ाफ़ा है।

Copyright OfflineDeeniApp

क़त्ल के बाद क़ाबील हैरान था कि इस लाश का क्या करे? अभी तक आदम की नस्ल मौत से दोचार नहीं हुई थी और इसीलिए हज़रत आदम ﷺ ने मुर्दे के बारे में अल्लाह का कोई हुक्म नहीं सुनाया था। यकायक उसने देखा कि एक कौवे ने ज़मीन कुरेद-कुरेद कर गढ़ा खोदा। क़ाबील इसे देखकर चेता कि मुझे भी अपने भाई के लिए इसी तरह गढ़ा खोदना चाहिए और कुछ रिवायतों में है कि कौवे ने दूसरे मुर्दे कौवे को उस गढ़े में छुपा दिया।

क़ाबील ने यह देखा तो अपनी नाकारा ज़िंदगी पर बेहद अफ़सोस किया और कहने लगा कि मैं इस जानवर से भी गया गुज़रा हो गया कि अपने इस जुर्म को छुपाने की भी अहलियत नहीं रखता। शर्मिंदगी और अफ़सोस से सर झुका लिया और फिर उसी तरह अपने भाई की लाश को मिट्टी के हवाले कर दिया। इस वाक़िए के बयान के वाद क़ुरआन पाक में आता है कि—

'इसी वजह से लिखा हमने वनी इसराईल पर कि जो कोई क़त्ल करे एक जान को विला एवज़ जान के, या फ़साद करने की ग़रज़ से तो गोया क़त्ल कर डाला उन सव लोगों को और जिसने ज़िंदा रखा एक जान को तो गोया ज़िंदा कर दिया सव लोगों को। (सूरा माइदा 5 : 32)

इमाम अहमद ने अपनी मुस्नद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ؓ से एक रिवायत की है—

'अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में जव भी कोई ज़ुल्म से क़त्ल होता है तो उसका गुनाह हज़रत आदम ﷺ के पहले वेटे (क़ावील) की गरदन पर ज़रूर होता है, इसलिए कि वह पहला आदमी है, जिसने ज़ालिमाना क़त्ल की शुरूआत की और यह नापाक सुन्नत जारी की।'

इवरत की जगह

सूरः माइदा की ज़िक्र की गई आयत और ऊपर लिखी हदीस हम पर यह हक़ीक़त ज़ाहिर करती है कि इंसान को अपनी ज़िंदगी में हरगिज़ किसी गुनाह की ईजाद न करनी चाहिए, क्योंकि कायनात में जो आदमी भी आगे

Copyright OfflineDeeniApp

इस 'बिदअत' (नए काम) का इक़दाम करेगा, तो बिदअत की बुनियाद रखने वाला भी बराबर उस गुनाह का हिस्सेदार बनता रहेगा और ईजाद करने वाला होने की वजह से हमेशा वाली ज़िल्लत और घाटे का हक़दार ठहरेगा। *(नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक)*

(हज़रत आदम ﷺ के इन दो बेटों का ज़िक्र सूराः माइदा में किया गया है।)

नोट : मुसन्निफ़ (लेखक) की तर्तीब के मुताबिक़ हज़रत आदम ﷺ के तज़्किरे के बाद हज़रत नूह ﷺ का ज़िक्र किया जाता है।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पहले रसूल हैं

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद यह पहले नबी हैं जिनको रिसालत अ़ता की गई। सहीह मुस्लिम बाबे शफ़ाअत में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत में यह आया है कि–

'ऐ नूह! तू जमीन पर सबसे पहला रसूल बनाया गया।'

नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम, दावत व तब्लीग़ और क़ौम की नाफ़रमानी

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के नबी बनाए जाने से पहले तमाम क़ौम अल्लाह की तौहीद और सही मज़हबी रोशनी से पूरी तरह अनजान बन चुकी थी और हक़ीक़ी माबूद की जगह ख़ुद के गढ़े हुए बुतों ने ले ली थी। ग़ैरुल्लाह और बुतों की पूजा उनका शिआ़र था। आखिर अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ उनके रुश्द व हिदायत के लिए भी उन ही में से एक हादी और अल्लाह के सच्चे रसूल नूह अलैहिस्सलाम को मबूऊस किया गया। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को राहे हक़ की तरफ़ पुकारा और सच्चे मज़हब की दावत दी लेकिन क़ौम ने न माना और नफ़रत व हक़ारत के साथ इंकार पर इसरार किया। क़ौम के अमीरों और सरदारों ने उनके झुठलाने और उन्हें ज़लील करने का कोई पहलू न छोड़ा और उनके (अमीरों और सरदारों के मानने वालों ने उन्हीं की तक़लीद और पैरवी के सबूत में हर क़िस्म के तज़लील व तौहीन के तरीक़ों को हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पर आज़माया। उन्होंने इस बात पर ताज्जुब ज़ाहिर किया कि जिसको न हम पर धन-दौलत में बरतरी हासिल है और न वह इंसानियत के रुत्बे से बुलन्द 'फ़रिश्ता हैकल' है, उसको क्या हक़ है कि वह हमारा पेशवा बने और हम उसके हुक्मों को मानें?

वे क़ौम के ग़रीब और कमज़ोर लागों को जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पीछे

Copyright OfflineDeeniApp

चलने वाले और पैरवी करने वाले देखते तो घमंड भरे अन्दाज़ में ज़लील समझ कर कहते, 'हम इनकी तरह हैं कि तेरे फ़रमान पर चलने लगें और तुझको अपना सरदार मान लें कि जिसकी पैरवी की जाए।' वे समझते थे कि कमज़ोर और पस्त लोग नूह ﷺ के अंधे मुक़ल्लिद हैं, न इनके पास कोई समझ है कि हमारी तरह अपनी जांची, परखी राय से काम लेते और न इतना शऊर है कि हक़ीक़ते हाल को समझ लेते और अगर वे हज़रत नूह ﷺ की बात की तरफ कभी तवज्जोह भी देते, तो उनसे इसरार करते कि पहले इन क़ौम के पस्त और ग़रीब लोगों को अपने पास से निकाल दे, तब हम तेरी बात सुनेंगे, क्योंकि हमको इनसे घिन आती है और हम और ये एक जगह नहीं बैठ सकते।

हज़रत नूह ﷺ इसका एक ही जवाब देते कि ऐसा कभी न होगा, क्योंकि ये अल्लाह के मुख़्लिस बन्दे हैं अगर मैं इनके साथ ऐसा मामला करूं जिसकी तुम ख़्वाहिश रखते हो, तो अल्लाह के अज़ाब से मेरे लिए कोई पनागाह नहीं है। मै उसके दर्दनाक अज़ाब से डरता हूं। उसके यहां इख़्लास की क़द्र है। अमीर व ग़रीब का वहां कोई सवाल नहीं है। साथ ही इर्शाद फ़रमाते कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह की हिदायत का पैग़ाम लेकर आया हूं, न मैं ने ग़ैबदानी का दावा किया है और न फ़रिश्ता होने का। अल्लाह का बरगज़ीदा पैग़म्बर और रसूल हूं और दावत व इर्शाद मेरा मक़्सद और नस्बुलऐन है। उसको सरमायादाराना बुलन्दी, ग़ैबदानी या फ़रिश्ता हैकल होने से क्या वास्ता? क़ौम के ये कमज़ोर और ग़रीब लोग, जो अल्लाह पर सच्चे दिल से ईमान लाए हैं, तुम्हारी निगाह में इसलिए हक़ीर व ज़लील हैं कि वे तुम्हारी तरह धन-दौलत वाले नहीं हैं और इसीलिए तुम्हारे ख़्याल में ये न ख़ैर हासिल कर सकते हैं और न सआदत, क्योंकि ये दोनों चीज़ें दौलत व हश्मत के साथ हैं, न कि ग़रीबी और इफ़्लास के साथ।

सो वाज़ेह रहे कि अल्लाह की सआदत व ख़ैर का क़ानून ज़ाहिरी दौलत व हश्मत के ताबे नहीं है और न उसके यहां सआदत और हिदायत का हासिल करना और पाना सरमाए की रौनक़ के असर में है, बल्कि इसके ख़िलाफ़ नफ़्स का इत्मीनान, अल्लाह की रिज़ा, क़ल्ब का ग़िना और नीयत व अमल के इख़्लास पर मौक़ूफ़ है।

Copyright OfflineDeeniApp

बार-बार तंबीह की कि मुझे अपनी दावत पहुंचाने में और हिदायत के रास्ते पर लगाने में न तुम्हारे माल की ख़्वाहिश है, न जाह व मंसब की, मैं उजरत का तलबगार भी नहीं हूं। इस ख़िलाफ़त का हक़ीक़ी अज्र व सवाब अल्लाह तआ़ला के हाथ में है और वही बेहतरीन क़द्र करने वाला है।

बहरहाल हज़रत नूह ﷺ ने इंतिहाई कोशिश की कि बदबख़्त क़ौम समझ जाए और अल्लाह की रहमतों की पनाह में आ जाए, मगर क़ौम ने न माना और जितना इस ओर से हक़ की तब्लीग़ में जद्दोजेहद हुई, उसी क़दर क़ौम की ओर से बुग़्ज़ और दुश्मनी में सरगर्मी ज़ाहिर की गई और तक्लीफ़ पहुंचाने और चोट देने के तमाम तरीक़ों का इस्तेमाल किया गया और उनके बड़ों ने आम लोगों से साफ़-साफ़ कह दिया कि तुम किसी तरह वुद्द, सुवाअ, यग़ूस और नस्र जैसे बुतों की पूजा को न छोड़ो और आख़िर में तंग आकर कहने लगे—

'ऐ नूह! तूने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा किया, अब उसको ख़त्म कर और जो तूने हमसे (अल्लाह के अ़ज़ाब) का वायदा किया है, वह ले आ।'

(हूद 11 : 32)

हज़रत नूह ﷺ ने यह सुनकर जवाब दिया—

'नूह ने कहा, ज़रूर, अगर अल्लाह चाहेगा तो उस अ़ज़ाब को भी ले आएगा और तुम उसको थका देने वाले नहीं हो।' (हूद 11 : 33)

इस तरह जब क़ौम की हिदायत से पहले हज़रत नूह ﷺ बिल्कुल मायूस हो गए और उसकी बातिलपरस्ती, ज़िद्द और हठधर्मी उन पर वाज़ेह हो गई और क़ुरआन के मुताबिक़ साढ़े नौ सौ साल तक बराबर की जा रही दावत व तब्लीग़ का उन पर कोई असर नहीं देखा गया तो बहुत ज़्यादा मलूल और परेशान-ख़ातिर हुए, तब अल्लाह तआ़ला ने उनको तसल्ली के लिए फ़रमाया—

'और नूह पर वह्य की गई कि जो ईमान ले आए, वह ले आए, अब इनमें से कोई ईमान लाने वाला नहीं है, पस उनकी हरकतों पर ग़म न कर।'

(हूद 11 : 36)

तब हज़रत नूह ﷺ को यह मालूम हो गया कि उनके हक़ पहुंचाने में

Copyright OfflineDeeniApp

कोताही नहीं है, बल्कि ख़ुद न मानने वालों की इस्तेदाद का क़सूर है और उनकी सरकशी का नतीजा। तब उन के आमाल और हरकतों का असर क़ुबूल करके अल्लाह तआ़ला की दरगाह में यह दुआ़ फ़रमाई–

'ऐ परवरदिगार! तू काफ़िरों में से किसी को भी ज़मीन में बाक़ी न छोड़। अगर तू उनको यों ही छोड़ देगा तो ये तेरे बन्दों को भी गुमराह करेंगे और उनकी नस्ल भी उन्हीं की तरह नाफ़रमान पैदा होगी।' (नूह 71 : 27)

नाव की बुनियाद

अल्लाह ने हज़रत नूह ﷺ की दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई और बदले के क़ानून और आमाल के मुताबिक़ सरकशों की सरकशी और मुतमर्रिदों के तमर्रुद का एलान कर दिया और पेशगी ही कोई मस्अला न बने, पहले हज़रत नूह ﷺ को हिदायत फ़रमाई कि वह एक नाव तैयार करें, ताकि ज़ाहिरी अस्बाब के एतबार से वह और पक्के मोमिन उस अज़ाब से बचे रहें, जो अल्लाह के नाफ़रमानों पर नाज़िल होने वाला है।

हज़रत नूह ﷺ ने जब नाव बनानी शुरू की, तो कुफ़्फ़ार ने हँसी उड़ाना और मज़ाक़ बनाना शुरू कर दिया और जब कभी उधर से उनका गुज़र होता तो कहते कि 'ख़ूब! जब हम डूबने लगें तो तुम और तुम्हारे पीछे चलने वाले इस नाव में महफ़ूज़ रहकर नजात पा जाएंगे। कैसा मूर्खता वाला ख़्याल है?'

हज़रत नूह ﷺ भी उनको अंजामेकार से ग़फ़लत और अल्लाह की नाफ़रमानी पर जुरात देखकर उन ही के ढंग से जवाब देते और अपने काम में लगे रहते, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने पहले ही उनकी हक़ीक़ते हाल को बता दिया था।

'ऐ नूह! तू हमारी हिफ़ाज़त में हमारी वह्य के मुताबिक़ नाव तैयार किए जा और अब मुझसे उनसे मुताल्लिक़ कुछ सवाल न हो। ये बेशक डूबने वाले हैं।' (हूद 11 : 37)

आख़िर नूह की नाव बनकर तैयार हो गई अब अल्लाह के वायदे (अज़ाब) का वक़्त क़रीब आया; और हज़रत नूह ﷺ ने उनकी पहली निशानी को देखा, जिसका ज़िक्र उनसे किया गया था, यानी धरती के नीचे से पानी

Copyright OfflineDeeniApp

का चश्मा उबलना शुरू हुआ, तब अल्लाह की वह्य ने उनको हुक्म सुनाया कि नाव में अपने खानदान वालों को बैठने का हुक्म दो और तमाम जानदारों में से हर एक का एक जोड़ा नाव में पनाह ले और छोटी जमाअत (लगभग चालीस लोग) भी, जो तुम पर ईमान ला चुकी है, नाव में सवार हो जाए। जब अल्लाह की वह्य की तामील की गई तो अब आसमान को हुक्म हुआ कि पानी बरसना शुरू हो और धरती के सोतों को हुक्म दिया गया कि वे पूरी तरह उबल पड़ें। अल्लाह के हुक्म से जब यह सब कुछ होता रहा, तो नाव भी उसकी हिफ़ाज़त में पानी पर एक मुद्दत तक तैरती रही, यहां तक कि तमाम इंकार करने वाले और दुश्मन डूब गए और अल्लाह तआ़ला के क़ानून 'जज़ा व आमाल' के मुताबिक़ अपने किए को पहुंच गए।

जूदी पहाड़ (अ़ज़ाब का ख़त्म होना)

ग़रज़ जब अल्लाह के हुक्म से अ़ज़ाब ख़त्म हुआ तो नूह ﷺ की नाव जूदी पर ठहर गई–

तर्जुमा– *'और हुक्म पूरा हुआ आर नाव जूदी पर जा ठहरी और एलान कर दिया गया कि ज़ुल्म करने वाली क़ौम के लिए हलाकत है।'* (हूद 44)

पानी धीरे-धीरे सूखना शुरू हो गया और नाव में पनाह लेने वालों ने दूसरी बार अम्न व सलामती के साथ अल्लाह की धरती पर क़दम रखा। इसी वजह से हज़रत नूह ﷺ का लक़ब 'अबुल बशर सानी' या 'आदमे सानी' (यानी इंसानों का दूसरा बाप) और शायद इसी एतबार से हदीस में उनको 'अव्वलुर्रुसुल' कहा गया। (जिस इंसान पर अल्लाह की वह्य नाज़िल होती है, वह 'नबी' और जिसको नई शरीअ़त भी अता की गई हो, वह 'रसूल' है। रसूल नबी भी होता है, मगर नबी का रसूल होना ज़रूरी नहीं।) जहां तक जूदी पहाड़ की जगह का ताल्लुक़ है, तो क़ुरआन ने सिर्फ़ उस जगह का तज़्किरा किया है, जहां नाव जाकर ठहरी थी अलबत्ता तौरात की शरह लिखने वालों का ख़्याल है कि जूदी पहाड़ के उस सिलसिले का नाम है जो अरारात और जॉर्जिया के पहाड़ी सिलसिले को आपस में मिलाता है।

Copyright OfflineDeeniApp

अहम नतीजे

1. हर इंसान अपने किरदार व अ़मल का ख़ुद ही जवाबदेह है, इसलिए बाप की बुज़ुर्गी बेटे की नाफ़रमानी का इलाज नहीं बन सकती और न बेटे की सआदत बाप की सरकशी का बदल हो सकती है। *'कुल्लुंय-यअ़मलु अला शाकिलतिही'* 'हर आदमी अपने-अपने ढंग पर काम करता है।'

2. बुरी सोहबत भयानक ज़हर से भी ज़्यादा बड़ी क़ातिल है और उसका फल व नतीजा ज़िल्लत व घाटा और तबाही के अलावा और कुछ नहीं है। इंसान के लिए जिस तरह नेकी ज़रूरी चीज़ है, उससे ज़्यादा नेक सोहबत ज़रूरी है और जिस तरह बदी से बचना उसकी ज़िंदगी की नुमायां ख़ास बात है, उससे कहीं ज़्यादा बुरों की सोहबत से ख़ुद को बचाना ज़रूरी है—

सोहबते सालेह तुरा सालेह कुनद, सोहबते तालेह तुरा तालेकुनुद

(सादी)

सगे अस्हाबे कह्फ़ रोज़े चंद प-ए-नेकां गिरफ़्त मर्दुम शुद (सादी)

3. अल्लाह पर सही एतमाद और भरोसे के साथ ज़ाहिर अस्बाब का इस्तेमाल तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं है, बल्कि तवक्कुल अलल्लाहि के लिए सही तरीक़ा-ए-कार है, तभी तो नूह ﷺ के तूफ़ान से बचने के लिए कश्ती ज़रूरी ठहरी—

कोशिश में शर्ते इब्तिदा इंसान से,
फिर चाहिए दुआ यज़दान से,
जब तक कि न काम दस्त व बाज़ू से लिया
पाई न नजात नूह ने तूफ़ान से।

4. अंबिया ﷺ से 'पैग़म्बरे ख़ुदा और मासूम होने के बावजूद', बशर होने के तक़ाज़े की शक्ल में लग़्ज़िश हो सकती है, मगर वे उस पर क़ायम नहीं रह सकते, बल्कि अल्लाह की तरफ़ से उनको तंबीह कर दी जाती है और उससे हटा लिया जाता है साथ ही वे आलिमुल ग़ैब (ग़ैब को जानने वाले) भी नहीं होते, जैसा कि हज़रत नूह ﷺ के वाक़िए से अच्छी तरह ज़ाहिर है।

5. अगरचे अ़मल के बदले का ख़ुदाई क़ानून कायनात के हर हिस्से में अपना काम कर रहा है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि हर जुर्म और हर ताअत

Maktabe Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

का सज़ा या जज़ा इसा दुनया में मिल जाए, क्योंकि यह कायनात अ़मल की खेती है, किरदार के बदले के लिए मआद और आख़िरत की दुनिया को ख़ास किया गया है, फिर भी ज़ुल्म और घमंड इन दो बदआमालियों की सज़ा किसी न किसी अन्दाज़ से यहां दुनिया में भी ज़रूर मिलती है।

क़ौल

इमाम अबू हनीफ़ा रह० फ़रमाया करते थे कि ज़ालिम और घमंडी अपनी मौत से पहले ही अपने ज़ुल्म और किब्र की कुछ न कुछ सज़ा ज़रूर पाता है और ज़िल्लत और नामुरादी का मुंह देखता है। चुनांचे अल्लाह के सच्चे पैग़म्बरों से उलझने वाली क़ौमों और तारीख़ की ज़ालिम और घमंडी हस्तियों की इबरतनाक हलाकत और बरबादी की दास्तानें इस दावे की बेहतरीन दलील हैं।

नह ﷺ के तूफ़ान से मुताल्लिक़ कुछ अहम बातें

नूह ﷺ का बेटा

तारीख़ के माहिरों ने हज़रत नूह ﷺ के इस बेटे का नाम कनआन बताया है, यह तौरात की रिवायत के मुताबिक़ है। क़ुरआन उसका नाम बताने से ख़ामोश है, जो नफ़्से वाक़िया के लिए ग़ैर ज़रूरी था अलबत्ता हज़रत नूह ﷺ का उस बेटे से ख़िताब और उसके जवाब का ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—*'कहा, मैं बहुत जल्द किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं कि वह मुझको डूबने से बचा लेगा।'* (हूद-43)

लेकिन कुछ उलेमा ने हज़रत नूह के इस बेटे के मुताल्लिक़ यह कहा है कि यह सगा बेटा न था और फिर इस बारे में दो अलग-अलग दावे किए हैं। एक जमाअत कहती है कि वह 'रबीब' था (यानी हज़रत नूह ﷺ की बीवी के पहले शौहर का लड़का था) जो हज़रत नूह ﷺ से निकाह के बाद उनकी गोद में पला था और दूसरी जमाअत हज़रत नूह ﷺ की काफ़िर बीवी पर अस्मत व आबरू में ख़ियानत का इलज़ाम लगाती है। इन उलमा को इन ग़ैर

Copyright OfflineDeeniApp

सनद याफ़्ता और दूर की कौड़ी लाने की ज़रूरत इसलिए पेश आई कि इनके ख़्याल में पैग़म्बर का बेटा काफ़िर हो, यह बहुत दूर की बात और अजीब मालूम होती है जबकि हक़ीक़त यह है कि नबी और पैग़म्बर का काम फ़क़त रुश्द व हिदायत का पैग़ाम पहुंचाना है। औलाद, बीवी, ख़ानदान, क़बीला और क़ौम पर उसको ज़बरदस्ती चस्पां करना और उनके दिलों को पलट देना नहीं है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—

'तू उन (काफ़िरों पर) मुसल्लत नहीं किया गया।'

(अल-ग़ाशिया 28 : 32)

'और तू उनको हक़ के क़ुबूल करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।'

(क़ाफ़ 55 : 45)

बहरहाल सही यही है कि कनआन हज़रत नूह का बेटा था, मगर उस पर हज़रत नूह ﷺ की हिदायत व रुश्द की जगह अपनी काफ़िर वालिदा की तर्बियत की गोद ने और ख़ानदान और क़ौम के माहौल ने बुरा असर डाला और वह नबी का बेटा होने के बावजूद काफ़िर ही रहा। असल में—

पिसरे नूह बाबदां नशिस्त खानदाने बनू तश गुम शद!

नूह ﷺ का तूफ़ान आम था या ख़ास

क्या नूह का तूफ़ान पूरी दुनिया में आया था या किसी ख़ास ख़ित्ते पर, इसके बारे में पुराने और नए उलेमा में हमेशा से दो राएं रही हैं। यही सूरत यहूदी और ईसाई उलेमा, फ़लकियात के इल्म के और तबक़ातुल-अर्ज़ के माहिरों की है। एक तबक़े का ख़्याल है कि यह सिर्फ़ उसी ख़ित्ते में महदूद था, जहां हज़रत नूह ﷺ की क़ौम आबाद थी और यह हलक़ा फैलाव के एतवार से एक लाख चालीस हज़ार मुरब्बा किलो मीटर होता है, लेकिन सही मस्लक यही है कि तूफ़ान ख़ास था, आम न था, अलबत्ता क़ुरआन मजीद ने अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ सिर्फ़ उन्हीं तफ़्सीलों पर तवज्जोह की है, जो नसीहत के लिए और सबक़ हासिल करने के लिए ज़रूरी थीं। वह तो सिर्फ़ यह बताना चाहता है कि तारीख़ का यह वाक़िया सोचने-समझने वालों को भुलाना न चाहिए कि हज़ारों साल पहले एक क़ौम ने अल्लाह की नाफ़रमानी

Copyright OfflineDeeniApp

पर इसरार किया और उसके भेजे हुए हादी हज़रत नूह ﷺ के सबक़ व हिदायत के पैग़ाम को झुठलाया, ठुकराया और मानने से इन्कार कर दिया, तो अल्लाह ने अपनी क़ुदरत का मुज़हारा किया और ऐसे सरकशों और मुतमर्रिदों को हवा-बारिश के तूफ़ान में ग़र्क़ कर दिया और इसी हालत में हज़रत नूह ﷺ और थोड़े से लोगों की ईमानदार जमाअत को महफ़ूज़ रखकर कर नजात दी।

'इन-न फ़ी ज़ालि-क ल-इबरतल्लि उलिलअलबाब''

हज़रत नूह ﷺ की उम्र

क़ुरआन मजीद ने साफ़ कहा है कि हज़रत नूह ने अपनी क़ौम में साढ़े नौ सौ साल तब्लीग़ व दावत का फ़र्ज़ अंजाम दिया।

तर्जुमा–*''और बिला शुबहा हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा, पस वह रहा उनमें पचास कम एक हज़ार साल।''*

(अंकबूत 27 : 14)

यह उम्र मौजूदा तबई उम्र के एतबार से अक़्ल से परे मालूम होती है, लेकिन मुहाल और नामुम्किन नहीं है, इसलिए कि कायनात के शुरू के दिनों में ग़मों, फ़िक्रों और मरज़ों की यह बहुतात नहीं थी, साथ ही पुरानी तारीख़ भी मानती है कि कुछ हज़ार साल पहले की तबई उम्र का तनासुब मौजूदा तनासुब से बहुत ज़्यादा था। हज़रत नूह ﷺ की तवई उम्र का मामला भी इसी क़िस्म के इस्तिस्ना (अपवाद) में से समझना चाहिए जो अंबिया ﷺ की तरीख़ में अल्लाह की आयत और उसकी निशानी की फेहरिस्त में गिनी जाती है और जिनकी हिक्मत व ग़ायत का मामला ख़ुद अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द है। हक़ और सही मस्लक यही है और इस मुद्दत को घटाने के लिए दूर-दूर की तावीलें करने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं।

क़ुरआन मजीद में हज़रत नूह ﷺ का ज़िक्र अठाईस सूरतों में तैंतालीस जगह आया है।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम

हज़रत इदरीस का ज़िक्र क़ुरआन में सिर्फ़ दो जगह आया है— सूरः मरयम में और सूरः अंबिया में।

तर्जुमा—*'और याद करो क़ुरआन में इदरीस को, बिला शुब्हा वह सच्चे नबी थे और बुलन्द किया है हमने उनका मुक़ाम।'* (मरयम 19 : 56)

तर्जुमा—*और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल, इनमें से हर एक था सब्र करने वाला।* (अंबिया 21 : 85)

नाम-नसब और ज़माना

हज़रत इदरीस के नाम-नसब और ज़माने के बारे में तारीख़ लिखने वालों को सख़्त इख़्तिलाफ़ है और तमाम इख़्तिलाफ़ी वजहों को सामने रखने के बाद भी कोई आख़िरी या तरजीह देने वाली राय क़ायम नहीं की जा सकती। वजह यह है कि क़ुरआन करीम ने तो रुश्द व हिदायत के अपने मक़्सद के पेशे नज़र, तारीख़ी बहस से जुदा होकर सिर्फ़ उनकी नुबूवत के रुत्बे की बुलन्दी और उनकी ऊंची सिफ़तों का ज़िक्र किया है और इसी तरह हदीस की रिवायतें भी इससे आगे नहीं जातीं। इसलिए इस सिलसिले में जो कुछ भी है, वे इसराईली रिवायतें हैं और वे भी आपसी टकराव और इख़्तिलाफ़ से भरी हुई हैं। (इसीलिए थोड़े में लिखने के पेशेनज़र इन दूर-दराज़ से लाई गई बहसों से बचने की कोशिश की जा रही है)

एक जमाअत का यह ख़्याल है कि हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम बाबिल में पैदा हुए और वहीं पले-बढ़े। उम्र के शुरूआती दिनों में उन्होंने हज़रत शीस बिन आदम अलैहिस्सलाम से इल्म हासिल किया। बहरहाल जब इदरीस अलैहिस्सलाम ख़ुद से सोचने-समझने की उम्र को पहुंचे तो अल्लाह ने उनको नुबूवत से सरफ़राज़ फ़रमाया तब उन्हान शरीरों (बदमाशों) और फ़सादियों के राहे हिदायत की तबलीग़ शुरू की, पर फ़सादियों ने उनकी एक बात न सुनी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम व शीस अलैहिस्सलाम की शरीअत के मुख़ालिफ़ ही रहे, अलबत्ता एक छोटी-सी

Copyright OnlineDeenApp

जमाअत ज़रूर मुसलमान हो गई।

हज़रत इदरीस ﷺ ने जब यह रंग देखा तो वहां से हिजरत का इरादा किया और अपने मानने वालों को हिजरत कर जाने के लिए कहा। इदरीस ﷺ की पैरवी करने वालों ने जब यह सुना तो उनको वतन का छोड़ना बहुत गरां गुज़रा और कहने लगे कि बाबिल जैसा वतन हमको कहां नसीब हो सकता है? हज़रत इदरीस ﷺ ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि अगर तुम यह तक्लीफ़ अल्लाह के रास्ते में उठाते हो, तो उसकी रहमत बहुत फैली हुई है, उसका अच्छा बदला ज़रूर देगा, पस हिम्मत न हारो और अल्लाह के हुक्म के आगे सरे नियाज़ झुका दो।

मुसलमानों की रज़ामंदी के बाद हज़रत इदरीस और उनकी जमाअत मिस्र की तरफ़ हिज़रत कर गई और नील के किनारे एक अच्छी जगह चुनकर के सकूनत अपना ली। हज़रत इदरीस और उनकी पैरवी करने वाली जमाअत ने पैग़ामे इलाही और भलाई का हुक्म देने और बुराई रोकने वाले का फ़र्ज़ अंजाम देना शुरू कर दिया। कहा जाता है कि उनके ज़माने में बहत्तर जुबानें बोली जाती थीं और अल्लाह की अता व बख़्शिश से वह वक़्त की तमाम जुबानों को जानते थे और हर एक जमाअत को उसकी ज़बान में तब्लीग़ फ़रमाया करते थे। एक रिवायत के एतबार से हज़रत इदरीस ﷺ पहले आदमी हैं जिन्होंने क़लम को इस्तेमाल किया।

हज़रत इदरीस की ख़ास बातें

हज़रत इदरीस ने दीने इलाही के पैग़ाम के अलावा तमद्दुनी रियासत और शहरी ज़िंदगी, तमद्दुनी तौर-तरीक़ों की तालीम व तलक़ीन की और उनके ट्रेंड तालिब इल्मों ने कम व बेश दो सौ बस्तियां आबाद कीं। हज़रत इदरीस ﷺ ने इन तलबा को दूसरे इल्मों की भी तालीम की, जिसमें इल्मे हिक्मत और इल्मे नुजूम भी शामिल हैं। हज़रत इदरीस ﷺ पहली हस्ती हैं जिन्होंने हिक्मत व नुजूम के इल्म की शुरूआंत की, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उनको अफ़लाक और उनकी तर्कीब, कवाकिब और उनके जमा होने और अलग होने के नुक्तों और उनके आपसी कशिश के राज़ों की तालीम दी और

Copyright OfflineDeeniApp

उनको अदद व हिसाब के इल्म का आलिम बनाया और अगर ख़ुदा के उस पैग़म्बर के ज़रिए से इल्म सामने न आते, तो इन्सानी तबीयतों की वहां तक पहुंच मुश्किल थी। उन्होंने अलग-अलग ज़ातों और गिरोहों के लिए उनके मुनासिबे हाल क़ायदे क़ानून मुक़र्रर किए और पूरी दुनिया को चार हिस्सों में बांट कर हर चौथाई के लिए एक हाकिम मुक़र्रर किया जो ज़मीन के उस हिस्से की सियासत और बादशाही का ज़िम्मेदार क़रार पाया और इन चारों के लिए ज़रूरी क़रार दिया कि तमाम क़ानूनों से बढ़-चढ़कर शरीयत का वह क़ानून रहेगा, जिसकी तालीम अल्लाह की वह्य के ज़रिए मैंने तुमको दी है।

हज़रत इदरीस عليه السلام की तालीम का ख़ुलासा

अल्लाह की हस्ती और उसकी तौहीद पर ईमान लाना सिर्फ़ कायनात पैदा करने वाले की परस्तिश करना, आख़िरत के अ़ज़ाब से बचाने के लिए भले अ़मलों को ढाल बनाना, दुनिया से बे-नियाज़ी, तमाम मामलों में अद्ल व इंसाफ़ को सामने रखना, मुक़र्रर किए हुए तरीक़ों पर अल्लाह की इबादत करना, अय्यामे बीज़ के रोज़े रखना, इस्लाम के दुश्मनों से जिहाद करना, ज़कात अदा करना, पाकी-सफ़ाई के साथ रहना, ख़ास तौर से जनाबत, कुत्ते और सूअर से बचना, हर नशीली चीज़ों से परहेज़ करना।

बाद में आने वाले नबियों के बारे में बशारत

हज़रत इदरीस ने अपनी उम्मत को यह भी बताया कि मेरी तरह इस दुनिया की दीनी व दुन्यवी इस्लाह के लिए बहुत-से नबी तशरीफ़ लाएंगे और उनकी नुमायां ख़ास बातें ये होंगी।

वे हर एक बुरी बात से दूर और पाक होंगे। तारीफ़ के क़ाबिल और फ़ज़ाइल में कामिल होंगे। ज़मीन व आसमान के हालात को और उन मामलों को कि जिनमें कायनात के लिए शिफ़ा है या मरज़, वह्य इलाही के ज़रिए इस तरह जानते होंगे कि कोई मांगने वाला भूखा-प्यासा न रहेगा। वे दुआ़ओं को सुनने वाले होंगे। उनके मज़हब की दावत का ख़ुलासा कायनात की इस्लाह होगा।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत इदरीस ﷺ की ज़मीनी ख़िलाफ़त

जब हज़रत इदरीस अल्लाह की ज़मीन के मालिक बना दिए गए, तो उन्होंने इल्म व अ़मल के एतबार से अल्लाह की मख़्लूक़ को तीन तबकों में वांट दिया– काहिन, बादशाह, रियाया (प्रजा) और तर्तीब के एतबार के उनके दर्जे ते किए। काहिन सबसे पहला और ऊंचा दर्जा क़रार पाया, इसलिए कि वह अल्लाह तआ़ला के सामने अपने नफ़्स के अलावा बादशाह और रियाया के मामलों में भी जवाबदेह है। 'बादशाह' का दूसरा दर्जा रखा गया इसलिए कि वह नफ़्स और राज्य के मामलों के बारे में जवाबदेह है और रियाया सिर्फ़ अपने नफ़्स के लिए जवाबदेह है, इसलिए वह तीसरे तबक़े में शामिल है लेकिन ये तबके ज़िम्मेदारियों के एतबार से थे, नस्ल व ख़ानदान के आख़्तियारों के एतबार से नहीं। हज़रत इदरीस ﷺ 'अल्लाह तक जाने' तक शरीयत और सियासत के इन्हीं क़ानूनों की तब्लीग़ फ़रमाते रहे।

हज़रत इदरीस से मुताल्लिक़ ख़ास बातें

उनकी अंगूठी पर यह इबारत खुदी हुई थी, *'अल्लाह पर ईमान के साथ-साथ सब्र फतहमंदी की वजह है।'* उनके कमर से बंधने वाले पटके पर यह लिखा हुआ था, 'सच्ची ईदें तो अल्लाह के फ़र्ज़ों के अदा करने में छिपी हुई हैं। दीन का कमाल शरीअ़त से जुड़ा हुआ है और मुरव्वत में दीन के कमाल की तकमील है।'

नमाज़े जनाज़ा के वक़्त जो पटका बांधते थे, उस पर नीचे लिखे जुमले खुदे हुए थे। 'सआ़दतमंद वह है जो अपने नफ़्स की निगरानी करे और परवरदिगार के सामने इंसान की शफ़ाअत करने वाले उसके नेक अ़माल हैं।'

हज़रत इदरीस ﷺ की नसीहतें

हज़रत इदरीस ﷺ की वहुत-सी नसीहतें और आदाव व अख़्लाक़ के जुम्ले मशहूर हैं, जो अलग-अलग जुवानों में ज़र्वुल मसल (कहावत) और रुमूज़ व अमार (गूढ़ रहस्य) की तरह इस्तेमाल में आते हैं और उनमें से कुछ नीचे

Copyright OfflineDeeniApp

दिए जाते हैं–

1. अल्लाह की बेपनाह नेमतों का शुक्रिया इंसानी ताक़त से बाहर है।

2. जो इल्म में कमाल और अ़मले सालेह का ख़्वाहिशमंद हो, उसको जिहालत के अस्बाब और बद-किरदारी के क़रीब भी न जाना चाहिए। क्या तुम नहीं देखते कि हरफ़न मौला कारीगर अगर सीने का इरादा करता है तो सूई हाथ में लेता है, न कि बर्मा। पस हर वक़्त यह उसूल नज़रों में रहना चाहिए।

3. दुनिया की भलाई 'हसरत' है और बुराई 'नदामत'।

4. अल्लाह की याद और अ़मले सालेह के लिए ख़ुलूसे नीयत शर्त है।

5. न झूठी क़स्में खाओ, न अल्लाह तआ़ला के नाम को क़स्मों के लिए तख़्ता-ए-मश्क़ बनाओ और न झूठों को क़समें खाने पर आमादा करो, क्योंकि ऐसा करने से तुम भी गुनाह में शरीक हो जाओगे।

6. ज़लील पेशों को अख़्तियार न करो (जैसे सींगी लगाना, जानवरों की जुफ़्ती पर उजरत लेना, वग़ैरह)

7. अपने बादशाहों की (जो कि पैग़म्बर की तरफ़ से शरीअ़त के हुक्मों के नाफ़िज़ करने के लिए मुक़र्रर किए जाते हैं) इताअ़त करो और अपने बड़ों के सामने पस्त रहो और हर वक़्त अल्लाह की तारीफ़ में अपनी ज़ुबान को तर रखो।

8. हिक्मत रूह की ज़िंदगी है।

9. दूसरों की ख़ुश ऐशी पर हसद न करो, इसलिए कि उनकी यह मस्रूर ज़िंदगी कुछ दिनों की है।

10. जो ज़िंदगी की ज़रूरतों की ज़्यादा तलब रखता हो वह कभी क़ानेअ़ नहीं रहा।

नोट : कुछ तहक़ीक़ करने वालों और तज़्किरा लिखने वालों ने हज़रत इदरीस ﷺ और यूनानी फ़र्ज़ी अफ़्सानवी (Greek Mythology) के (Hermes) हरमज़ में मुताबक़त पैदा करने की कोशिश की है, जो सही नहीं है। हरमज़ (Hermes) को उन फ़र्ज़ी अफ़्सानों में हिक्मत व फ़साहत का देवता कहा जाता है। रूमी उसको 'अतारद' कहते हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

आद का ज़माना

आ़द का ज़माना लगभग दो हज़ार साल क़ब्ल मसीह माना जाता है और क़ुरआन मजीद में आ़द को *'मिम बादि नूह'* कहकर नूह क़ौम के ख़लीफ़ों में गिना गया है, साथ ही उनको *आ़दे ऊला* कहा है और आ़द के साथ इरम का लफ़्ज़ लगा हुआ है।

आ़द के रहने की जगह

आ़द का मर्कज़ी मक़ाम अरज़े अहक़ाफ़ है। यह हज़र मौत के उत्तर में इस तरह वाक़े है कि इसके पूरब में ओमान और उत्तर में राबेअ़ अल-ख़ाली। मगर आज यहां रेत के टीलों के सिवा कुछ नहीं है।

आद का मज़हब

आद बुत-परस्त थे और अपने पेशे और नूह की क़ौम की तरह सनमपरस्ती और बुततराशी में माहिर थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से एक असर मंक़ूल है। इसमें है कि इनके एक सनम का नाम समूद और एक का नाम हतार था।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

आ़द अपनी ममलक्त की सतवत व जबरूत, जिस्मानी सूरत व ग़ुरूर में ऐसे चमके कि उन्होंने एक अल्लाह को बिल्कुल भुला दिया और अपने हाथों के बनाए हुए बुतों को अपना माबूद मानकर हर क़िस्म के शैतानी आमाल बे-ख़ौफ़ व ख़तर करने लगे, तब अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं में से एक पैग़म्बर हज़रत हूद को भेजा। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम आ़द की सबसे ज़्यादा इ़ज़्ज़तदार शाख़ा 'ख़ुलूद' के एक फ़र्द (व्यक्ति) थे। सुर्ख़ व सफ़ेद रंग और बहुत ख़ूबसूरत थे। उनकी दाढ़ी बड़ी थी।

Maktab-e-Ashraf
Copyright OfflineDeeniApp

इस्लाम की तब्लीग़

उन्होंने अपनी क़ौम को अल्लाह की तौहीद और उसकी इबादत की तरफ़ दावत दी और लोगों पर ज़ुल्म व जौर करने से मना फ़रमाया। मगर आ़द ने एक न मानी। उनको सख़्ती के साथ झुठलाया और ग़ुरूर और घमंड के साथ कहने लगे, 'मन अशद्दु मिन्ना क़ुव्वः' (हम में से ज़्यादा कौन है क़ुव्वत में आगे) (हामीम सज्दा 41)

आज दुनिया में हम से ज़्यादा शौकत व जबरूत का कौन मालिक है? मगर हज़रत हूद ﷺ लगातार इस्लाम की तब्लीग़ में लगे रहे। वह अपनी क़ौम को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराते और ग़ुरूर व सरकशी के नतीजों को बताकर नूह की क़ौम के वाक़िए याद दिलाते और कभी इर्शाद फ़रमाते—

'ऐ क़ौम! अपनी जिस्मानी ताक़त और हुकूमत के ज़बरदस्त होने पर घमण्ड न कर, बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा कर कि उसने तुझको यह दौलत बख़्शी। नूह क़ौम की तबाही के बाद ज़मीन का तुझको मालिक बनाया, ख़ुशऐशी, फ़ारिगुलबा.ली और ख़ुशहाली अ़ता की, इसलिए उसकी नेमतों को न भूल और ख़ुद के गढ़े हुए बुतों की परस्तिश से बाज़ आ, जो न नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न दुख दे सकते हैं। मौत व ज़िंदगी, नफ़ा-नुक़्सान सब एक अल्लाह ही के हाथ में है। ऐ क़ौम के लोगो! माना कि तुम सरकशी और उसकी नाफ़रमानी में मुब्तला रहे हो, मगर आज भी अंगर तौबा कर लो और बाज़ आ जाओ तो उसकी रहमत फैली हुई है और तौबा का दरवाज़ा बंद नहीं हुआ है। उससे मग़्फ़िरत चाहो, वह बख़्श देगा। उसकी तरफ़ रुजू हो जाओ, वह माफ़ कर देगा और माल व इ़ज़्ज़त में सरफ़राज़ी बख़्शेगा।

आ़द को हज़रत हूद ﷺ की ये नसीहतें बहुत गरां गुज़रती थीं और वे यह नहीं सह सकते थे कि उनके ख़्यालों, उनके अ़क़ीदों और उनके कामों, ग़रज़ यह कि उनके इरादों में कोई आदमी रुकावट पैदा करे, उनके लिए मेहरबान नसीहत करने वाला बने, इसलिए अब उन्होंने यह रवैया अपनाया कि हज़रत हूद ﷺ का मज़ाक़ उड़ाया, उनको बेवक़ूफ़ समझा और उनकी मासूमिय़त भरी हक़ वाली सच्चाइयों की तमाम यक़ीनी दलीलों और मिसालों को झुठलाना शुरू कर दिया और कहने लगे—

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा– *'ऐ हूद! तू हमारे पास एक दलील भी न लाया और तेरे कहने से हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ने वाले नहीं और न हम तुझ पर ईमान लाने वाले है।'* (हूद 11 : 35)

'और हम इस ढोंग में आने वाले नहीं कि तुझको ख़ुदा का रसूल मान लें और अपने ख़ुदाओं की इबादत छोड़कर यह यक़ीन कर लें कि वे 'बड़े ख़ुदा' के सामने हमारे सिफ़ारिशी नहीं होंगे।'

हज़रत हूद ﷺ ने उनसे कहा कि न मैं बेवक़ूफ़ हूं और न पागल, बिला शुब्हा अल्लाह का रसूल और पैग़म्बर हूं। अल्लाह अपने बन्दों की हिदायत के लिए बेवक़ूफ़ को मुंतख़ब नहीं किया करता कि उसका नुक़सान उसके नफ़ा से बढ़ जाए और हिदायत की जगह गुमराही आ जाए। वह इस ज़ोरदार ख़िदमत के लिए अपने बन्दों में से ऐसे आदमी को चुनता है जो हर तरह से उसका अह्ल हो और हक़ की असल ख़िदमत को ख़ुशी के साथ अंजाम दे सके।

तर्जुमा– *'और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है कि रिसालत के अपने मंसब को किस जगह रखे।'* (अल-अनआम 6 : 124)

मगर क़ौम की सरकशी और मुख़ालफ़त बढ़ती रही और उनपर सूरज से ज़्यादा रोशन दलीलों और नसीहतों का ज़रा भी असर न पड़ा और हज़रत हूद ﷺ को ज़लील करने और झुठलाने पर और ज़्यादा उतर आए और (अल-अयाज़बिल्लाह) मजनून और ख़ब्ती कहकर और ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाने लगे और कहने लगे, ऐ हूद! जबसे तूने हमारे बुतों को बुरा कहना और हमको उनकी इबादत न करने पर उभारना शुरू किया है, हम देखते हैं कि उस वक़्त से तेरा हाल ख़राब हो गया है और हमारे ख़ुदाओं की बद-दुआ से तू पागल और मजनून हो गया है, तो अब हम इसके अलावा तुझको और क्या समझें? उनकी इस गुस्ताख़ी भरी जुर्रात और हिम्मत से यह ख़्याल हो चला था कि अब कोई आदमी हज़रत हूद ﷺ की तरफ़ ध्यान न देगा और उनकी बातों को तवज्जोह से न सुनेगा।

हज़रत हूद ﷺ ने यह सब कुछ निहायत सब्र व ज़ब्त से सुना, फिर उनसे यूं बोले–

Maktab-e-Ahraf

Copyright OfflineDeeniApp

'म अल्लाह का आर तुम सबको गवाह बनाकर सबसे पहले यह एलान करता हूं कि मैं इस अ़क़ीदे से बिल्कुल अलग हूं कि इन बुतों में न यह क़ुदरत है कि मुझको या किसी को किसी क़िस्म की भी कोई बुराई पहुंचा सकते हैं, इसके बाद तुमको और तुम्हारे इन झूठे माबूदों को चैलेंज करता हूं कि अगर इनमें ऐसी कुदरत है तो वे मुझको नुक़्सान पहुंचाने में जल्दी से कोई क़दम उठाएं। मैं अपने अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से अक़्ल रखने वाला और सूझ-बूझ रखने वाला हूं। सोचने-समझने का मालिक हूं और हिक्मत और दानाई का हामिल, मैं तो सिर्फ़ अपने अल्लाह पर ही भरोसा करता हूं, और उसी पर पूरा यक़ीन रखता हूं जिसके क़ब्ज़े व कुदरत में कायनात के तमाम जानदारों की पेशानियां हैं, जो ज़िंदगी और मौत का मालिक है। वह ज़रूर मेरी मदद करेगा और हर नुक़्सान पहुंचाने वाले के नुक़्सान से बचाए रखेगा।

आख़िर हज़रत हूद ﷺ ने उसकी लगातार बग़ावत और सरकशी के ख़िलाफ़ यह ऐलान कर दिया कि अगर आ़द का यही रवैया रहा और हक़ से पलटने और मुंह फेरने की रविश में उन्होंने कोई तब्दीली न की और मेरी नसीहतों को पूरे दिल से न सुना, तो मैं अगरचे अपनी डाली ज़िम्मेदारियों के लिए हर वक़्त चुस्त और हिम्मत रखने वाला हूं, मगर उनके लिए हलाकत यक़ीनी है। अल्लाह बहुत जल्द उनको हलाक कर देगा और दूसरी क़ौम को ज़मीन का मालिक बनाकर उनकी जगह क़ायम कर देगा और बिला शुब्हा वे अल्लाह तआ़ला को ज़र्रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते वह तो हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला और हर चीज़ की हिफ़ाज़त करने वाला और निगहबान है। और पूरी कायनात उसकी कुदरत की मुट्ठी में है।

ऐ क़ौम! अब भी समझ और अक़्ल व होश से काम ले नूह ﷺ की क़ौम के हालात से इबरत हासिल कर और अल्लाह के पैग़ाम के सामने सरे नियाज़ झुका दे वरना क़ज़ा व क़द्र का हाथ ज़ाहिर हो चुका है और बहुत क़रीब है वह ज़माना कि तेरा यह सारा ग़ुरूर व घमंड ख़ाक में मिल जाएगा और उस वक़्त शर्मिंदगी से भी कोई फ़ायदा न होगा।

हज़रत हूद ﷺ ने बार-बार उनको भी यह बावर कराया कि मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं, दोस्त हूं। तुमसे सोना-चांदी और तख़्त व ताज की तलब नहीं

Copyright OfflineDeeniApp

करता हूं, बल्कि तुम्हारी फ़लाह व नजात चाहता हूं। मैं अल्लाह तआ़ला के पैग़ाम के बारे में ख़ियानत करने वाला नहीं बल्कि अमीन हूं। वही करता हूं जो मुझसे कहा जाता है। जो कुछ कहता हूँ क़ौम की सआ़दत और हाल व माल की भलाई के लिए कहता हूं, बल्कि दायमी व सरमदी नजात के लिए कहता हूं।

तुमको अपनी ही क़ौम के एक इंसान पर अल्लाह के पैग़ाम नाज़िल होने से अचम्भा नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह पुराने ज़माने से अल्लाह की जारी व सारी सुन्नत है कि इंसानों की हिदायत व सआ़दत के लिए उन्हीं में से एक आदमी को चुन लेता और अपना रसूल बना कर उसको ख़िताब करता है और अपनी मर्ज़ी और नामर्ज़ी से उसकी मारफ़त अपने बन्दों को मुत्तला करता रहता है और फ़ितरत का तक़ाजा भी तो यही है कि किसी क़ौम की रुश्द व हिदायत के लिए ऐसे आदमी ही को चुना जाए, जो बोल-चाल में उन्हीं की तरह हो, उनके अख़्लाक़ और आदतों का जानकार हो, उनकी ख़ुसूसी बातों से आश्ना और उन्हीं के साथ ज़िंदगी गुज़ारता रहा हो कि उसी से क़ौम मानूस हो सकती है और वही उसका सही हादी व मुश्फ़िक़ बन सकता है।

आ़द ने जब यह सुना तो वे अजीब हैरत में पड़ गए। उनकी समझ में न आया कि एक अल्लाह की इबादत का मतलब क्या है? वे ग़म व ग़ुस्सा में आ गए कि किस तरह हम बाप-दादा की 'अस्नाम परस्ती' (मूर्तिपूजा) को छोड़ दें? यह तो हमारी और हमारे बाप दाद की सख़्त तौहीन है। उनका ग़ैज़ व ग़जब भड़क उठा कि उनको काफ़िर और मुश्रिक क्यों कहा जाता है? जबकि वे बुतों को अल्लाह के समान अपनी शफ़ाअ़त करने वाला मानते हैं? उनके नज़दीक हूद की बात मान लेने में उनके माबूदों और बुज़ुर्गों की तौहीन थी और उन्हें हक़ीर समझा जा रहा था, जिनको वह बड़े ख़ुदा के दरबार में अपना वसीला और शफ़ी मानते थे और इसी को इन तस्वीरों और मूर्तियों के लिए पूजते थे कि वे ख़ुश होकर हमारी सिफ़ारिश करेंगे और अल्लाह के अ़ज़ाब से नजात दिलाएंगे। आख़िर वे शोले की तरह भड़क उठे और हज़रत हूद ﷺ से बिगड़ कर कहने लगे, तूने हमको अपने ख़ुदा के अ़ज़ाब की धमकी दी और हमको उससे यह कहकर डराया कि—

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा—'मै तुम्हारे ऊपर बड़े दिन के अ़ज़ाब के आने से डरता हूं (कि कहीं) तुम उसके हक़दार न ठहर जाओ।' (अश-शोअ़रा 26 : 135)

तो ऐ हूद! अब हमसे तेरी रोज़-रोज़ की नसीहतें सुनी नहीं जातीं। हम ऐसी नसीहत करने वाले मेहरबान से बाज़ आए, अगर तू वाक़ई अपने क़ौल में सच्चा है तो वह अ़ज़ाब जल्द ले आ कि हमारा-तेरा क़िस्सा साफ़ हो।

तर्जुमा—'पस ला तू हमारे पास उस चीज़ को, जिसका तू हमसे वायदा करता है, अगर तू वाक़ई सच्चों में से है।' (अल-आराफ़ 7 : 70)

हज़रत हूद ﷺ ने जवाब दिया कि अगर मेरे ख़ुलूस और मेरी सच्चाई वाली नसीहतों का यही जवाब है तो 'बिस्मिल्लाह' और तुमको अ़ज़ाब का अगर इतना की शौक़ है, तो वह भी कुछ दूर नहीं।

तर्जुमा—'बिला शुबहा तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर अ़ज़ाब व ग़ज़ब आ पहुंचा। (अल-आराफ़ 7 : 71)

तुमको शर्म नहीं आती कि तुम ख़ुद अपने गढ़े हुए बुतों को उनके नाम गढ़ कर पुकारते हो और तुम्हारे बाप-दादा उनको अल्लाह की दी हुई दलील के बग़ैर मनगढ़त तरीक़े पर उनको अपना शफ़ीअ़ और सिफ़ारिशी मानते हैं और तुम मेरी रोशन दलीलों से मुंह फेर कर और सरकशी करके अ़ज़ाब के तलबगार होते हो, अगर ऐसा शौक़ है तो अब तुम भी इन्तिज़ार करो और मैं भी इंतिज़ार करता हूं कि वक़्त क़रीब आ पहुंचा।

तर्जुमा—'क्या तुम मुझसे उन मनगढ़त नामों (बुतों) के बारे में झगड़ते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादों ने गढ़ लिया है कि जिसके बारे में तुम्हारे पास ख़ुदा की कोई हुज्जत नहीं। पस अब तुम (अल्लाह के अ़ज़ाब का) इन्तिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (अल-आराफ़ 7 : 71)

हूद की क़ौम पर अ़ज़ाब

हासिल यह कि हूद की क़ौम (आ़द) इंतिहाई शरारत व बग़ावत और अपने पैग़म्बर की तालीम से बेपनाह बुग़्ज़ और दुश्मनी की वजह से अ़मल के बदले और जज़ा के क़ानून का वक़्त आ पहुंचा और ग़ैरते हक़ हरकत में आई और अल्लाह के अ़ज़ाब ने सबसे ख़ुश्कसाली की शक्ल अख़्तियार की। आद सख़्त घबराए हुए परेशान हुए और तंग दिखाई पड़ने लगे, तो हज़रत हूद ﷺ

Copyright OfflineDeeniApp

को हमदर्दी के जोश ने उकसाया और मायूसी के बाद फिर उनको एक बार समझाया कि हक़ का रास्ता आख़ियार कर लो, मेरी नसीहतों पर ईमान ले आओ, यही निजात की राह है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, वरना पछताओगे। लेकिन बदबख़्त व बदनसीब क़ौम पर कोई असर न हुआ बल्कि दुश्मनी कई गुना ज़्यादा बढ़ गई, तब हौलानाक अ़ज़ाब ने उन को आ घेरा। आठ दिन और सात रातें बराबर तेज़ व तुंद हवा के तूफ़ान उठे और उनको और उनकी आबादी को तह व बाला करके रख दिया। तनोमंद और हैकल इंसान जो अपनी जिस्मानी ताक़तों के घमंड में सरमस्त और सरकश बने हुए थे, इस तरह बेहिस व हरकत पड़े नज़र आते थे, जिस तरह आंधी से भारी-भरकम पेड़ बेजान होकर गिरता है। ग़रज़ उनकी हस्ती को नेस्त व नाबूद कर दिया गया, ताकि आने वाली नस्लों के लिए इबरत बनें और दुनिया और आख़िरत की लानत और अ़ज़ाब उन पर मुसल्लत कर दिया गया कि वे उसी के हक़दार थे। हज़रत हूद ﷺ और उनके मुख़्लिस इस्लाम को मानने वाले साथी अल्लाह की रहमत और नेमत में अल्लाह के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहे और सरकश क़ौम की सरकशी और बग़ावत से बचे रहे।

यह है आ़दे ऊला की वह दास्तान जो अपने अन्दर इबरत के सामान रखती है। इसमें अनगिनत नसीहतें पाई जाती हैं और अल्लाह तआ़ला के हुक्मों की तामील और तक़्वा व तहारत की ज़िंदगी की तरफ़ दावत देती है। शरारत, सरकशी और अल्लाह के हुक्मों से बग़ावत के बुरे अंजाम से आगाह करती और वक़्ती ख़ुशऐशी पर घमंड करके नतीजे की बदबख़्ती पर मज़ाक़ उड़ाने से डराती और बाज़ रखती है।

हज़रत हूद ﷺ की वफ़ात

हज़रत अ़ली ﷺ से एक असर नक़्ल किया जाता हैं कि उनकी क़ब्र हज़र मौत में कसीफ़े अहमर (लाल टीला) पर है और उसके सरहाने झाऊ का पेड़ खड़ा है। दूसरी रिवायतों के मुक़ाबले में यही रिवायत सही और माक़ूल मालूम होती है कि आद की बस्तियां हज़र मौत के क़रीब थीं और उनकी (आ़द की) तबाही के बाद क़रीब ही की बस्तियों में हज़रत हूद ﷺ ने क़ियाम फ़रमाया होगा और वहीं वफ़ात हो गई होगी।

Copyright OfflineDeeniApp

कुछ इबरतें

अल्लाह के नेक बन्दे जब किसी का भला चाहते और टेढ़ों की टेढ़ को सीधा करने के लिए नसीहत फ़रमाते, तो बुरों और ज़लीलों की कमीनगी, मज़ाक़ उड़ाने, फब्ती कसने, छोटा बनाए रखने की परवाह नहीं करते। दुखी और रंजीदा होकर या नाराज़ होकर भला चाहने और नसीहत करने को नहीं छोड़ते और इन तमाम ख़ुसूसियतों में नुमायां बात यह होती है कि वे अपनी इसी नसीहत और भला चाहने के लिए क़ौम से किसी नफ़ा की उम्मीद या ख्वाहिश ज़रा-सी नहीं रखते। उनकी ज़िंदगी बदला और एवज़ से पूरी तरह बुलन्द और बरतर होती है।

अपने इस्लाह चाहने वालों और नबियों और सच्चों के ख़िलाफ़ क़ौमों की वैर और दुश्मनी इसी एक अ़क़ीदे पर टिक रही है कि हमारे बाप-दादा की रीति व रस्म और उनकी ख़ुद की गढ़ी हुई मूर्तियों के ख़िलाफ़ क्यों कुछ कहा जाता है? ये बातें क़ौमों की ज़िंदगी के लिए हमेशा तबाही मचाने वाली और उनकी फ़लाह व अबदी सआ़दत के लिए हलाक करने वाली हैं।

तब्लीग़ व हक़ के पैग़ाम के रास्ते में बदी का बदला नेकी से दिया जाए और कडुवाहट का जवाब मीठे बोल से पूरा किया जाए। (अलबत्ता तब्लीग़ करने वाले) अपनी बदकिरदारी और लगातार सरकशी पर अल्लाह तआ़ला के बनाए हुए क़ानून 'जज़ा-ए-अ़मल' या 'पादाशे अ़मल' को ज़रूर याद दिलाएं और आने वाले बुरे अंजाम पर यक़ीनन तंबीह करें और यह सच्चाई बार-बार सामने लाएं कि जब कोई क़ौम इज्तिमाई सरकशी, ज़ुल्म और बग़ावत पर तैयार हो जाती है और उस पर बराबर इसरार करती रहती है, तो फिर अल्लाह तआ़ला का क़हर व ग़ज़ब उसको सफ्हा-ए-आ़लम से मिटा देता है और उसकी जगह दूसरी क़ौम ले लेती है।

हज़रत हूद ﷺ और आ़द क़ौम का ज़िक्र क़ुरआन में सूरः आराफ़, हूद और शुअ़रा में आया है जबकि आ़द क़ौम का ज़िक्र आराफ़, हूद, मोमिनून, शुअ़रा, फ़ुस्सिलत, अहक़ाफ़, अज़्ज़ारियात, अल-क़मर और अल-हाक़्क़ा में हुआ है।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम

समूद क़ौम

समूद, क़ौम के वही लोग हैं जो पहले आ़द की हलाकत के बाद हज़रत हूद अलैहिस्सलाम के साथ बच गए थे और उनकी नस्ल आ़दे सानिया (द्वितीय आ़द) कहलाई। उनको 'समूदे इरम' भी कहा गया–

समूद की बस्तियां

समूद की आबादियां हिज्र में थी। हिजाज़ और शाम के दर्मियान वादी क़ुरा तक जो मैदान नज़र आता है, यह सब उनके रहने की जगह है। समूद की बस्तियों के खंडर और निशान आज तक मौजूद हैं। इनकी ख़ास बात यह है कि इन बस्तियों में मकान पहाड़ों को काट कर बनाए गए थे, गोया समूद तामीरात के मामले में बहुत ज़्यादा माहिर थे।

समूद का ज़माना

समूद के ज़माने के मसले के बारे में कोई तै शुदा बाक़ायदा वक़्त नहीं बताया जा सकता, अलबता यक़ीनी तौर पर कहा जा सकता है कि इनका ज़माना हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम से पहले का ज़माना है।

समूदियों का मज़हब

समूद अपने बुतपरस्त पुरखों की तरह बुतपरस्त थे। वे ख़ुदा के अलावा बहुत से बातिल माबूदों के परस्तार थे और शिर्क में डूबे हुए थे। इसलिए उनकी इस्लाह के लिए भी और उन पर हक़ वाज़ेह करने के लिए भी उन्हीं के क़बीले में से हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को नसीहत करने वाला पैग़म्बर और रसूल बनाकर भेजा, ताकि वह उनको सीधे रास्ते पर लाए, उन पर वाज़ेह करे कि कायनात की हर चीज़ अल्लाह के एक होने और अकेले होने पर गवाह है। उन्हें अल्लाह की नेमत याद दिलाए और बताए कि परस्तिश और इबादत के लायक़ एक ज़ात के अलावा दूसरा कोई नहीं है।

Maktab-e-Ashraf
Copyright OfflineDeeniApp

क़ुरआन मजीद में आए क़िस्सों का मतलब

क़ुरआन मजीद की यह सुन्नत है कि वह इंसानों की हिदायत के लिए पिछली क़ौमों के और उन्हें हिदायत के रास्ते पर लगाने के वाक़िए और हालात बयान करके नसीहतों और वाजों का सामान जुटाता है, ताकि यह मालूम हो सके कि जिन उम्मतों ने उनकी बातों का इंकार किया, और उनका मज़ाक़ उड़ाया और उन्हें झुठलाया, तो अल्लाह तआला ने अपने सच्चे रसूल की तस्दीक़ के लिए कभी अपने आप और कभी क़ौम के मांग करने पर ऐसी निशानियां नाज़िल फ़रमाईं जो नबियों और रसूलों की तस्दीक़ की वजह बनीं और 'मोजजा' कहलाईं, लेकिन अगर क़ौम ने इस निशानी और मोजज़ा के बाद भी झुठलाने को न छोड़ा और न दुश्मनी छोड़ी, बल्कि ज़िद पर अड़े रहे, तो फिर 'अल्लाह के अ़ज़ाब' ने आकर उनको तबाह व हलाक कर दिया और उनके वाकियों को आने वाली क़ौम के लिए इबरत व नसीहत का सामान बना दिया।

अल्लाह की ऊंटनी

हज़रत सालेह ﷺ क़ौम को बार-बार समझाते और फ़रमाते रहे, पर क़ौम पर बिल्कुल असर न हुआ, बल्कि उसकी दुश्मनी तरक़्क़ी पाती रही और उसका विरोध बढ़ता ही रहा और वह किसी तरह बुतपरस्ती से बाज़ न आई। अगरचे एक छोटी और कमज़ोर जमाअ़त ने ईमान क़ुबूल कर लिया और वह मुसलमान हो गई, मगर क़ौम के सरदार और बड़े-बड़े सरमायादार उसी तरह बातिल-परस्ती पर क़ायम रहे और उन्होंने दी हुई हर क़िस्म की नेमतों का शुक्रिया अदा करने के बजाए नाशुक्री का तरीक़ा अपना लिया। वे हज़रत सालेह ﷺ का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा करते कि सालेह! अगर हम बातिल परस्त होते, अल्लाह के सही मज़हब के इंकारी होते और उसके पसंदीदा तरीक़े पर क़ायम न होते, तो आज हमको यह सोने-चांदी की बहुतात, हरे-भरे बाग़ और दूसरी नेमते हासिल न होतीं। तुम ख़ुद को और अपने मानने वालों को देखो और फिर उनकी तंगहाली और ग़ुर्बत पर नज़र करो और बतलाओ कि

Copyright OfflineDeeniApp

अल्लाह के प्यारे और मक़्बूल कौन हैं?

हज़रत सालेह ﷺ फ़रमाते कि तुम अपने इस ऐश और अमीरी पर शेख़ी न मारो और अल्लाह के सच्चे रसूल और उसके सच्चे दीन का मज़ाक़ न उड़ाओ, इसलिए अगर तुम्हारे घमंड और दुश्मनी का यही हाल रहा, तो पल में सब कुछ फ़ना हो जाएगा और फिर न तुम रहोगे और न यह तुम्हारा समाज, बेशक ये सब अल्लाह की नेमते हैं, बशर्ते कि इनके हासिल करने वाले उसका शुक्र अदा करें और उसके सामने सरे नियाज़ झुकाएं और बेशक यही अ़ज़ाब व लानत के सामान हैं, अगर इनका इस्तिक़बाल शेख़ी व ग़ुरूर के साथ किया जाए। इसलिए यह समझना ग़लती है कि ऐश का हर सामान अल्लाह की ख़ुश्नूदी का नतीजा है।

समूद को यह हैरानी थी कि यह कैसे मुम्किन है कि हमीं में का एक इंसान अल्लाह का पैग़म्बर बन जाए और वह अल्लाह के हुक्म सुनाने लगे। वे बड़े ताज्जुब से कहते–

तर्जुमा– *'कि हमारी मौजूदगी में उस पर (ख़ुदा की) नसीहत उतरती है।'*

(साद 38 : 8)

यानी अगर ऐसा होना ही था तो इसके अह्ल हम थे, न कि सालेह और कभी अपनी क़ौम के कमज़ोर लोगों (जो कि मुसलमान हो गए थे) को ख़िताब करके कहते– ,

तर्जुमा– *'क्या तुमको यक़ीन है कि बिला शुबहा सालेह अपने परवरदिगार का रसूल है?'*

(अल-आराफ़ 7 : 59)

और मुसलमान जवाब देते–

तर्जुमा– *'बेशक हम तो इसके लाए हुए पैग़ाम पर ईमान रखते हैं।'*

(अल-आराफ़ 9 : 75)

तब ये क़ौम के इंकार करने वाले (समूद क़ौम) ग़ुस्से में कहते :

तर्जुमा– *'बेशक हम तो तुम चीज़ को जिस पर तुम्हारा ईमान है, इंकार करते है।'*

(अल-आराफ़ 7 : 7)

बहरहाल हज़रत सालेह की मग़रूर व सरकश क़ौम ने उनकी पैग़म्बराना दावत व नसीहत को मानने से इंकार किया और अल्लाह के निशान (मोजज़े)

Copyright OfflineDeeniApp

की पुष्टि की, तब सालेह ने अल्लाह के दरबार में दुआ की और क़ुबूलियत के बाद अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम्हारा मत्लूब निशान ऊंटनी की शक्ल में यहां मौजूद है। देखो, अगर तुमने इसको तक्लीफ़ पहुंचायी तो फिर यही हलाकत का सामान साबित होगा और अल्लाह ने तुम्हारे और उसके दर्मियान पानी के बारी तै कर दी है। एक दिन तुम्हारा है और एक दिन इसका, इसलिए इसमें फ़र्क़ न आए।

क़ुरआन मजीद ने इसे *'नाक़तुल्लाह'* (अल्लाह की ऊंटनी) कहा है, ताकि यह बात नज़रों में रहे कि यूं तो तमाम मख़लूक़ अल्लाह ही की मिल्कियत है, मगर समूद ने चूंकि उनको ख़ुदा की एक निशानी की शक्ल में तलब किया था, इसलिए उसको मौजूदा ख़ुसूसियत ने उसको 'अल्लाह की निशानी' का लकब दिलाया, साथ ही उसको *'लकुम आयातिही'* (तुम्हारे लिए निशानी) कहकर यह भी बताया कि यह निशानी अपने भीतर ख़ास अहमियत रखती है, लेकिन बदक़िस्मत क़ौम समूद ज़्यादा देर तक इसको बरदाश्त न कर सकी और एक दिन साज़िश करके ऊंटनी को हलाक कर डाला। हज़रत सालेह ﷺ को जब यह मालूम हुआ तो आंखों मे आंसू लाकर फ़रमाने लगे, बदबख़्त क़ौम! आख़िर तुझसे सब्र न हो सका। अब अल्लाह के अ़ज़ाब का इंतज़ार कर। तीन दिन के बाद न टलने वाला अ़ज़ाब आएगा और तुम सबको हमेशा के लिए तहस-नहस कर दिया जाएगा।

समूद पर अ़ज़ाब

समूद पर अ़ज़ाव आने की निशानियां अगलीं सुबह से ही शुरू हो गईं, यानी पहले दिन इन सवके चेहरे इस तरह पीले पड़ गए जैसा कि हर शुरूआती हालत में हो जाया करता है और दूसरे दिन सबके चेहरे लाल थे, गोया ख़ौफ़-दहशत का यह दूसरा दर्जा था और तीसरे दिन इन सवके चेहरे स्याह थे और अंधेरा छाया हुआ था। यह ख़ौफ़ व दहशत का वह तीसरा दर्जा है जिसके वाद मौत का दर्जा रह जाता है।

वहरहाल इन तीन दिनों के वाद वायदा किया गया वक़्त आ पहुंचा और रात के वक़्त एक हैवतनाक आवाज़ ने हर आदमी को उसी हालत में हलाक

Maktab e Ahl-e-Haq

Copyright OfflineDeeniApp

कर दिया, जिस हालत में वह था। क़ुरआन मजीद ने हलाक कर देने वाली आवाज़ को किसी जगह साईक़ा (कड़कदार बिजली) और किसी जगह रजफ़ा (ज़लज़ला डाल देने वाली चीज़), किसी जगह ताग़िया (दहशतनाक) और कहीं सैहा (चीख़) फ़रमाया।

एक तरफ़ समूद पर यह अ़ज़ाब आया और उनकी बस्तियों को तबाह व बर्बाद करके सरकशों की सरकशी और घमंडियों का अंजाम ज़ाहिर हुआ, जबकि दूसरी ओर हज़रत सालेह ﷺ और उनकी पैरवी करने वाले मुसलमानों को अल्लाह ने अपनी हिफ़ाज़त में ले लिया और उनको इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखा।

कुछ इबरतें

अल्लाह की सुन्नत यही रही है (मगर अल्लाह की इस सुन्नत से नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहिस्सलाम की रिसालत का पैग़ाम अलग है। इसलिए कि आपने साफ़ कहा है कि मैंने अल्लाह से दुआ मांगी कि वह मेरी उम्मत (उम्मते दावत हो या उम्मते इजाबत) में अ़ज़ाब मुसल्लत न फ़रमाए और अल्लाह नआ़ला ने मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा ली।) क़ुरआन मजीद ने इसकी तस्दीक़ इस तरह की है–

तर्जुमा–*'ऐ रसूल! इस हाल में कि तू उनमें मौजूद है अल्लाह तआ़ला (इन काफ़िरों) पर आम अ़ज़ाब मुसल्लत न करेगा।'* (अल-अंफ़ाल : 33)

लेकिन जो क़ौम अपने नबी से इस वायदे पर निशान तलब करे कि अगर उनका मतलूब निशान ज़ाहिर हो गया, तो वे ज़रूर ईमान लाएंगे, फिर वे ईमान न लाए तो उस क़ौम की हलाकत यक़ीनी हो जाती है। अल्लाह तआ़ला उसको माफ़ नहीं करता, जब तक कि वह तौबा न कर ले और अल्लाह के दीन को क़ुबूल न कर ले या अल्लाह के अ़ज़ाब से सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटकर दूसरों के लिए इबरत का सबब न बन जाए। यह मोहलिक ग़लती और नफ़्स का धोखा है कि इंसान ख़ुशऐशी, रफ़ाहियत और दुन्यावी जाह व जलाल देखकर यह समझ बैठे कि जिस क़ौम या फ़र्द के पास यह सब कुछ मौजूद है, वह ज़रूर अल्लाह तआ़ला के साए में है और उनकी ख़ुशऐशी अल्लाह की ख़ुशनूदी की निशानी है।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र क़ुरआन पाक में

क़ुरआन पाक के रुश्द व हिदायत का पैग़ाम चूं कि इब्राहीमी मिल्लत का पैग़ाम है, इसलिए क़ुरआन पाक में जगह-जगह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया गया है, जो मक्की-मदनी दोनों क़िस्म की सूरतों में मौजूद है, यानी 35 सूरतों की 63 आयतों में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र मिलता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम

तारीख़ और तौरात दोनों हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम 'तारिख़' बताते हैं और क़ुरआन पाक के एतबार से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम 'आज़र' है। इस सिलसिले में उलेमा, तफ़्सीर लिखने वाले, मग़्रिबी मुश्तशरिक़ों और तहक़ीक़ करने वालों ने बड़ी-बड़ी, लंबी-लंबी बहसें की हैं लेकिन इनमें अख़्तियार की गई ठंडी ठंडी बातें हैं इसलिए कि क़ुरआन मजीद ने जब खोल-खोल कर आज़र को अब (इब्राहीम का बाप) कहा है तो फिर अंसाब के उलेमा और बाइबिल की तख़्मीनी अटकलों से मुतास्सिर होकर क़ुरआन मजीद की यक़ीनी ताबीर को मजाज़ कहने या इससे भी आगे बढ़कर क़ुरआन मजीद में क़वाइद की बातें मानने पर कौन-सी शरई और हक़ीक़ी ज़रूरत मजबूर करती है। साफ़ और सीधा रास्ता यह है कि जो क़ुरआन मजीद में कहा गया उसको मान लिया जाए, चाहे वह नाम हो या लक़ब हो।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और दूसरे अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम

हज़रत इब्राहीम के हालात के साथ उनके भतीजे हज़रत लूत और उनके बेटों हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम वाक़िआ़त भी वाबिस्ता हैं। इन तीनों पैग़म्बरों के तफ़्सीली हालात के इनके तज़्किरों में बयान किए गए हैं, यहां सिर्फ़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हालात के तहत कहीं कहीं ज़िक्र आएगा।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत इब्राहीम ﷺ की अज़्मत

हज़रत इब्राहीम की शान की इस अज़्मत के पेशेनज़र जो नबियों और रसूलों के दर्मियान उनको हासिल है क़ुरआन मजीद में उनके वाक़िआत को अलग-अलग उस्लूब के साथ जगह-जगह बयान किया गया है। एक जगह पर अगर थोड़े में ज़िक्र है, तो दूसरी जगह तफ़्सील से तज़्किरा किया गया है और कुछ जगहों पर उनकी शान और ख़ूबी को सामने रखकर उनकी शख़्सियत को नुमायां किया गया है।

तौरात यह बताती है कि हज़रत इब्राहीम इराक़ के क़स्बा 'उर' के वाशिंदे थे और अहले फ़द्दान में से थे और उनकी क़ौम बुत-परस्त थी, जबकि इंजील में साफ़ लिखा है कि उनके वालिद नज्जारी का पेशा करते और अपनी क़ौम के अलग-अलग क़बीलों के लिए लकड़ी के बुत बनाते और बेचा करते थे, मगर हज़रत इब्राहीम को शुरू ही से हक़ की बसीरत और रुश्द व हिदायत अता फ़रमाई और वे यह यक़ीन रखते थे कि बुत न देख सकते हैं न सुन सकते हैं और न किसी की पुकार का जवाब दे सकते हैं और न नफ़ा व नुक़्सान का उनसे कोई वास्ता है और न लकड़ी के खिलौनो और दूसरी बनी हुई चीज़ों के और उनके बीच कोई फ़र्क़ और इम्तियाज़ है। वे सुबह व शाम आंख से देखते थे कि इन बेजान मूर्तियों को मेरा बाप अपने हाथों से बनाता और गढ़ता रहता है और जिस तरह उसका दिल चाहता है नाक-कान आंखें गढ़ लेता है और फिर ख़रीदने वालों के हाथ बेच देता है, तो क्या ये ख़ुदा हो सकते हैं या ख़ुदा-जैसे या ख़ुदा के बराबर हो सकते हैं?

हज़रत इब्राहीम ने जब यह देखा कि क़ौम बुतपरस्ती, सितारापरस्ती और मज़ाहिर-परस्ती में ऐसी लगी हुई है कि ख़ुदा-ए-बरतर की क़ुदरते मुतलक़ा और उसके एक होने और समद होने का तसव्वुर भी उनके दिलों में बाक़ी न रहा और अल्लाह के एक होने के अक़ीदे से ज़्यादा कोई ताज्जुब की बात नहीं रही, तब उसने अपनी हिम्मत चुस्त की और ज़ाते वाहिद के भरोसे पर उनके सामने दीने हक़ का पैग़ाम रखा और ऐलान किया—

'ऐ क़ौम! यह क्या है जो मैं देख रहा हूं कि तुम अपने हाथ से बनाए हुए बुतों की परस्तिश में लगे हुए हो। क्या तुम इस क़दर ग़फ़लत के ख़्वाब

Copyright OfflineDeeniApp

में हो कि जिस बेजान लकड़ी को अपने हथियारों से गढ़ कर मूर्तियां तैयार करते हो, अगर वे मर्ज़ी के मुताबिक़ न बनें, तो उनको तोड़ कर दूसरे बना लेते हो, बना लेने के बाद फिर उन्हीं को पूजने और नफ़ा-नुक़सान का मालिक समझने लगते हो, तुम इस खुराफ़ात से बाज़ आ जाओ, अल्लाह की तौहीद के नग़मे गाओ और उस एक हक़ीक़ी मालिक के सामने सरे नियाज़ झुकाओ जो मेरा, तुम्हारा और कुल कायनात का ख़ालिक व मालिक है। मगर क़ौम ने उसकी आवाज़ पर बिल्कुल ध्यान न धरा और चूंकि हक़ सुनने वाले कान और हक़ देखने वाली निगाह से महरूम थी, इसलिए उसने जलीलुलक़द्र पैग़म्बर की दावते हक़ का मज़ाक़ उड़ाया और ज़्यादा-से-ज़्यादा तमर्रुद व सरकशी का मुज़ाहरा किया।

बाप को इस्लाम की दावत और बाप-बेटे का मुनाज़रा

हज़रत इब्राहीम ﷺ देख रहे थे कि शिर्क का सबसे बड़ा मर्कज़ ख़ुद उनके अपने घर में क़ायम है और आज़र की बुतपरस्ती और बुतसाज़ी पूरी क़ौम के लिए एक धुरी बनी हुई है इसलिए फ़ितरत का तक़ाज़ा है कि हक़ की दावत और सच्चाई के पैग़ाम के फ़र्ज़ की अदाएगी की शुरूआत घर से ही होनी चाहिए, इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷺ ने सब से पहले अपने वालिद 'आज़र' ही को मुख़ातब किया और फ़रमाया—

'ऐ बाप! ख़ुदापरस्ती और मारफ़ते इलाही के लिए जो रास्ता तूने अपनाया है और जिसे आप बाप-दादा का पुराना रास्ता बताते हैं, यह गुमराही और बातिलपरस्ती का रास्ता है और सीधा रास्ता (राहे हक़) सिर्फ़ वही है, जिसकी मैं दावत दे रहा हूं। ऐ बाप! तौहीद ही नजात का सरचश्मा है, न कि तेरे हाथ के बनाए गए बुतों की पूजा और इबादत। इस राह को छोड़कर हक़ और तौहीद के रास्ते को मज़बूती के साथ अख़्तियार कर, ताकि तुझको अल्लाह की रज़ा और दुनिया और आख़िरत की सआदत हासिल हो।

मगर अफ़सोस कि आज़र पर हज़रत इब्राहीम की नसीहतों का बिल्कुल कोई असर नहीं हुआ, बल्कि हक़ क़ुबूल करने के बजाए आज़र ने बेटे को धमकाना शुरू किया। कहने लगा कि इब्राहीम : अगर तू बुतों की बुराई से

Copyright OfflineDeeniApp

बाज़ न आएगा, तो मैं तुझको पत्थर मार-मारकर हलाक कर दूंगा। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने जब यह देखा कि मामला हद से आगे बढ़ गया और एक तरफ़ अगर बाप के एहतराम का मसला है तो दूसरी तरफ़ फ़र्ज़ की अदायगी हक़ की हिमायत और अल्लाह के हुक्म की इताअ़त का सवाल, तो उन्होंने सोचा और आख़िर वही किया जो ऐसे ऊंचे इंसान और अल्लाह की जलीलुलक़द्र पैग़म्बर के शायाने शान था। उन्होंने बाप की सख़्ती का जवाब सख़्ती से नहीं दिया। हक़ीर समझने और ज़लील करने का रवैया नहीं बरता बल्कि नर्मी, लुत्फ़ व करम और अच्छे अख़्लाक़ के साथ यह जवाब दिया ऐ बाप! अगर मेरी बात का यही जवाब है तो आज से मेरा-तेरा सलाम है। मैं अल्लाह के सच्चे दीन और उसके पैग़ामे हक़ को नहीं छोड़ सकता और किसी हाल में बुतों की परस्तिश नहीं कर सकता। मैं आज तुझसे जुदा होता हूं, मगर ग़ायबाना दरगाहे इलाही में बख़्शिश तलब करता रहूंगा, ताकि तुझको हिदायत नसीब हो और तू अल्लाह के अ़ज़ाब से नजात पा जाए।

क़ौम को इस्लाम की दावत और उससे मुनाज़रा

बाप और बेटे के दर्मियान जब मेल की कोई शक्ल न बनी और आज़र ने किसी तरह इब्राहीम की रुश्द व हिदायत को क़ुबूल न किया, तो हज़रत इब्राहीम ने आज़र से जुदाई अख़्तियार कर ली और अपनी हक़ की दावत और रिसालत के पैग़ाम को फैला दिया और अब सिर्फ़ आज़र ही मुख़ातब न रहा बल्कि पूरी क़ौम को मुख़ातब बना लिया, मगर क़ौम अपने बाप-दादा के दीन को कब छोड़ने वाली थी, उसने इब्राहीम की एक न सुनी और हक़ की दावत के सामने अपने बातिल माबूदों की तरह गूंगे, अंधे और बहरे बन गए और जब इब्राहीम ने ज़्यादा ज़ोर देकर पूछा कि यह तो बतलाओ कि जिनकी तुम पूजा करते हो, ये तुम्हें किसी क़िस्म का भी नफ़ा या नुक़्सान पहुंचाते हैं, कहने लगे कि इन बातों के झगड़े में हम पड़ना नहीं चाहते? हम तो यह जानते हैं कि हमारे बाप-दादा यही करते चले आए हैं, इसलिए हम भी वही कर रहे हैं। तब हज़रत इब्राहीम ने एक ख़ास अन्दाज़ से एक ख़ुदा की हस्ती की तरफ़ तवज्जोह दिलाई, फ़रमाने लगे, मैं तो तुम्हारे इन सब बुतों को अपना दुश्मन

Copyright OfflineDeeniApp

जानता हूं, यानी मैं इनसे बे-ख़ौफ़ व खतर होकर इनसे जंग का एलान करता हूं कि अगर यह मेरा कुछ बिगाड़ सकते हैं तो अपनी हसरत निकाल लें।

अलबत्ता मैं उस हस्ती को अपना मालिक समझता हूं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है! जिसने मुझको पैदा किया और सीधा रास्ता दिखाया, जो मुझको खिलाता-पिलाता यानी रिज़्क़ देता है और जब मैं मरीज़ हो जाता हूं तो वह मुझको शिफ़ा बख़्शता है और मेरी ज़िंदगी और मौत दोनों का मालिक है और यानी ख़ताकारी के वक़्त जिससे यह लालच करता हूं कि वह क़ियामत के दिन मुझको बख़्श दे और मैं उसके हुज़ूर में यह दुआ करता रहता हूं, ऐ परवरदिगार! तू मुझको सही फ़ैसले की ताक़त अ़ता फ़रमा और मुझको नेकों की सूची में दाख़िल कर और मुझको ज़ुबान की सच्चाई अ़ता कर और जन्नते नईम के वारिसों में शामिल कर। मगर आज़र और आज़र की क़ौम के दिल किसी तरह हक़ क़ुबूल करने के लिए नर्म न हुए और उनका इंकार हद से गुज़रता ही गया।

सितारा परस्ती

हज़रत इब्राहीम ﷺ की क़ौम बुतपरस्ती के साथ-साथ सितारा-परस्ती भी करती थी और यह अ़क़ीदा था कि इंसानों की मौत और ह्यात, उनकी रोज़ी, उनका नफ़ा-नुक़्सान, ख़ुश्कसाली, क़हतसाली , जीत और कामियाबी और हार और पस्ती, ग़रज़ दुनिया के तमाम कारख़ाने का नज़्म व नस्क़ तारे और उनकी हरकतों की तासीर पर चल रहा है और यह तासीर उनकी ज़ाती सिफ़तों में से है, इसलिए इनकी ख़ुशनूदी ज़रूरी है और यह उनकी पूजा के बिना मुम्किन नहीं है।

इस तरह हज़रत इब्राहीम ﷺ जिस तरह उनको उनकी सिफ़ली, झूठे माबूदों की हक़ीक़त खोल करके हक़ के रास्ते की तरफ़ दावत दी, उसी तरह ज़रूरी समझा कि उनके झूठे बातिल माबूदों की बे-सबाती और फ़ना के मंज़र को पेश करके इस हक़ीक़त से भी आगाह कर दें कि तुम्हारा यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है कि इन चमकते हुए सितारों, चांद और सूरज को ख़ुदाई ताक़त हासिल है। हरगिज़ नहीं, यह बेकार का ख़्याल और बातिल अ़क़ीदा

Copyright OfflineDeeniApp

थे। मगर ये बातिल-परस्त जबाक अपने ख़ुद के गढ़े हुए बुतों से इतने डरे हुए थे कि उनको बुरा कहने वाले के लिए हर वक़्त यह सोचते थे कि उनके ग़ज़ब में आकर तबाह व बर्बाद हो जाएगा, तो ऐसे औहाम परस्तों के दिलों में बुलन्द सितारों की पूजा के ख़िलाफ़ जज़्बा पैदा करना कुछ आसान काम न था इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷺ ने उनके दिमाग़ के मुनासिब एक अजीब और दिलचस्प तरीक़ा बयान व अख़्तयार किया।

तारों भरी रात थी, एक सितारा ख़ूब रोशन था। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने उसको देखकर फ़रमाया 'मेरा रब यह है।' इसलिए अगर सितारे को रब मान सकते हैं तो यह उनमें सबसे मुमताज़ और रोशन है। लेकिन जब वह अपने तैशुदा वक़्त पर नज़र से ओझल हो गया और उसको यह मजाल न हुई कि एक घड़ी और रहनुमाई करा सकता और कायनात के निज़ाम से हट कर अपने पूजने वालों के लिए ज़ियारतगाह बना रहता, तब हज़रत इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया, मैं छुप जाने वालों को पसंद नहीं करता। यानी जिस चीज़ पर मुझसे भी ज़्यादा तब्दीलियों का असर पड़ता हो और जो जल्द-जल्द इन असरात को क़ुबूल कर लेता हो, वह मेरा माबूद क्यों हो सकता है?

फिर निगाह उठाई तो देखा कि चांद आब व ताब के साथ सामने मौजूद है, उसको देखकर फ़रमाया, 'मेरा रब यह है।' इसलिए यह ख़ूब रोशन है और अपनी ठंडी रोशनी से सारी दुनिया को नूर का गढ़ बनाए हुए है। पस अगर तारों को रब बनाना ही है तो इसी को क्यों न बनाया जाए, क्योंकि यही इसका ज़्यादा हक़दार नज़र आता है।

फिर जब सुबह का वक़्त होने लगा तो चांद के भी हल्के पड़ जाने और छुप जाने का वक़्त आ पहुंचा और जितना ही सूरज के उगने का वक़्त होता गया, चांद का जिस्म देखने वाले की नज़रों से ओझल होने लगा, तो यह देखकर हज़रत इब्राहीम ﷺ ने एक ऐसा जुम्ला फ़रमाया, जिससे चांद के रब होने की मनाही के साथ-साथ एक अल्लाह की हस्ती की तरफ़ क़ौम की तवज्जोह इस ख़ामोशी से फेर दी कि क़ौम इसका एहसास न कर सके और इस बात-चीत का एक ही मक़्सद है यानी 'सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान', वह उनके दिलों में बग़ैर क़स्द व इरादे के बैठ जाए, फ़रमाया—

Copyright OfflineDeeniApp

अगर मेरी रब्बी मालूमात मेरी रहनुमाई न करता, तो मैं भी ज़रूर गुमराह क़ौम में से ही एक होता।'

पस इतना फ़रमाया और ख़ामोश हो गए, इसलिए कि इस सिलसिले की अभी एक कड़ी और बाक़ी है और क़ौम के पास अभी मुक़ाबले के लिए एक हथियार मौजूद है इसलिए इससे ज़्यादा कहना मुनासिब नहीं था।

तारों भरी रात ख़त्म हुई, चमकते सितारे और चांद सब नज़रों से ओझल हो गए, क्यों? इसलिए कि अब आफ़ताब आलमताब का रुख़े रोशन सामने आ रहा है। दिन निकल आया और वह पूरी आब व ताब से चमकने लगा।

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने उसको देखकर फ़रमायाः यह है मेरा रब क्योंकि यह तारों में सबसे बड़ा है और निज़ामे फ़लकी में इससे बडा सितारा हमारे सामने दूसरा नहीं है।' लेकिन दिन भर चमकने और रोशन रहने और पूरी दुनिया को रोशन करने बाद मुक़र्रर वक़्त पर उसने भी इराक़ की सरज़मीन से पहलू बचाना शुरू कर दिया और अंधेरी रात धीरे-धीरे सामने आने लगी। आख़िरकार वह नज़रों से ग़ायब हो गया तो अब वक़्त आ पहुंचा कि इब्राहीम असल हक़ीक़त का एलान कर दें और क़ौम को लाजवाब बना दें कि उनके अ़क़ीदे के मुताबिक़ अगर इन तारों को रब और माबूद होने का दर्जा हासिल है, तो इसकी क्या वजह कि हमसे भी ज़्यादा इनमें तब्दीलियां नुमायाँ हैं और ये जल्द-जल्द उनके असरों से मुतास्सिर होते हैं और अगर माबूद हैं तो इनमें (उफ़ोल) (चमक कर फिर डूब जाना) क्यों है? जिस तरह चमकते नज़र आते थे उसी तरह क्यों न चमकते रहे, छोटे सितारों की रोशनी को चांद ने क्यों मांद कर दिया और चांद के चमकते रुख़ को आफ़ताब के नूर ने किसलिए बेनूर बना दिया?

पस ऐ क़ौम! मैं इन शिर्क भरे अ़क़ीदों से बरी हूं और शिर्क की ज़िंदगी से बेज़ार, बेशक मैंने अपना रुख़ सिर्फ़ उसी एक अल्लाह की ओर कर लिया है जो आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है, मैं 'हनीफ़' (एक अल्लाह की इताअ़त के लिए यक्सू) हूं और मुश्रिक (शिर्क करने वाला) नहीं हूं।

अब क़ौम समझी कि यह क्या हुआ? इब्राहीम ने हमारे तमाम हथियार बेकार और हमारी तमाम दलीलें पामाल करके रख दीं। अब हम इब्राहीम की

Copyright OfflineDeeniApp

इस मज़बूत और खुली दलील को किस तरह रद्द करें और उसकी रोशन दलील का क्या जवाब है? वे इसके लिए बिल्कुल बेबस और पस्त थे और जब कोई बस न चला तो क़ायल होने और हक़ की आवाज़ को क़ुबूल कर लेने के बजाए हज़रत इब्राहीम से झगड़ने लगे और अपने झूठे माबूदों से डराने लगे कि वे तेरी तौहीन का तुझसे ज़रूर बदला लेंगे और तुझको इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया, क्या तुम मुझसे झगड़ते और अपने बुतों से मुझको डराते हो? हालांकि अल्लाह ने मुझ को सही रास्ता दिख दिया है और तुम्हारे पास गुमराही के सिवा कुछ नहीं, मुझे तुम्हारे बुतों की क़तई कोई परवाह नहीं, जो कुछ मेरा रब चाहेगा, वही होगा। तुम्हारे बुत कुछ नहीं कर सकते, क्या तुमको इन बातों से कोई नसीहत हासिल नहीं होती? तुम को तो अल्लाह की नाफ़रानी करने और उसके साथ बुतों को शरीक ठहराने में भी कोई डर नहीं होता? जिसके लिए तुम्हारे पास एक दलील भी नहीं है और मुझसे यह उम्मीद रखते हो कि एक अल्लाह का मानने वाला और दुनिया के अमन का ज़िम्मेदार होकर मैं तुम्हारे बुतों से डर जाऊंगा, काश कि तुम समझते कि फ़सादी कौन है और कौन है सुलहपसन्द और अमनपसन्द?

सही अमन की ज़िंदगी उसी को हासिल है जो एक अल्लाह पर ईमान रखता और शिर्क से बेज़ार रहता है और वही रास्ते पर है।

बहरहाल अल्लाह की यह शानदार हुज्जत थी जो उसने हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़ुबान से बुत-परस्ती के ख़िलाफ़ हिदायत व तब्लीग़ के बाद कवाकिब-परस्ती (तारा-परस्ती) के रद्द में ज़ाहिर फ़रमाई और उनकी क़ौम के मुक़ाबले में उनको रोशन और खुली दलीलों से सरबुलन्दी अ़ता फ़रमाई।

ग़रज़ इन तमाम रोशन और खुली दलीलों के बाद भी जब क़ौम ने इस्लाम की दावत क़ुबूल न की और बुतपरस्ती और कवाकिबपरस्ती में उसी तरह पड़ी रही तो हज़रत इब्राहीम ﷺ ने एक दिन जम्हूर के सामने जंग का एलान कर दिया कि मैं तुम्हारे बुतों के बारे में एक ऐसी चाल चलूंगा जो तुम को ज़िच कर के ही छोड़ेगी।

तर्जुमा– *'और अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे न होने पर ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ ख़ुफ़िया चाल चलूंगा।'*

(अल-अंबिया 21 : 79)

Copyright OfflineDeeniApp

इस मामले से मुताल्लिक़ असल सूरते हाल यह है कि जब इब्राहीम ने आज़र और क़ौम के लोगों को हर तरह बुत-परस्ती के ऐबों को ज़ाहिर कर के उससे बाज़ रहने की कोशिश कर ली और हर क़िस्म की नसीहतों के ज़रिए उनको यह बताने में ताक़त लगा ली कि ये बुत न नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न नुक़्सान और यह कि तुम्हारे काहिनों और पेशवाओं ने उनके बारे में तुम्हारे दिलों पर ख़ौफ़ बिठा दिया है कि अगर उनके इंकारी हो जाओगे तो ये ग़जबनाक हो कर तुमको तबाह कर डालेंगे, ये तो अपनी आई हुई मुसीबत को भी नहीं टाल सकते, मगर आज़र और क़ौम के दिलों पर मुतलक़ असर न हुआ और वे अपने देवताओं की ख़ुदाई ताक़त के अ़क़ीदे से किसी तरह बाज़ न आए, बल्कि काहिनों और सरदारों ने उनको और ज़्यादा पक्का कर दिया और इब्राहीम की नसीहत पर कान धरने से सख़्ती के साथ रोक दिया, तब हज़रत इब्राहीम ने सोचा कि मुझको रुश्द व हिदायत का ऐसा पहलू अख़्तियार करना चाहिए जिससे लोग यह देख लें कि वाक़ई हमारे देवता सिर्फ़ लकड़ियों और पत्थरों की मूर्तियां हैं, जो गूंगी भी हैं, बहरी भी हैं, और अंधी भी और दिलों में यह यक़ीन बैठ जाए कि जब तक उनके बारे में हमारे काहिनों और सरदारों ने जो कुछ कहा था वह बिल्कुल ग़लत और बे सर-पैर की बात थी और इब्राहीम ही की बात सच्ची है। अगर ऐसी कोई शक्ल बन गई तो फिर मेरे लिए हक़ की तब्लीग़ के लिए आसान राह निकल आएगी। यह सोचकर उन्होंने अ़मल का एक निज़ाम तैयार किया, जिसको किसी पर ज़ाहिर नहीं होने दिया और उसकी शुरूआ़त इस तरह की कि बातों-बातों में अपनी क़ौम के लोगों से यह कह गुज़रे कि, *'मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक ख़ुफ़िया चाल चलूंगा।'*

गोया इस तरह उनको तंबीह करनी थी कि 'अगर तुम्हारे देवताओं में कुछ क़ुदरत है, जैसा कि तुम दावा करते हो तो वे मेरी चाल को बातिल और मुझको मजबूर कर दें कि मैं ऐसा न कर सकूं।

मगर चूंकि बात साफ़ न थी, इसलिए क़ौम ने इस ओर कुछ तवज्जोह न दी। इत्तिफ़ाक़ की बात कि क़रीब ही के ज़माने में क़ौम का एक मज़हबी मेला पेश आया। जब सब उसके लिए चलने लगे तो कुछ लोगों ने इब्राहीम

Copyright OfflineDeeniApp

से इसरार किया कि वह भी साथ चलें। हज़रत इब्राहीम ने पहले तो इंकार किया और फिर जब इस तरफ़ से इसरार बढ़ने लगा तो सितारों की तरफ़ निगाह उठाई और फ़रमाने लगे, 'मैं आज कुछ बीमार-सा हूं।'

चूंकि इब्राहीम की क़ौम को कवाकिब-परस्ती की वजह से तारों में कमाल भी था और एतक़ाद भी इसलिए अपने अ़क़ीदे के लिहाज़ से वे यह समझे कि इब्राहीम किसी नहस सितारे के बुरे असर में फंसे हुए हैं और यह सोचकर और किसी तफ़्सील को जाने बग़ैर वे इब्राहीम को छोड़कर मेला चले गए।

अब जबकि सारी क़ौम, बादशाह, काहिन और मज़हबी पेशवा मेले में मसरूफ़ और शराब व कबाब में मशग़ूल थे, तो हज़रत इब्राहीम ﷺ ने सोचा कि वक़्त आ गया है कि अपने अ़मल के निज़ाम को पूरा करूं और आंखों से दिखाकर सब पर वाज़ेह कर दूं कि उनके देवताओं की हक़ीक़त क्या है? वह उठे और सबसे बड़े देवता के हैकल (मन्दिर) में पहुंचे। देखा तो वहां देवताओं के सामने क़िस्म-क़िस्म के हलवों, फलों, मेवों और मिठाइयों के चढ़ावे रखे थे। इब्राहीम ने तंज़ भरे लहजे में चुपके-चुपके इन मूर्तियों से ख़िताब करके कहा कि यह सब कुछ मौजूद है, उनको खाते क्यों नहीं और फिर कहने लगे। मैं बात कर रहा हूं, क्या बात है कि तुम जवाब नहीं देते? और फिर इन सब को तोड़-फोड़ डाला और सबसे बड़े बुत के कांधे पर तीर रखकर वापस चले गए।

तर्जुमा– *'पस चुपके से जा घुसा उनके बुतों में और कहने लगा (इब्राहीम) उनके देवताओं से, क्यों नहीं खाते? तुमको क्या हो गया? क्यों नहीं बोलते? फिर अपने दाहिने हाथ से उन सबको तोड़ डालो?'* (अस्साफ़्फ़ात 37 : 91-93)

तर्जुमा– *'पस कर दिया उनको टुकड़े-टुकड़े, मगर उनमें से बड़े देवता को छोड़ दिया, ताकि (अपने अ़क़ीदे के मुताबिक़) वे उसकी ओर रुजू करें (कि यह क्या हो गया?')* (अल-अंबिया 21 : 58)

जब लोग मेले से वापस आए तो हैकल (मन्दिर) में बुतों का यह हाल पाया, बहुत बिगड़े, और एक दूसरे से पूछने लगे कि यह क्या हुआ और किसने किया? इनमें वे भी थे, जिनके सामने हज़रत इब्राहीम *'तल्लाहि ल त-'अकीदन-न*

Copyright OfflineDeeniApp

असनामकुम' (अल-आबेया 21-57) कह चुके थे, उन्होंने फ़ौरन कहा कि यह उस आदमी का काम है, जिसका नाम इब्राहीम है। वही हमारे देवताओं का दुश्मन है।

तर्जुमा–'वे कहने लगे, यह मामला हमारे ख़ुदाओं के साथ किसने किया है? बेशक वह ज़रूर ज़ालिम है। (इनमें से कुछ) कहने लगे, हमने एक जवान की ज़ुबान से इन बुतों का (बुराई के साथ) ज़िक्र सुना है, उसको इब्राहीम कहा जाता है। (यानी यह उसका काम है) (अल-अंबिया 21 : 59-60)

काहिनों और सरदारों ने यह सुना तो ग़म व ग़ुस्से से लाल हो गए और कहने लगे, इसको मज्मे के सामने पकड़ कर लाओ, ताकि सब देखें कि मुजरिम कौन आदमी है?

इब्राहीम सामने लाए गए तो बड़े रौब व दाब से उन्होंने पूछाः क्यों इब्राहीम! तूने हमारे देवताओं के साथ यह सब कुछ किया है?

तर्जुमा–'उन्होंने कहाः इब्राहीम को लोगों के सामने लाओ ताकि वे देखें। वे कहने लगे, क्या इब्राहीम! तूने हमारे देवताओं के साथ यह किया है?' (अल-अंबिया 21 : 61-62)

इब्राहीम ने देखा कि अब वह बेहतरीन मौक़ा आ गया है, जिसके लिए मैंने यह तदबीर अख़्तियार की। मज्मा मौजूद है। लोग देख रहे हैं कि उनके देवताओं का क्या हश्र हो गया इसलिए अब काहिनों, मज़हबी पेशवाओं को लोगों की मौजूदगी में उनके बातिल अ़क़ीदे पर शर्मिंदा कर देने का वक़्त है, तो आम लोगों को आंखों देखतें मालूम हो जाए कि आज तक इन देवताओं से मुताल्लिक़ जो कुछ हमसे काहिनों और पुजारियों ने कहा था, यह सब उनका मक्र व फ़रेब था। मुझे उनसे कहना चाहिए कि यह सब उस बड़े बुत की कार्रवाई है, उससे मालूम करो? ला महाला वे यही जवाब देंगे कि कहीं बुत भी बोलते और बात करते हैं, तब मेरा मतलब हासिल है और फिर मैं उनके अ़क़ीदे का पोल लोगों के सामने खोलकर सही अ़क़ीदे की तलक़ीन कर सकूंगा और बताऊंगा कि किस तरह वे बातिल और गुमराही में मुब्तला हैं। उस वक़्त उन काहिनों और पुजारियों के साथ शर्मिन्दगी के सिवा क्या होगा, इसलिए हज़रत इब्राहीम ने जवाब दिया–

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा–*'इब्राहीम ने कहा, बल्कि इनमें से इस बड़े बुत ने यह किया है। पस अगर ये (तुम्हारे देवता) बोलते हों, तो इनसे मालूम कर लो।'*

(अल-अंबिया, 21 : 63)

इब्राहीम की इस यक़ीनी हुज्जत और दलील का काहिनों और पुजारियों के पास क्या जवाब हो सकता था? वह शर्म से डूबे हुए थे, दिलों में ज़लील व रुस्वा थे और सोचते थे कि क्या जवाब दें?

आम लोग भी आज सब कुछ समझ गए और उन्होंने अपनी आंखों से यह मंज़र देख लिया जिसके लिए वे तैयार न थे, यहां तक कि छोटे और बड़े सभी को दिल में इक़रार करना पड़ा कि इब्राहीम ज़ालिम नहीं है, बल्कि ज़ालिम हम ख़ुद हैं कि ऐसे बेदलील और बातिल अ़क़ीदे पर यक़ीन रखते हैं, तब शर्म से सिर झुकाकर कहने लगे, 'इब्राहीम! तू ख़ूब जानता है कि इन देवताओं में बोलने की ताक़त नहीं है, ये तो बेजान मूर्तियां हैं।'

तर्जुमा–*'पस उन्होंने अपने जी में सोचा, फिर कहने लगे, बेशक तुम ही ज़ालिम हो। इसके बाद अपने-अपने सरों को नीचे झुका कर कहने लगे, (ऐ इब्राहीम!) तू ख़ूब जानता है कि ये बोलने वाले नहीं हैं।*

(अल-अंबिया, 21 : 56)

इस तरह हज़रत इब्राहीम की हुज्जत व दलील कामयाब हुई और दुश्मनों ने मान लिया कि ज़ालिम हम ही हैं और उनको तमाम लोगों के सामने ज़ुबान से इक़रार करना पड़ा कि हमारे ये देवता जवाब देने और बोलने की ताक़त नहीं रखते, नफ़ा व नुक़्सान का मालिक होना दूर की बात है, तो अब इब्राहीम ने थोड़े में, मगर जामे लफ़्ज़ों में उनको नसीहत भी की और मलामत भी और बताया कि जब ये देवता न नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न नुक़्सान, तो फिर ये ख़ुदा और माबूद कैसे हो सकते हैं, अफ़सोस! तुम इतना भी नहीं समझते या अक़्ल से काम नहीं लेते? फ़रमाने लगे–

'क्या तुम अल्लाह तआ़ला को छोड़कर उन चीज़ों की पूजा करते हो जो तुमको न कुछ नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न नुक़्सान दे सकते हैं, तुम पर अफ़सोस है और तुम्हारे इन झूठे माबूदों पर भी, जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते।' (अल-अंबिया 21 : 66-67)

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा–'पस वे सब हल्ला करके इब्राहीम के गिर्द जमा हो गए। इब्राहीम ने कहा कि जिन बुतों को हाथ से गढ़ते हो, उन्हीं को फिर पूजते हो और असल यह है कि अल्लाह तआ़ला ही ने तुमको पैदा किया है और उनको भी जिन कामों को तुम करते हो।' (अस्साफ़्फ़ात, 37 : 95-96)

हज़रत इब्राहीम के इस वाज़ व नसीहत का असर यह होना चाहिए था कि तमाम क़ौम अपने बातिल अ़क़ीदे से तौबा करके मिल्लते हनीफ़ी को अख़्तियार कर लेती और टेढ़ा रास्ता छोड़कर सीधे रास्ते पर चल पड़ती, लेकिन दिलों का टेढ़, नफ़्स की सरकशी, घमंडी ज़ेहनियत और बातिनी ख़बासत व नीचपन ने इस ओर न आने दिया और इसके ख़िलाफ़ उन सबने इब्राहीम की अदावत व दुश्मनी का नारा बुलन्द कर दिया और एक दूसरे से कहने लगे कि अगर देवताओं की ख़ुशनूदी चाहते हो तो उसको इस गुस्ताख़ी और मुजरिमाना हरकत पर सख़्त सज़ा दो और धधकती आग में जला डालो, ताकि उसकी तब्लीग़ व दावत का क़िस्सा ही पाक हो जाए।

बादशाह को इस्लाम की दावत और उसका मुनाज़रा

अभी ये मश्विरे हो ही रहे थे कि थोड़ा-थोड़ा करके ये बातें वक़्त के बादशाह तक पहुंच गईं, उस ज़माने में इराक़ के बादशाह का लक़ब नमरूद होता था और ये पब्लिक के सिर्फ़ बादशाह ही नहीं होते थे, बल्कि ख़ुद को उनका रब और मालिक मानते थे और पब्लिक भी दूसरे देवताओं की तरह उसको अपना ख़ुदा और माबूद मानती और उसकी इस तरह पूजा करती थी, जिस तरह देवताओं की, बल्कि उनसे भी पास व अदब के साथ पेश आती थी, इसलिए कि वह अक़्ल व शऊर वाला भी होता था और ताज व तख़्त का मालिक भी।

नमरूद को जब यह मालूम हुआ तो आपे से बाहर हो गया और सोचने लगा कि उस आदमी की पैग़म्बराना दावत व तब्लीग़ की सरगर्मियां अगर इसी तरह जारी रहीं तो यह मेरे मालिक होने, रब होने, बादशाह होने और अल्लाह होने से भी सब पब्लिक को दूर कर देगा और इस तरह बाप-दादा के मज़हब के साथ-साथ मेरी यह हुकूमत भी गिर जाएगी, इसलिए इस क़िस्से का शुरू

Copyright OfflineDeeniApp

ही में ख़त्म कर देना बेहतर है।

यह सोचकर उसने हुक्म दिया कि इब्राहीम को हमारे दरबार में हाज़िर करो। इब्राहीम से मालूम किया कि तू बाप-दादा के दीन की मुख़ालफ़त किस लिए करता है और मुझको रब मानने से तुझे क्यों इंकार है?

इब्राहीम ﷺ ने कहा कि मैं एक अल्लाह का मानने वाला हूं, उसके अलावा किसी को उसका शरीक नहीं मानता। सारी कायनात और तमाम आलम उसी की मख़्लूक़ हैं और वही इन सबका पैदा करने वाला और मालिक है। तू भी उसी तरह एक इंसान है, जिस तरह हम सब इंसान हैं, फिर तू किस तरह रब या ख़ुदा हो सकता है और किस तरह ये गूंगे-बहरे लकड़ी के बुत ख़ुदा हो सकते हैं? मैं सही राह पर हूं और तुम सब ग़लत राह पर हो, इसलिए मैं हक़ की तब्लीग़ को किस तरह छोड़ सकता हूं और तुम्हारे बाप-दादा के अपने गढ़े हुए दीन को कैसे अख़्तियार कर सकता हूं?

नमरूद ने इब्राहीम से मालूम किया कि अगर मेरे अलावा तेरा कोई रब है तो उसकी ऐसी ख़ूबी बयान कर कि जिसकी क़ुदरत मुझमें न हो?

तब इब्राहीम ने फ़रमाया, मेरा रब वह है जिसके क़ब्ज़े में मौत व ह्यात है, वही मौत देता है और वही ज़िंदगी बख़्शता है। टेढ़ी समझ वाला नमरूद, मौत व हयात की हक़ीक़त से ना आश्ना नमरूद कहने लगा, इस तरह मौत और ज़िंदगी तो मेरे क़ब्ज़े में भी है और यह कहकर उसी वक़्त एक बेक़सूर आदमी के बारे में जल्लाद को हुक्म दिया कि उसकी गरदन मार दो और मौत के घाट उतार दो। जल्लाद ने फ़ौरन हुक्म पूरा किया और क़त्ल की सज़ा पाये हुए मुज्रिम को जेल से बुलाकर हुक्म दिया कि जाओ हमने तुम्हारी जान बख़्शी की और फिर इब्राहीम की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगा— देखा, मैं भी किस तरह ज़िंदगी बख़्शता और मौत देता हूं, फिर तेरे अल्लाह की ख़ास बात क्या रही?

इब्राहीम समझ गए कि नमरूद या तो मौत और ज़िंदगी की असल हक़ीक़त नहीं जानता और या लोगों और पब्लिक को ग़लतफ़हमी में डाल देना चाहता है, ताकि वे इस फ़र्क़ को समझ न सकें कि ज़िंदगी बख़्शना इसका नाम नहीं है बल्कि न से हां करने का नाम ज़िंदगी बख़्शना है। और इसी तरह किसी

Copyright OfflineDeeniApp

को क़त्ल या फांसी से बचा लेना मौत का मालिक होना नहीं है। मौत का मालिक वही है जो इंसानी रूह को उसके जिस्म से निकाल कर अपने क़ब्ज़े में कर लेता है, इसलिए बहुत से फांसी की सज़ा पाए हुए और तलवार की ज़द में आए हुए लोग ज़िंदगी पा जाते हैं और बहुत से क़त्ल व फांसी से बचाए हुए इंसान मौत के घाट चढ़ जाते हैं और कोई ताक़त उनको रोक नहीं सकती और अगर ऐसा हो सकता तो इब्राहीम से बातें करने वाला नमरूद गद्दी पर न बैठा होता, बल्कि उसके ख़ानदान का पहला आदमी ही आज भी उस ताज व तख़्त का मालिक नज़र आता, मगर न मालूम कि इराक़ के इस राज्य के कितने दावेदार ज़मीन के अन्दर दफ़न हो चुके हैं और अभी कितनों की बारी है।

फिर भी इब्राहीम ने सोचा कि अगर मैंने इस मौक़े पर मौत और ज़िंदगी के बारीक फ़लसफ़े पर वहस शुरू कर दी, तो नमरूद का मक़्सद पूरा हो जाएगा और लोगों को ग़लत रुख़ पर डालकर असल मामले को उलझा देगा और इस तरह मेरा नेक मक़्सद पूरा न हो सकेगा और हक़ की तब्लीग़ के सिलसिले में भरी मह्फ़िल में नमरूद को लाजवाब करने का मौक़ा हाथ से जाता रहेगा, क्योंकि वहस व मुबाहसा और जद्ल व मुनाज़रा मेरा असल मक़्सद नहीं है, वल्कि लोगों के दिल व दिमाग़ में एक अल्लाह का यक़ीन पैदा करना मेरा एक ही मक़्सद है, इसलिए उन्होंने इस दलील को नज़रंदाज़ करके समझाने का एक दूसरा तरीक़ा अपनाया और ऐसी दलील पेश की, जिसे सुबह व शाम हर आदमी आंखों से देखता और वग़ैर किसी मंतक़ी दलील के दिन व रात की ज़िंदगी में उससे दोचार होता रहता है।

इब्राहीम ने फ़रमायाः मैं उस हस्ती को 'अल्लाह' कहता हूं जो हर दिन सूरज को पूरव से लाता और मग़रिव की तरफ़ ले जाता है, पस अगर तू भी इसी तरह ख़ुदाई का दावा करता है, तो इसके ख़िलाफ़ सूरज को मग़रिव से निकाल और मशरिक़ में छिपा। यह सुनकर नमरूद घबरा गया और उससे कोई जवाव न वन पड़ा और इस तरह इब्राहीम عليه السلام की ज़ुबान से नमरूद पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हुई।

नमरूद इस दलील से घवराया क्यों और उसके पास इसके मुक़ाबले में

Copyright OfflineDeeniApp

ग़लत समझने की गुजाइश क्या न रही? यह इसलिए कि इब्राहीम की दलील का हासिल यह था कि मैं एक ऐसी हस्ती को अल्लाह मानता हूं, जिसके बारे में मेरा अ़क़ीदा यह है कि यह सारी कायनात और इसका सारा निज़ाम उस ही ने बनाया है और उसने इस पूरे निज़ाम को अपनी हिक्मत के क़ानून से ऐसा कस दिया है कि उसकी कोई चीज़ मुक़र्रर जगह से पहले अपनी जगह से हट नहीं सकती है और न इधर-उधर हो सकती है। तुम इस पूरे निज़ाम में से सूरज ही को देखो कि दुनिया उससे कितने फ़ायदे हासिल करती है। साथ ही अल्लाह ने उसके निकलने और डूबने का भी एक निज़ाम मुक़र्रर कर दिया है, पस अगर सूरज लाख बार भी चाहे कि वह इस निज़ाम से बाहर हो जाए तो इस पर उसे क़ुदरत नहीं है, क्योंकि उसकी बागडोर एक अल्लाह की क़ुदरत के क़ब्ज़े में है और उसको बेशक यह क़ुदरत है कि जो चाहे कर गुज़रे, लेकिन वह करता वही है जो उसकी हिक्मत का तक़ाज़ा है।

इसलिए अब नमरूद के लिए तीन ही शक्लें जवाब देने की हो सकती थीं, या वह यह कहे कि मुझे सूरज पर पूरी क़ुदरत हासिल है और मैंने भी यह सारा निज़ाम बनाया है, मगर उसने यह जवाब इसलिए नहीं दिया कि वह ख़ुद इसका क़ायल नहीं था कि यह सारी कायनात उसने बनाई है और सूरज की हरकत उसकी क़ुदरत के क़ब्ज़े में है, बल्कि वह तो ख़ुद को अपनी रियाया का रब और देवता कहलाता था और बस।

दूसरी शक्ल यह थी कि वह कहता, 'मैं इस दुनिया को किसी की पैदा की हुई नहीं मानता और सूरज तो मुस्तक़िल ख़ुद देवता है, उसके अख़्तियार में ख़ुद बहुत कुछ है, मगर उसने यह भी इसलिए न कहा कि अगर वह ऐसा कहता, तो इब्राहीम का वही ऐतराज़ सामने आ जाता जो उन्होंने सबके सामने सूरज के रब होने के ख़िलाफ़ उठाया था कि अगर वह 'रब' है तो इबादत करने वालों और पुजारियों से ज़्यादा इस माबूद और देवता में तब्दीलियां और फ़ना के असरात क्यों मौजूद हैं?' 'रब' को फना और तब्दीली से क्या वास्ता? और क्या उसकी क़ुदरत में यह है कि अगर वह चाहे तो मुक़र्रर वक़्त से पहले या बाद निकले या डूब जाए?

तीसरी शक्ल यह थी कि इब्राहीम के चैलेंज को क़ुबूल कर लेता और

Copyright OfflineDeeniApp

मग़रिब से निकाल कर दिखा देता, मगर नमरूद चूंकि इन तीनों शक्लों में से किसी शक्ल में जवाब देने की क़ुदरत न रखता था, इसलिए परेशान और लाजवाब हो जाने के अलावा उसके पास कोई दूसरा रास्ता ही नहीं बचा।

ग़रज़ हज़रत इब्राहीम ﷺ ने सबसे पहले अपने वालिद आज़र से इस्लाम के सिलसिले की बात कही, हक़ का पैग़ाम सुनाया और सीधा रास्ता दिखलाया। इसके बाद आम लोग और सब लोगों के सामने हक़ को मान लेने के लिए फ़ितरत के बेहतरीन उसूल और दलील पेश किए, नर्मी से, मीठी बातों से मगर मज़बूत और रोशन हुज्जत व दलील के साथ उन पर हक़ को वाज़ेह किया और सबसे आख़िर में बादशाह नमरूद से मुनाज़रा किया और उस पर रोशन कर दिया कि रब होने और माबूद होने का हक़ सिर्फ़ एक अल्लाह ही के लिए सबसे मुनासिब है और बड़े-से-बड़े शहंशाह को भी यह हक़ नहीं है कि वह उसकी बराबरी का दावा करे, क्योंकि वह और कुल दुनिया उसी की मख़्लूक़ है और वजूद व अदम के क़ैद व बन्द में गिरफ़्तार, मगर इसके बावजूद कि बादशाह, आज़र और आम लोग, हज़रत इब्राहीम की दलीलों से लाजवाब होते और दिलों में क़ायल, बल्कि बुतों के वाक़िए में तो ज़ुबान से इक़रार करना पड़ा कि इब्राहीम जो कुछ कहता है, वही हक़ है और सही व दुरुस्त, फिर भी उनमें से किसी ने सीधे रास्ते को न अपनाया और हक़ क़ुबूल करने से बचते रहे और इतना ही नहीं, बल्कि इसके ख़िलाफ़ अपनी नदामत और ज़िल्लत से मुतास्सिर होकर बहुत ज़्यादा ग़ैज़ व ग़ज़ब में आ गए और बादशाह से रियाया तक सब ने एक होकर फ़ैसला कर लिया कि देवताओं की तौहीन और बाप-दादा के दीन की मुख़ालफ़त में इब्राहीम को धधकती आग में जला देना चाहिए, क्योंकि ऐसे सख़्त मुजरिम की सज़ा यही हो सकती है और देवताओं को हक़ीर समझने का बदला इसी तरह लिया जा सकता है।

आग का ठंडा हो जाना

इस मरहले पर पहुंच कर इब्राहीम ﷺ की जद्दोजेहद का मामला ख़त्म हो गया और अब दलीलों की ताक़त के मुक़ाबले में माद्दी ताक़त व सतवत ने मुज़ाहरा शुरू कर दिया, बाप उसका दुश्मन, लोग उसके मुख़ालिफ़ और

Copyright OfflineDeeniApp

वक़्त का बादशाह उसे परेशान करने को तैयार, एक हस्ती और चारों ओर से मुख़ालफ़त की आवाज़, दुश्मनी के नारे और नफ़रत व हक़ारत के साथ कड़ा बदला और ख़ौफ़नाक सज़ा के इरादे, ऐसे वक़्त में उसकी मदद कौन करे और उसकी हिमायत का सामान कैसे जुटे?

मगर इब्राहीम ﷺ को न इसकी परवाह थी और न उसका डर। वह इसी तरह बे-ख़ौफ़ व ख़तर और मलामत करने वालों की मलामत से बेनियाज़, हक़ के एलान में मस्त और रुश्द व हिदायत की दावत में लगे हुए थे। अलबत्ता ऐसे नाज़ुक वक़्त में जब तमाम माद्दी सहारे ख़त्म, दुन्यवी अस्बाब नापैद और हिमायत व नुसरत के ज़ाहिरी अस्बाब मफ़्क़ूद हो चुके थे, इब्राहीम को उस वक़्त भी एक ऐसा बड़ा जबरदस्त सहारा मौजूद था, जिसको तमाम सहारों का सहारा और तमाम मददों का मदद करने वाला कहा ज़ाता है और वह एक अल्लाह का सहारा था। उसने अपने जलीलुल क़द्र पैग़म्बर, क़ौम के बड़े दर्जे के हादी और रहनुमा को बे-यार व मददगार न रहने दिया और दुश्मनों के तमाम मंसूबों को ख़ाक में मिला दिया।

हुआ यह कि नमरूद और क़ौम ने इब्राहीम की सज़ा के लिए एक मख़्सूस जगह पर कई दिन लगातार आग धधकाई यहां तक कि उसके शोलों से आस-पास की चीज़ें तक झुलसने लगीं। जब इस तरह बादशाह और क़ौम को पूरा इत्मीनान हो गया कि अब इब्राहीम के इससे बच निकलने की कोई शक्ल बाक़ी नहीं रही, तब एक गोफन में इब्राहीम को बिठा कर दधकती हुई आग में फेंक दिया गया।

उस वक़्त आग में जलाने की तासीर बख़्शने वाले ने आग को हुक्म दिया कि वह इब्राहीम पर अपने जलाने का असर न करे। नारी होते हुए और (आग के) अ़नासिर का मज्मूआ़ होते हुए भी उसके हक़ में सलामती के साथ सर्द पड़ जाए।

आग उसी वक़्त हज़रत इब्राहीम के हक़ में 'बरदंव-व सलामा' बन गई और दुश्मन उनको किसी क़िस्म का नुक़्सान न पहुंचा सके और इब्राहीम ﷺ दहकती आग में सालिम व महफ़ूज़ दुश्मनों के नरग़े से निकल गए।

'दुश्मन अगर क़वीस्त, निगहबां क़वी तरअस्त'

Copyright OfflineDeeniApp

(दुश्मन अगर ताक़तवर है, निगहबान उससे ज़्यादा ताक़त वाला है)

इस जगह एक मज़हबी इंसान के दिल में इत्मीनान और सुकूने ख़ातिर के लिए यह काफ़ी है कि वह आग के 'बर्दव-व सलामा' (ठंडी और सलामती वाली) हो जाने को इसलिए सही और हक़ीक़त पर मब्नी समझे कि उसने अपनी अक़्ल और शऊर का एक तो इस मामले में इम्तिहान कर लिया है कि क़ुरआन अज़ीज़ की तालीम वह्य इलाही की तालीम है और उसको लाने वाली हस्ती की ज़िंदगी का हर पहलू पैग़म्बराना मासूमियत के साथ जुड़ा हुआ है और यह कि वह जिन मोजज़ाना हक़ीक़तों की इत्तिला देता और अल्लाह की वह्य के ज़रिए हम को सुनाता है, वे अक़्ल के लिए अगरचे हैरान कर देने वाली हैं, लेकिन अक़्ल की निगाह में महाल और नामुम्किन नहीं, इसलिए इस मुख़्बिरे सादिक़ (की जिसकी ज़िंदगी की सदाक़त का हर पहलू से इम्तिहान कराया गया है) कि इस क़िस्म की ख़बरें बेशक सही और हक़ हैं और क़ैसरे रूम हिरक़्ल आज़म (हरक्यूवस) के क़ौल के मुताबिक़ कि 'जो आदमी इंसानों के साथ झूठ नहीं बोलता और उससे दग़ा न फ़रेब नहीं करता, वह एक लम्हे के लिए भी अल्लाह की जानिब किसी ग़लत बात को मंसूब नहीं कर सकता और कभी उस पर झूठ बोलने की जुर्रात नहीं कर सकता।' और मज़हबी ज़िंदगी में साफ़ और सीधी राह भी यही है कि जिस मज़हब की मुकम्मल तालीम को अक़्ल की कसौटी पर परख कर हर तरह इत्मीनान के क़ाबिल पा लिया जाए, उसकी बताई हुई कुछ ऐसी बातों पर, जो अक़्ल के लिए सिर्फ़ हैरानी में डालने वाली हों, मगर इसके नज़दीक मुहाले ज़ाती और नामुम्किन जैसी न हों, फ़लसफ़ियाना छेड़ख़ानियों के बग़ैर ईमान ले आया जाए और साहिबे वह्य ﷺ की इस यक़ीनी और ग़ैर-मश्कूक इत्तिला को सूरज की रोशनी से ज़्यादा रोशन समझा जाए और यक़ीन रखा जाए कि तमाम चीज़ों में ख़वास और तासीरात पैदा करने वाले अल्लाह में यह भी क़ुदरत है कि जब चाहे, उनकी दी हुई तासीर और ख़ास्से को सलब कर ले और जब चाहे दूसरी कैफ़ियतों के साथ बदल डाले। माद्दापरस्तों के लिए अगर यह राह इत्मीनान वाली न हो और फ़लसफ़े के शैदाई मज़हब के इस मसूअले को भी फ़लसफ़ियाना मूशगाफ़ियों (बाल की खाल निकालने) से पाक न रहने देना

Copyright OfflineDeeniApp

चाहते हों, तो उनके लिए भा इस मोजज़े से इंकार की कोई गुंजाइश नहीं है, इसलिए कि हम यह मान रहे हैं कि आग की तबई ख़ासियत जला देना है और जो चीज़ भी उसमें पड़ेगी, जल जाएगी, लेकिन इसकी क्या वजह कि कुछ कपड़े और वे चीज़ें जिनको 'फ़ायर प्रूफ़' कहा जाता है, आग की लपटों के अन्दर क्यों महफ़ूज़ रहती हैं और उनको आग जला कर क्यों नहीं ख़ाकस्तर (धूल में मिला देना) बना देती।

तुम कहोगे कि आग दस्तूर के मुताबिक़ जलाने की ख़ासियत रखती है, मगर कपड़े या चीज़ पर एक ऐसा मसाला लगा दिया गया है, जिस पर आग अपना असर नहीं कर सकती, यह नहीं कि आग ने अपने जलाने की ख़ासित ख़त्म कर दी है।

तो एक मज़हबी इंसान के लिए इसी तरह आपके फ़लसफ़ियाना रंग में यह जवाब देने का क्यों हक़ नहीं है कि नमरूद और उसकी क़ौम की धधकती आग में जलाने की ख़ासियत पहले की तरह वैसे ही बाक़ी थी, जैसे आग के अनासिर (तत्त्वों) में मौजूद है, मगर इब्राहीम के जिस्म के लिए बे-असर साबित हुई, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि तुम्हारे 'फ़ायर प्रूफ़' में इंसान की सोची हुई तदबीरों का दख़ल है और इसलिए हर सीखने वाले को एक फ़न की तरह सीख लेने का मौक़ा हासिल है और इब्राहीम के जिस्म का आग से महफ़ूज़ हो जाना वे-वास्ता अल्लाह की तदबीर के ज़ेरे असर था और इस क़िस्म का अमल पैग़म्बर की सच्चाई और दुश्मनों के मुक़ाबले में उसकी बरतरी के लिए कभी-कभी हिक्मत के तक़ाज़ों के तौर पर उसकी तरफ़ से सामने आ जाता और शरीअ़त की इस्तिलाह में 'मोजज़ा' गिना जाता है। बेशक वह न फ़न होता है और न वसाइल व अस्बाब से पैदा की हुई तदबीरों का मोहताज, पस अल्लाह की मख़्लूक़ 'इंसान' को अगर यह क़ुदरत हासिल है कि किसी चीज़ की तबई ख़ासियतों को कुछ चीज़ों पर असरअंदाज़ न होने दे, तो चीज़ों के ख़्वास के पैदा करने वाले को क्यों यह क़ुदरत हासिल नहीं कि वह किसी ख़ास मौक़े पर चीज़ की तासीर को अमल से रोक दे।

और अगर आज साइंस की खोज के मुताबिक़ फ़िज़ा में ऐसी गैसें मौजूद हैं, जिनके बदन पर असर करने से आग के जलन से महफ़ूज़ रहा जा सकता

Copyright OfflineDeeniApp

है, तो गैसों के पैदा करने वाले ख़ालिक़ के लिए कौन-सी ऐसी रुकावट है कि नमरूद की धधकती आग में उनको इब्राहीम तक न पहुंचा दे और इस तरह आग को इब्राहीम के हक़ में 'बरदंव-व सलामा' (ठंडी व सलामती) न बना दे।

आज भी हो जो ब्राहीम का ईमां पैदा
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा।

मुख़्तसर यह कि बदबख़्त क़ौम ने कुछ न सुना और किसी भी तरह रुश्द व हिदायत को क़ुबूल न किया और इब्राहीम की बीवी हज़रत सारा और उनके बिरादरज़ादा हज़रत लूत के अलावा कोई एक भी ईमान नहीं लाया। तमाम क़ौम ने हज़रत इब्राहीम को जला देने का फ़ैसला कर लिया और दहकती आग में डाल दिया, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने दुश्मनों के इरादों को ज़लील व रुसवा करके हज़रत इब्राहीम के हक़ में आग को 'बरदंव-व सलामा' बना दिया, तो अब हज़रत इब्राहीम ने इरादा किया कि किसी दूसरी जगह जाकर पैग़ामे इलाही सुनाएं और हक़ की दावत पहुंचाएं और यह सोचकर 'फ़िदान' आराम से हिजरत का इरादा कर लिया।

तर्जुमा–'और इब्राहीम ने कहा, मैं जाने वाला हूं अपने परवरदिगार की तरफ़, क़रीब ही वह मेरी रहनुमाई करेगा।' (अस्साफ़्फ़ात 37 : 99)

यानी अब मुझे किसी ऐसी आबादी में हिजरत करके चला जाना चाहिए, जहां अल्लाह की आवाज़ हक़ पसन्द कान से सुनी जाए, अल्लाह की ज़मीन तंग नहीं है, यह नहीं और सही, मेरा काम पहुंचाना है, 'अल्लाह अपने दीन की इशाअत का सामान ख़ुद पैदा कर देगा।

और किलदानीयीन की ओर हिजरत

बहरहाल हज़रत इब्राहीम अपने बाप आज़र और क़ौम से जुदा होकर फ़रात के पच्छिमी किनारे के क़रीब एक बस्ती में चले गए जो आज किलदानीयीन के नाम से मशहूर है। यहां कुछ दिनों क़ियाम किया और हज़रत लूत और हज़रत सारा दोनों सफ़र में साथ रहे। कुछ दिनों के बाद यहां से हरान या हारान की ओर चले गए और वहां 'दीने हनीफ़' की तब्लीग़ शुरू कर दी, मगर इस मुद्दत में बराबर अपने बाप आज़र के लिए बारगाहे इलाही में

Copyright OfflineDeeniApp

इस्तग़फ़ार करते और उसकी हिदायत के लिए दुआ मांगते रहे और यह सब कुछ इसलिए किया कि वे निहायत दिल के नर्म, रहीम और बहुत ही नर्म दिल और बुर्दबार थे। इसलिए आज़र की ओर से हर क़िस्म की अ़दावत के मुज़ाहरों के बावजूद उन्होंने आज़र से यह वायदा किया था कि अगरचे मैं तुझसे जुदा हो रहा हूं और अफ़सोस कि तूने अल्लाह की रुश्द व हिदायत पर तवज्जोह न की, फिर भी मैं बराबर तेरे हक़ में अल्लाह की मग़्फ़िरत की दुआ करता रहूंगा। आख़िरकार हज़रत इब्राहीम को अल्लाह की वह्य ने मुत्तला किया कि आज़र ईमान लाने वाला नहीं है और यह उन्हीं लोगों में से है जिन्होंने अपनी नेक इस्तेदाद को फ़ना करके ख़ुद को उसका मिस्दाक़ बना लिया।

तर्जुमा– *'अल्लाह ने मोहर लगा दी उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर परदा है।'* (अल-बक़रः 2/7)

हज़रत इब्राहीम को जब यह मालूम हो गया तो आपने आज़र से अपने अलग होने का साफ़ एलान कर दिया।

फ़लस्तीन की ओर हिजरत

हज़रत इब्राहीम इस तरह तब्लीग़ करते-करते फ़लस्तीन पहुंचे। इस सफ़र में भी उनके साथ हज़रत सारा ﵂, हज़रत लूत ﵇ और लूत की बीवी थीं। हज़रत इब्राहीम फ़लस्तीन के पच्छिमी हिस्से में ठहरे, उस ज़माने में यह इलाक़ा कन्आनियों के इक़्तिदार में था, फिर क़रीब ही शीकम (नाबलस) में चले गए और वहां कुछ दिनों ठहरे रहे, इसके बाद यहां भी ज़्यादा दिनों क़ियाम नहीं फ़रमाया और मग़्रिब की तरफ़ ही बढ़ते चले गए, यहां तक कि मिस्र तक जा पहुंचे।

हज़रत इब्राहीम ﵇ से मुताल्लिक़ दूसरे मस्अले

हदीस की किताबों में हज़रत इब्राहीम ﵇ के ताल्लुक़ से इस तरह कहा गया है कि–

'नहीं झूठ बोला कभी हरगिज़ इब्राहीम ﵇, मगर तीन झूठ'

(बुख़ारी शरीफ़)

Copyright OfflineDeeniApp

तफ़्सील यह है—

1. हज़रत इब्राहीम ﷺ की तबियत की ख़राबी—इब्राहीम के वाक़ियों में क़ुरआन ने इस मौक़े पर, जबकि इब्राहीम और क़ौम के कुछ लोगों के दर्मियान मेले की शिर्कत के लिए बात-चीत हो रही थी, इब्राहीम ﷺ का क़ौल नक़ल किया है—*'क़ा-ल इन्नी सक़ीम'* (इब्राहीम ने फ़रमाया, मैं बीमार हूं) इस जुम्ले से एक ख़ाली ज़ेहन इंसान एक लम्हे के लिए भी यह नहीं सोच सकता कि इसमें झूठ का भी हिस्सा हो सकता है, क्योंकि इसमें ज़िक्र 'तबियत की अ़लालत' का है, जिसको इब्राहीम ही ख़ूब जान सकते हैं। इसमें दूसरे को ख़ामख़ाही शक और तरद्दुद का कौन-सा मौक़ा है, यहां तक कि अगर एक आदमी ज़ाहिरी निगाहों में तन्दुरुस्त नज़र आता हो, तब भी ज़रूरी नहीं है कि वह वाक़ई तन्दुरुस्त है। हो सकता है, उसका मिज़ाज किसी वजह से एतदाल की हद पर न हो और ऐसी तक्लीफ़ में पड़ा हो जिसका इज़्हार किए बग़ैर दूसरा उसको न समझ सके।

2. बुतों की तोड़-फोड़—बुतों की तोड़-फोड़ के सिलसिले में जब इब्राहीम से मालूम किया गया तो हज़रत इब्राहीम का जवाब इस तरह नक़ल किया गया है—

तर्जुमा—'इब्राहीम ने कहा: *बल्कि इनमें से सबसे बड़े बुत ने किया है, पस इनसे पूछो, अगर ये बोल सकते हैं।'* (अंबिया 21 : 63)

इस जवाब में झूठ की मिलावट इसलिए नहीं हो सकती कि दो अलग-अलग ख़्याल वाले इंसानों में अगर मुनाज़रा और ख़्यालात के तबादल की नौबत आ जाती है तो मामूली हर्फ़ की आगाही रखने वाला भी इस हक़ीक़त को जानता है कि अपने दुश्मन को उसकी ग़लती पर मुतनब्बह करने और लाजवाब कर देने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उसकी मानी हुई बातों में से किसी माने हुए अ़क़ीदे को सही फ़र्ज़ करके इस तरह उसका इस्तेमाल करे कि उसका फल और नतीजा दुश्मन के ख़िलाफ़ और अपने मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो। इब्राहीम ﷺ ने यही किया। उनकी क़ौम का यह अ़क़ीदा था कि उनके देवता सब कुछ सुनते और हमारी मुरादों को पूरा करते हैं, वे अपने पुजारियों और अपने से अक़ीदत रखने वालों से ख़ुश और अपने दुश्मनों और

Copyright OfflineDeeniApp

मुख़ालिफ़ों से ज़बरदस्त बदला लेते हैं। इब्राहीम ने जब इन देवताओं को तोड़-फोड़ डाला तो बड़े बुत को छोड़ दिया। आख़िर जब पूछ-गछ की नौबत आई तो उन्होंने मुनाज़रे का वही तरीक़ा अख़्तियार किया, जिसका ज़िक्र हो चुका है। नतीजा यह निकला कि काहिनों, पुजारियों और सारी क़ौम को यह मानना पड़ा कि हम ही ग़लती पर हैं और बुतों में बोलने की ताक़त नहीं है। इसलिए अपनी तबियत की ख़राबी और बुतों की तोड़-फोड़ से मुताल्लिक़ जुम्लों में एक बात भी ऐसी नहीं है जिसको हक़ीक़त में या सूरत-शक्ल के एतबार से झूठ कहा जा सके।

3. हज़रत सारा से मुताल्लिक़ हज़रत इब्राहीम का बयान—तीसरी बात हज़रत अबू हुरैह ﷺ की हदीस से मुताल्लिक़ है, जिसमें ज़िक्र किया गया है कि इब्राहीम का जब मिस्र से गुज़र हुआ तो उन्होंने मिस्र पहुंचने से पहले अपनी पाक बीवी हज़रत सारा ﷺ से यह फ़रमाया कि यहां का बादशाह जाबिर व ज़ालिम है, अगर किसी हसीन औरत को देखता है तो उसको ज़बरदस्ती छीन लेता है और उसके साथी मर्द को, अगर वह औरत का शौहर है, तो क़त्ल कर डालता है और कोई दूसरा अज़ीज़ है, तो उससे कोई छेड़खानी नहीं करता, तुम चूंकि मेरी दीनी बहन हो और इस धरती पर मेरे और तुम्हारे अलावा दूसरा कोई मुसलमान नहीं है, इसलिए तुम उससे कह देना कि यह मेरा भाई है। चुनांचे ऐसा ही हुआ और जब रात में उसने बुरा इरादा किया तो उसका हाथ शल होकर रह गया और वह किसी तरह हज़रत सारा को हाथ न लगा सका। यह देखकर उसने हज़रत सारा से कहा: अपने अल्लाह से दुआ कर कि मेरा हाथ दुरुस्त हो जाए, तो मैं तुझको रिहा कर दूंगा।

सारा ﷺ ने दुआ की, मगर उसने फिर बुरा इरादा किया। दोबारा उसका हाथ शल हो गया। तीसरी बार फिर यही तमाम क़िस्सा पेश आया, तब उसने कहा कि मालूम होता है यह 'जिन्न' है, इंसान नहीं है। इसको मेरे पास से ले जाओ और साथ ही हाजरा को हवाला करके कहा कि इसको भी अपने साथ ले जा, मैंने तेरे हवाले किया। जब सारा ﷺ हाजरा ﷺ को साथ लेकर हज़रत इब्राहीम ﷺ के पास आईं, तो उन्होंने हाल मालूम किया और सारा ﷺ ने मुबारकबाद दी और कहा, 'शुक्र है अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का कि उसने

Copyright OfflineDeeniApp

हमको उस फ़ासिक़ व फ़ाजिर से नजात दी और आपके लिए एक ख़ादिम (ख़िदमत करने वाला) और साथ कर दिया।'

इस मज़्मून की हदीसें अलग-अलग हदीस की किताबों में नक़ल की गई हैं। मुसन्निफ़े (लेखक) किताब मौलाना मुहंम्मद हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी ने तफ़्सील से गुफ़्तगू करने के बाद पहले यह लिखा–

'सच बोलना अंबिया ﷺ की अकाट और नबी की अस्मत के लिए एक ज़रूरी सिफ़त है, फिर जबकि ख़ुसूसियत के साथ क़ुरआन मजीद ने इब्राहीम से मुताल्लिक़ नीचे लिखी ख़ास बातों का खुलकर ज़िक्र फ़रमा दिया है, तो उनके साथ देखने में भी झूठ की निस्बत कैसी?

'और याद करो किताब में इब्राहीम का ज़िक्र बेशक था, वह सिद्दीक़ नबी' (मरयम 19 : 41)

'सिद्दीक़' मुबालग़े का सेग़ा है और उसी हस्ती के लिए वह बोला जाता है 'सिद्दीक़' जिसकी ज़ाती और नफ़्सियाती सिफ़त हो। (इसके बाद मुसन्निफ़ मौसूफ़ (लेखक महोदय) अपनी राय लिखते हैं–

पैग़म्बर की इस्मत का मसूअला बेशक दीन के उसूल और अ़क़ीदा की मुहिम्मों में से है, बल्कि दीन व मज़हब की सच्चाई की बुनियाद सिर्फ़ इसी एक मसूअले पर क़ायम है, क्योंकि यह मान लेने के बाद कि कुछ हालतों में नबी और पैग़म्बर भी झूठ की कोई न कोई शक्ल व सूरत निकाल सकता है, भले ही वह हिमायत ही में क्यों न हो, उसकी लाई हुई तालीम से यह फ़र्क़ उठ जाएगा कि उसका कौन-सा हिस्सा अपनी हक़ीक़ी मुराद से जुड़ा हुआ है और कौन-सा झूठ के रंग में रंगा हुआ और अगर यह मान लिया जाए तो फिर दीन दीन नहीं रह सकता और न मज़हब, इसलिए क़ुरआन मजीद का यह मंसूस अ़क़ीदा 'इस्मते पैग़म्बर' अपनी जगह पर न डिगने वाला और न बदलने वाला मज़बूत अ़क़ीदा है और इसलिए बेशक जो इस अ़क़ीदे की सच्चाई पर हर्फ़ लाने की वजह बने, वह ख़ुद अपनी जगह या रद्द व इंकार के क़ाबिल है या अपनी ताबीर के बेहतर होने के लिए जवाबदेह।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत हाजरा रज़ि० की हैसियत

तमाम रिवायतों से इस क़दर यक़ीनी मालूम होता है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ अपनी बीवी सारा और अपने भतीजे हज़रत लूत ﷺ के साथ मिस्र तशरीफ़ ले गए। यह वह ज़माना है जबकि मिस्र की हुकूमत ऐसे ख़ानदान के हाथ में थी जो सामी क़ौम से ताल्लुक़ रखता था और इस तरह हज़रत इब्राहीम से नसबी सिलसिले में वाबस्ता था। यहां पहुंच कर इब्राहीम और मिस्र के फ़िरऔन के दर्मियान ज़रूर कोई ऐसा वाक़िया पेश आया जिससे उसको यक़ीन हो गया कि इब्राहीम और उसका ख़ानदान ख़ुदा का मक़्बूल और बरगज़ीदा ख़ानदान है। यह देखकर उसने हज़रत इब्राहीम और उनकी बीवी हज़रत सारा का बहुत एज़ाज़ किया और उनको हर क़िस्म के माल व मताअ् से नवाज़ा और सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि अपने क़दीम ख़ानदानी रिश्ते को मज़बूत और मुस्तहकम करने के लिए अपनी बेटी हाजरा को भी उनसे ब्याह दे दिया, जो उस ज़माने में रस्म व रिवाज के एतबार से पहली और बड़ी बीवी की ख़िदमतगुज़ार क़रार पाई। चुनांचे यहूदियों की एतबार वाली रिवायत के मुताबिक़ हज़रत हाजरा 'शाहे मिस्र' फ़िरऔन की बेटी थीं, लौंडी और बांदी नहीं थीं। तौरात का एक एतबार वाला मुफ़स्सिर बी सलूमलू इस्हाक़ किताबे पैदाइश बाब 16 आयत 1 की तफ़्सीर में लिखता है–

'जब उसने (रक़यून शाहे मिस्र ने) सारा की वजह से करामतों को देखा तो कहा: मेरी बेटी का इस घर में लौंडी होकर रहना दूसरे घर में मलका होकर रहने से बेहतर है।'

(अरज़ुल क़ुरआन, भाग 2, पृ० 41)

दूसरे अरबी भाषा में हाजरा के मानी के लिहाज़ से क़ियास के क़रीब ज़्यादा यही है कि चूंकि यह अपने वतन मिस्र से जुदा होकर या हिजरत करके हज़रत इब्राहीम की शरीके ह्यात और हज़रत सारा की ख़िदमत गुज़ार बनीं, इसलिए हाजरा कहलाईं और तौरात में हाजरा को सिर्फ़ इसीलिए लौंडी कहा गया कि शाहे मिस्र ने उनको सारा और हज़रत इब्राहीम ﷺ के सुपुर्द करते हुए यह कहा था कि वह सारा की ख़िदमत गुज़ार रहेगी, न कि मतलब न था कि वह लौंडी ('जारिया' के मानी में) हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

सूरः मुम्तहिनः में हज़रत इब्राहीम की दुआ़

सूरः मुम्तहिनः में हज़रत इब्राहीम ﷺ की एक ख़ास दुआ़ इस तरह है–

तर्जुमा–*ऐ हमारे परवरदिगार! हमको उन लोगों के लिए 'फ़ित्ना' न बना, जो काफ़िर हैं।'* (अल-मुम्तहिना 60 : 5)

इस दुआ़ में तवज्जोह के क़ाबिल बात यह है कि इस दुआ़ से मुराद क्या है और वह (हज़रत इब्राहीम ﷺ) काफ़िरों के लिए फ़ितना बनने से मुताल्लिक़ क्या ख़्वाहिश रखते थे?

इस्तिलाह (पारिभाषिक शब्द के रूप) में इम्तिहान, आज़माइश और परख को फ़ित्ना कहा जाता है और इसलिए हज़रते इंसान पर जो परेशानियां और मुसीबतें आती हैं, वे उसी मुनासबत से 'फ़ित्ना' कहलाती हैं। क़ुरआन हकीम ने भी आल-औलाद और मंसब व जाह को इसी मानी के पेशेनज़र 'फ़ित्ना' कहा है और साफ़-साफ़ एलान किया है कि सच्चे और झूठे की जांच के लिए 'मोमिन' को इस कसौटी पर ज़रूर परखा जाता है।

उलेमा-ए-हक़ ने हज़रत इब्राहीम ﷺ की ऊपर लिखी दुआ़ से मुताल्लिक़ सवालों को कई तरह हल किया है। इन सबमें सबसे ज़्यादा तवज्जोह के क़ाबिल जवाब यह है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ अपने इन जामे कलिमों में बारगाहे हक़ से इसकी तलब कर रहे हैं कि अल्लाह! तू हमको काफ़िरों के हाथों आज़माइश के लिए न छोड़ देना कि वे हमको ईमान से हटा दें और कुफ़्र के क़ुबूल करने के लिए तरह-तरह की मुसीबतों और तक्लीफ़ों का शिकार बनाएं और जब्र व ज़ुल्म के ज़रिए राह से बे-राह बनाने पर आमादा कर दिलेर हो जाएं, यानी यह एक बाख़ुदा इंसान, जलीलुल क़द्र पैग़म्बर, अज़ीमुलमरतबत हादी की दरगाहे इलाही में दुआ़ है, जो अपनी इंसानी कमज़ोरियों पर भी नज़र रखे हुए है और हक़ के सामने अपना हाथ फैला रहा है कि हम पर वह वक़्त कभी न आए कि कुफ़्र की शौकत व ताक़त इस तरह कुचल डाले कि तौहीद के परस्तार इस सख़्त और कड़ी आज़माइश में मुब्तला होकर हक़ व बातिल के दर्मियान इम्तियाज़ खो बैठें।

Copyright OfflineDeeniApp

सूरः शुअ्रा म हज़रत इब्राहीम की दुआ़

सूरः शुअ्रा में हज़रत इब्राहीम की यह दुआ़ ज़िक्र की गई है–

तर्जुमा– *'(परवरदिगार!) और जिस दिन लोग दोबारा उठाए जाएं, तो उस दिन मुझको रुसवा न करना।'*

इस दुआ़ से मुताल्लिक़ एक हदीस का मज़्मून इस तरह से है कि–

'हज़रत इब्राहीम ﷺ क़ियामत के दिन अपने बाप (आज़र) को फटेहाल और रूस्याह देखेंगे, तो फ़रमाएंगे, परवरदिगार! दुनिया में तूने मेरी इस दुआ़ को क़ुबूल फ़रमा लिया था (यानी फिर यह रुसवाई कैसी कि हश्र के मैदान में अपने बाप को इस हाल में देख रहा हूं) अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा, इब्राहीम! मैंने काफ़िरों पर जन्नत को हराम कर दिया है।' (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

ऊपर लिखी हदीस और दूसरी मुताल्लिक़ रिवायतों के तफ़्सीली बयान के बाद हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० के जवाब का हासिल यह है कि क़ुरआन मजीद ने हज़रत इब्राहीम ﷺ की नुमायां ख़ुसूसियतों में से उस सिफ़त का भी एलान किया है, *'बेशक इब्राहीम अलबत्ता बड़े नर्मदिल और बुर्दबार थे।'* चुनांचे जब वह क़ियामत के दिन आज़र को परेशान देखेंगे तो उनकी मुरव्वत, रहमत जोश में आ जाएगी और उलुलअ़ज़्म पैग़म्बर की तरह हक़ीक़ते हाल से बाख़बर रहते हुए भी उनकी सिफ़ाते करीमाना का इस दर्जा फ़ितरी ग़लबा बरसरेकार आ जाएगा कि वह आज़र के लिए मग़्फ़िरत की तलब पर तैयार हो जाएंगे और अपनी इस दुआ़ की पनाह लेंगे जो दुनिया ही में क़ुबूलियत का शरफ़े दवाम हासिल कर चुकी थी और बाप की रुसवाई को अपनी रुसवाई ज़ाहिर करके दरगाहे हक़ में उस वायदे का ज़िक्र करेंगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला उसके जवाब में यह कहकर कि 'काफ़िरों पर मैंने जन्नत को हराम कर दिया है' इब्राहीम की तवज्जोह इस ओर दिलाएगा कि अपनी इस फ़ितरी रहमत व राफ़्त के बावजूद तुमको यह न भूलना चाहिए कि यह अ़मल की दुनिया नहीं, बल्कि बदले का दिन है और आज मीज़ाने अ़द्ल क़ायम है, जिसके लिए हमारा यह न तब्दील होने वाला क़ानून हमेशगी का शरफ़ हासिल कर चुका है कि काफ़िर व मुश्रिक के लिए जन्नत में कोई जगह नहीं और यह कि 'मुश्रिक की रुसवाई हरगिज़ मोमिन की रुसवाई की वजह नहीं बन

Copyright OfflineDeeniApp

सकता, चाहे इन चीज़ों के बीच दुन्यवी ताल्लक़ के मज़बूत रिश्ते ही क्यों न क़ायम रहे हों।

ग़रज़ हज़रत इब्राहीम ﷺ का यह सवाल इसलिए न था कि वह (अल अयाज़ बिल्लाह) इस सूरतेहाल को 'ख़लफ़ेवाद' समझ रहे थे, बल्कि एक फ़ितरी तक़ाज़े के पेशेनज़र था जो अगरचे नतीजों और फलों को तो नहीं बदल सकता, मगर उस शख़्सियत की भली बातों और करीमाना सिफ़तों के नुमायां करने की वजह ज़रूर बन जाता है।

हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़िंदगी का एक अहम वाक़िया

हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़िंदगी के कुछ वाक़िए उनके बेटों हज़रत इस्माईल ﷺ और हज़रत इसहाक़ ﷺ से जुड़े हुए हैं। मुनासिब समझा गया कि इन वाक़ियों को उन दोनों नबियों के हालात में ही बयान किया जाए। यही हाल उन वाक़ियों का है जिनका ताल्लुक़ उनके भतीजे हज़रत लूत ﷺ से है, अलबत्ता 'हयात बादल ममात' (मरने के बाद की ज़िंदगी) से मुताल्लिक़ वाक़िया यहां बयान किया जाता है।

हज़रत इब्राहीम ﷺ को चीज़ों की हक़ीक़त मालूम करने की तलाश और तलब का तबई ज़ौक़ था और वह हर चीज़ की हक़ीक़त तक पहुंचने की कोशिश को अपनी ज़िंदगी का ख़ास मक़्सद समझते थे, ताकि उनके ज़रिए एक ही ज़ात (अल्लाह जल्ल जलालुहू) की हस्ती, उसके एक होने और उसकी मुकम्मल क़ुदरत के बारे में इल्मुलयक़ीन (यक़ीन की हद तक इल्म) के बाद हक़्क़ुल यक़ीन (यक़ीन ही हक़) हासिल कर लें, इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷺ ने 'हयात बादल ममात' यानी मर जाने के बाद जी उठने से मुताल्लिक़ अल्लाह तआ़ला से यह सवाल किया कि वह किस तरह ऐसा करेगा? अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम से फ़रमाया, ऐ इब्राहीम! क्या तुम इस मस्अले पर यक़ीन और ईमान नहीं रखते? इब्राहीम ने फ़ौरन जवाब दिया क्यों नहीं? मैं बिना किसी संकोच के इस पर ईमान रखता हूं, लेकिन मेरा यह सवाल ईमान व यक़ीन के ख़िलाफ़ इसलिए नहीं है कि मैं इल्मुल-यक़ीन के साथ-साथ ऐनुल-यक़ीन और हक़्क़ुल यक़ीन (अगर किसी मस्अले के बारे में दलील व बुरहान के ज़रिए

Copyright OfflineDeeniApp

ऐसा इल्म हासिल हो जाए कि शक व शुबहा जाता रहे तो इस कैफ़ियत को इल्मुल यक़ीन कहा जाता है और इसका दूसरा दर्जा यह है कि इस इल्म के मुशाहदों और महसूसात से भी तौसीक़ हो जाए, तो उसको ऐनुल-यक़ीन कहा जाता है। इसके बाद तीसरा और आख़िरी दर्जा हक़्क़ुल-यक़ीन का है। यह वह कैफ़ियत है, जब इस मस्अले से मुताल्लिक़ तमाम हक़ीक़तें वाज़ेह हो जाती हैं और आगे जुस्तजू की ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रहती) का ख़्वास्तगार हूं। मेरी तमन्ना यह है कि तू मुझको आंखों से मुशाहदा करा दे कि 'मौत के बाद की ज़िंदगी' की क्या शक्ल होगी?

तब अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अच्छा, अगर तुमको उसके मुशाहद की तलब है तो कुछ परिंदे लो और उनके टुकड़े-टुकड़े करके सामने वाले पहाड़ पर डाल दो और फिर फ़ासले पर खड़े होकर उनको पुकारो। हज़रत इब्राहीम ने ऐसा ही किया। जब इब्राहीम ने उनको आवाज़ दी तो उन सबके टुकड़े अलग-अलग होकर फ़ौरन अपनी-अपनी शक्ल पर आ गए और ज़िंदा होकर हज़रत इब्राहीम के पास उड़ते हुए चले आए। यह वाक़िया, सूरः बक़रः रुकूअ् 35, आयत 260 में बयान हुआ है। इस सिलसिले में तावील करना बेकार की बात है, इन पर तवज्जोह नहीं दी जानी चाहिए।

हज़रत इब्राहीम ﷺ की औलाद और उम्र

हज़रत इब्राहीम के बड़े बेटे हज़रत इस्माईल की विलादत के वक़्त उनकी उम्र सत्तासी (87) साल थी और दूसरे बेटे हज़रत इस्हाक़ की विलादत के वक़्त उनकी उम्र पूरे सौ साल थी। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने हज़रत सारा और हज़रत हाजरा के अलावा एक और शादी की, जिनसे उनके यहां छः बेटे हुए। उनकी नस्ल अपनी मां के नाम पर बनी क़तूरा कहलाई। हज़रत इब्राहीम ﷺ की कुल उम्र एक सौ पचहत्तर साल हुई। वह हबरून (यरूशलम के क़रीब एक जगह) में मदफ़ून (दफ़न किए गए) हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम

पैदाइश

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मिस्र से वापसी पर फ़लस्तीन में रिहाइश अख़्तियार की। इस इलाक़े को कनआ़न भी कहा जाता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस वक़्त तक औलाद से महरूम थे। तौरात के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह की बारगाह में बेटे के लिए दुआ़ की और अल्लाह ने उनकी दुआ़ को क़ुबूल फ़रमा लिया और उनको तसल्ली दी। यह दुआ़ इस तरह क़ुबूल हुई कि हज़रत की छोटी बीवी मोहतरमा हज़रत हाजरा हामिला हुईं। जब हज़रत सारा को यह पता चला तो उन्हें बशर के तक़ाज़े के तौर पर रश्क पैदा हो गया। इस सूरतेहाल से मजबूर होकर हज़रत हाजरा उनके पास से चली गईं। तौरात के मुताबिक़ उनका गुज़र एक ऐसी जगह पर हुआ, जहां एक कुंवां था। उस जगह वह फ़रिश्ते से हमकलाम हुईं और कुंवें का नाम 'ज़िंदा नज़र आने वाले का कुंवां' रखा। थोड़े दिनों बाद हज़रत हाजरा के बेटा पैदा हुआ और फ़रिश्ते की बशारत के मुताबिक़ उसका नाम इस्माईल रखा गया।

बंजर घाटी और हाजरा व इस्माईल

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाइश के बाद के हालात बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह विन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल की गई रिवायत में इस तरह बयान हुए हैं—

'इब्राहीम अलैहिस्सलाम हजारा और दूध पीते बच्चे इस्माईल अलैहिस्सलाम को लेकर चले और जहां आज काबा है, उस जगह एक बड़े पेड़ के नीचे ज़मज़म की मौजूदा जगह से ऊपरी हिस्से पर उनको छोड़ गए, वह जगह वीरान और ग़ैर-आबाद थी और पानी का नाम व निशान न था, इसलिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक मशक पानी और एक थैली खजूर भी उनके पास छोड़ दी और फिर मुंह फेर कर रवाना हो गए। हाजरा उनके पीछे-पीछे यह कहते हुए चलीं, ऐ इब्राहीम! तुम

Copyright OfflineDeeniApp